गोमय वस्ते लक्ष्मी

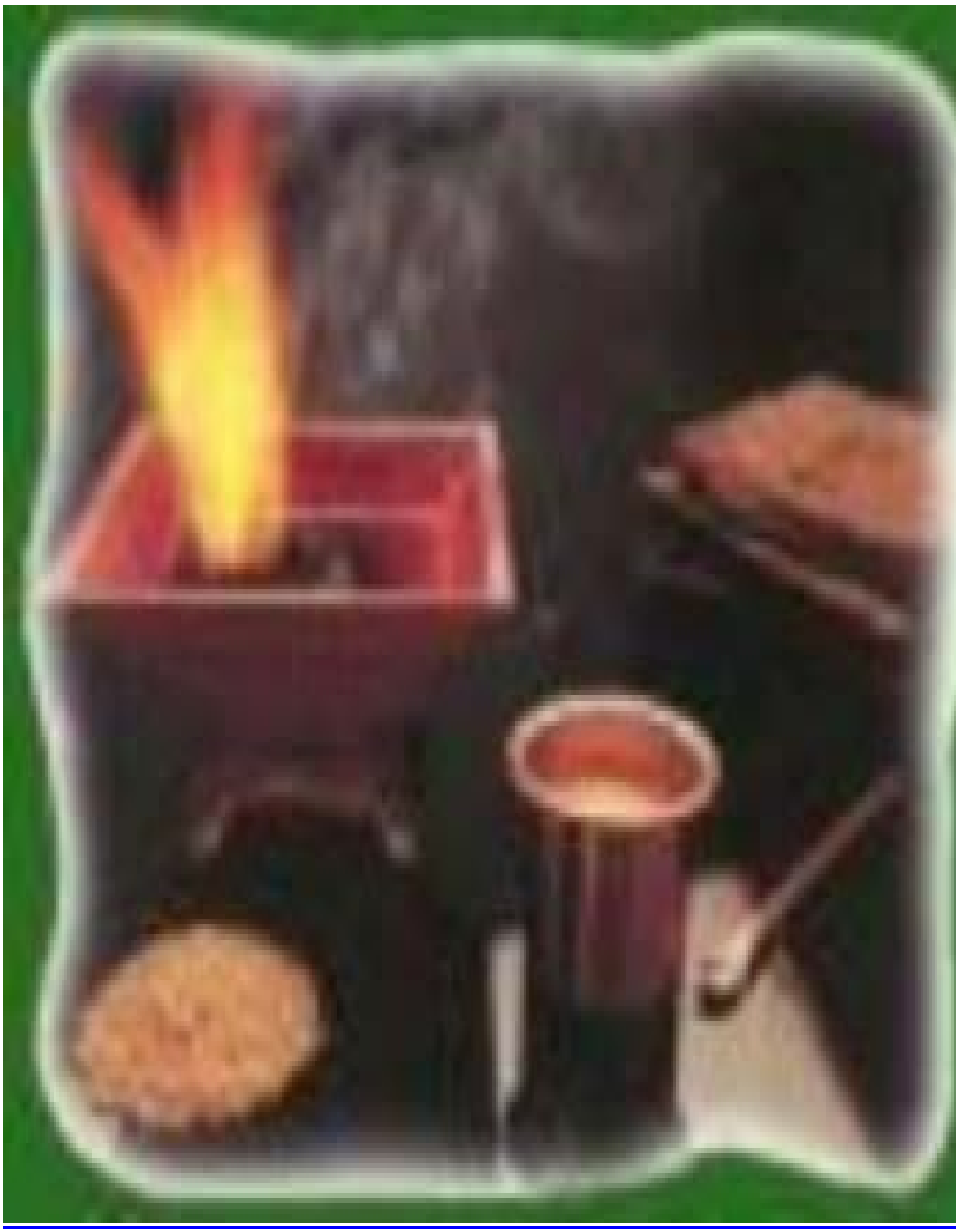

मैं गोवंश सेवक सहदेव भाटिया अखिल विश्व कामधेनु परिवार 21 सी, जयराज कोंपलेक्स, सोनी नी चाल, ओढव मार्ग, अहमदाबाद 382415 मोबाइल 9662407242, 8733008557 विद्युत अभियंता, गोमय के उपयोग पर 54 सालों से अनुसंधान करने के बाद में गोमय वस्ते लक्ष्मी पुस्तक तथा वस्तुनि-ठ प्रश्नोंत्तर के साथ में बहुत ही कम मूल्य पर पहली बार प्रकाशित कर रहा हूं.

भारत में 25 राज्यों में 15 अक्तूबर 2012 को 2 लाख बच्चे अपने अपने विद्यालयों में वस्तुनि-ठ प्रश्नों की प्रतियोगिता में शामिल हुए है.

मध्यप्रदेश सरकार के प्रयत्नों से भारत में बहुत ही लोकप्रिय उद्यमिता मासिक पत्रिका भोपाल से 20 सालों से प्रकाशित हो रही है. उद्यमिता लोगों को स्वरोजगार के लिए गोमय से धूप का प्रशिक्षण देती है.

उद्यमिता में इस पुस्तक के गोमय से धूप नवम्बर 2004 एवं अग्निहोत्र से कृनि 7 पन्नों के जून 2009 में दो लेख प्रकाशित हुए है.

पूरे भारत में लोगों ने गोमय से धूप को बहुत पसंद किया है. गोमय से धूप का निर्माण नये सिरे से गांवों में प्रारम्भ किया गया है. गोशालाओं में गोमय से धूप बनाने का प्रशिक्षण निःशुल्क प्रारम्भ किया गया है.

उद्यमिता मासिक पत्रिका गोमय से धूप 9 पन्नों का 2013 में पुनः प्रकाशन कर रही है.

इस पुस्तक के माध्यम से हमारा संकल्प है कि गोबर के हर घर में दैनिक उपयोग से ही भारत में 100 प्रतिशत गोवंश रक्षा करना संभव है.

हमारी मान्यता है कि कामधेनु के पेट में सवा मन सोना होता है. गोमय वस्ते लक्ष्मी यानी गोमय में आठ प्रकार की लक्ष्मी आठ ऐश्वर्य के साथ में बिराजमान है.

भारत में स्वामी रामदेवजी के अनुसार 2015 में न तो गरीब रहेगा और न ही बीमार रहेगा.

यह पुस्तक भारत के हर गांव में गोशालाओं में गोबर के उपयोग की वैज्ञानिक विधियों के कारण ही बहुत ही अधिक लोकप्रिय हुई है.

गोमय से तैयार दवाओं के निर्यात की अपार संभावनाओं को ध्यान में रखकर प्रयत्न करने के लिए चिंतन प्रारम्भ हो गया है. आने वाले 100 सालों में 1 लाख नये गोवंश संवर्धन केंद्र प्रारम्भ किए जायेंगे.

गोमय से नवग्रह धूप

1 कितने प्रकार के धूप बनाये जा सकते हैं?
अ. मच्छर भगाने ब. देव धूप
स. सुगंधित धूप द. घटिया धूप

बाजार में प्रचलित धूप

2 बाजार में वर्तमान में कोन से धूप प्रचलित हैं?
अ. सुगंधित धूप ब. नकली
स. हल्का द. घटिया

गोवंश संवर्धन

3 गोमय से नवग्रह धूप बनाने की आवश्यकता क्यों है?
अ. स्वावलंबन ब. रोजगार
स. गोवंश रक्षा द. गोवंश संवर्धन

लाभ

4 गोमय से नवग्रह धूप बनाने से क्या लाभ है?
अ. गोबर का सही उपयोग ब. गोवंश संवर्धन
स. गोवंश रक्षा द. रोजगार

आवश्यकता

5 गोमय से धूप क्यों बनानी चाहिये?
अ. गोबर का बहुत ही अच्छा मूल्य ब. गोवंश को बढ़ावा
स. गोवंश रक्षा द. रोजगार

उपयोगिता

6 नवग्रह धूप का दिनचर्या में क्या उपयोग है?
अ. पूजा ब. ग्रह की शांति
स. वास्तु दो-नों का निवारण द. सुख एवं आनन्द

उपयोग

7 गोमय से नवग्रह धूप हर घर में कैसे उपयोग किया जा सके?
अ. प्रचार प्रसार ब. अनुसंधान
स. पर्यावरण द. हवन

आवश्यक सामग्री

8 गोमय से नवग्रह धूप बनाने के लिए क्या चाहिए?
अ. गो माता का गोबर ब. सांढ का गोबर
स. बछड़े का गोबर द. नवजात प्रथम गोबर

महत्वपूर्ण घटक

9 गोमय से नवग्रह धूप बनाने के लिए क्या आवश्यक है?
अ. जड़ीबूटी ब. सुगंध
स. घी द. लकड़ी

जड़ीबूटियां

सूर्य

10 सूर्य के प्रभाव को संतुलित करने के लिए धूप में कौन सी जड़ीबूटी उपयोग करना चाहिए?
अ. मदार ब. चंदन
स. गूगल द. लोभान

चंद्र

27 नक्षत्र

अश्वनी

11 अश्वनी नक्षत्र किस देवता का प्रतीक है?
अ. अश्वनी कुमार ब. यम
स. इंद्र द. अग्नि

सूर्य

12 अश्वनी कुमार किसके पुत्र हैं?
अ. सूर्य ब. वि-णु
स. महादेव द. ब्रहमा

जड़ीबूटी

13 अश्वनी कुमार किसके जानकार हैं?
अ. जड़ीबूटी ब. उपचार
स. वैद्य द. मंत्र

अश्वनी

14 चंद्रमा यदि अश्वनी नक्षत्र में है तो उसके समाधान करने के लिए धूप में कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. कुचला ब. बांस
स. चंदन द. नीम

भरणी

15 भरणी नक्षत्र किस देवता का प्रतीक है?
अ. यम ब. सूर्य
स. महादेव द. ब्रहमा

16 चंद्रमा यदि भरणी नक्षत्र में है तो उसके समाधान के लिए धूप में कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. आंवला ब. फालसा
स. नीम द. चंदन

कृतिका

17 कृतिका नक्षत्र किस देवता का प्रतीक है?
अ. अग्नि ब. यम
स. सूर्य द. चंद्र

18 चंद्रमा यदि कृतिका नक्षत्र में है तो उसके समाधान के लिए धूप में कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. गूलर ब. नीम
स. चंदन द. तुलसी

रोहिणी

19 रोहिणी नक्षत्र किस देवता का प्रतीक है?
अ. ब्रहम ब. यम
स. सूर्य द. चंद्रमा

20 चंद्रमा यदि रोहिणी नक्षत्र में भ्रमण कर रहा है तो उसके समाधान करने के लिए धूप में कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. जामुन की लकड़ी ब. नीम
स. चंदन द. तुलसी

मृगशिरा

21 चंद्रमा यदि मृगशिरा नक्षत्र में भ्रमण कर रहा है तो उसके समाधन करने के लिए धूप में कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. खैर ब. नीम
स. चंदन द. तुलसी

आर्द्रा

22 चंद्रमा यदि आर्द्रा नक्षत्र में भ्रमण कर रहा है तो उसके समाधान करने के लिए धूप में कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. शीशम ब. नीम
स. चंदन द. तुलसी

पुनर्वसु

23 चंद्रमा यदि पुनर्वसु नक्षत्र में भ्रमण कर रहा हे तो उसके समाधान करने के लिए धूप में कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. बांस की जड़ ब. नीम
स. तुलसी द. चंदन

पु-य

24 चंद्रमा यदि पु-य नक्षत्र में भ्रमण कर रहा है तो उसके समाधान करने के लिए धूप में कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. पीपल की जड़ ब. चंदन
स. तुलसी द. नीम

आश्ले-ा

25 आश्ले-ा नक्षत्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. नागकेशर ब. नीम
स. तुलसी द. चंदन

मघा

26 मघा नक्षत्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. बरगद की जड़ ब. नीम
स. चंदन द. तुलसी

पूर्वा फाल्गुनी

27 पूर्वा फाल्गुनी नक्षत्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. पलास की लकड़ी ब. नीम
स. पीपल द. तुलसी

उत्तरा फाल्गुनी

28 उत्तरा फाल्गुनी नक्षत्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. पाकड़ की जड़ ब. नीम
स. चंदन द. तुलसी

हस्त

29 हस्त नक्षत्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. रीठा की जड़ ब. नीम
स. पीपल द. तुलसी

चित्रा

30 चित्रा नक्षत्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. बेल की लकड़ी ब. नीम
स. तुलसी द. चंदन

स्वाती

31 स्वाती नक्षत्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. अर्जुन की लकड़ी ब. नीम
स. तुलसी द. चंदन

विशाखा

32 विशाखा नक्षत्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. कटाई ब. नीम
स. चंदन द. तुलसी

अनुराधा

33 अनुराधा नक्षत्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. मौलश्री की छाल ब. तुलसी
स. नीम द. पीपल

ज्ये-ठा

34 ज्ये-ठा नक्षत्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. चीड़ ब. देवदारु
स. नीम द. चंदन

मूल

35 मूल नक्षत्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. साल की लकड़ी ब. नीम
स. चंदन द. तुलसी

पूर्वा-गाढा

36 पूर्वा-गाढा नक्षत्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. जलवेतस ब. वनमूली
स. अशोक द. अर्जुन

उत्तरा-गाढा नक्षत्र

37 उत्तरा-गाढा नक्षत्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. कटहल ब. तुलसी
स. नीम द. चंदन

श्रवण

38 श्रवण नक्षत्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. मदार ब. नीम
स. चंदन द. तुलसी

घनि-ठा

39 घनि-ठा नक्षत्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. खेजड़ी ब. छोकर
स. शमी द. नीम

शतभि-ाक

40 शतभि-ाक नक्षत्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. कदम्ब ब. नीम
स. चंदन द. तुलसी

पूर्वा भाद्रपद

41 पूर्वा भाद्रपद नक्षत्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. आम ब. नीम
स. तुलसी द. चंदन

उत्तरा भाद्रपद

42 उत्तरा भाद्रपद नक्षत्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. नीम ब. तुलसी
स. चंदन द. पीपल

रेवती

43 रेवती नक्षत्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी का प्रयोग करना चाहिए?
अ. महुआ ब. नीम
स. तुलसी द. पीपल

44 चंद्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी चाहिए?
अ. पलास ब. खिरनी की जड़
स. चंदन द. लोभान

मंगल

45 मंगल के लिए कौन सी जड़ीबूटी चाहिए?
अ. खैर ब. चंदन
स. गूगल द. लोभान

बुध

46 बुध के लिए कौन सी जड़ीबूटी चाहिए?
अ. अपामार्ग ब. चिटचिटा
स. चंदन द. गूगल

गुरु

47 गुरु के लिए कौन सी जड़ीबूटी चाहिए?
अ. पीपल ब. नीम
स. तुलसी द. चंदन

शुक्र

48 शुक्र के लिए कौन सी जड़ीबूटी चाहिए?
अ. गूलर ब. चंदन
स. नीम द. तुलसी

शनि

49 शनि के घातक एवं तीव्र प्रभाव को रोकने के लिए कौन सी जड़ीबूटी धूप में प्रयोग करनी चाहिए?
अ. शमी ब. चंदन
स. तुलसी द. नीम

राहू

50 राहू के तीव्र प्रभाव को रोकने के लिए धूप में कौन सी जड़ीबूटी प्रयोग करनी चाहिए?
अ. दूब ब. चंदन
स. नीम द. तुलसी

केतु

51 केतु के खतरनाक प्रभाव को रोकने के लिए धूप में कौन सी जड़ीबूटी प्रयोग करनी चाहिए?
अ. कुश ब. तुलसी
स. चंदन द. नीम

नवग्रह के लिए 9 जड़ीबूटियां

52 गोमय से नवग्रह धूप बनाने के लिए कितनी जड़ीबूटियां आवश्यक हैं?
अ. 9 ब. 10
स. 11 द. 12

गोमय की मात्रा

53 गोमय से नवग्रह धूप बनाने के लिए कितनी मात्रा में गोमय की आवश्यकता होती है?
अ. 2 किलो ब. 1 किलो
स. आवश्यकतानुसार द. थोड़ा

मसाले की मात्रा

54 गोमय से नवग्रह धूप बनाने के लिए मसाले की मात्रा कितनी आवश्यक है?
अ. 1 किलो ब. 2 किलो
स. आवश्यकतानुसार द. थोड़ा

धूप की संख्या

55 1 किलो गोमय से नवग्रह धूप कितनी मात्रा में तैयार हो जायेंगे?
अ. 400 नग ब. 200
स. 100 नग द. 50 नग

धन

56 गोमय से नवग्रह धूप सस्ती बनाने के लिए कितनी लागत लगती है?
अ. 50 रु. ब. 100 रु.
स. 200 रु. द. 300 रु.

सस्ती धूप

57 गोमय से धूप बनाने का प्रशिक्षण कौन देगा?
अ. श्री सुदर्शन जी ढंढारिया ब. श्री सुनील जी
स. श्री पुरु-ोत्तम जी द. श्री श्यामजी

प्रशिक्षण

58 गोमय से नवग्रह धूप सस्ती बनाने के लिए प्रशिक्षण की आवश्यकता क्यों है?
अ. गुणवत्ता ब. रंग
स. गंध द. प्रभाव

खर्च

59 गोमय से नवग्रह धूप अच्छी बनाने के लिए लागत कितनी लगती है?
अ. 100 रु. ब. 200 रु.
स. 300 रु. द. 400 रु.

गोमय का मूल्य

60 नवग्रह धूप बनाने के लिए गोमय खरीदने के लिए कितना मूल्य देना चाहिए?
अ. 5 रु. किलो ब. 10 रु. किलो
स. 15 रु. किलो द. 25 रु. किलो

रोजगार

61 गोमय से नवग्रह धूप बनाने के लिए कौन ज्यादा अच्छा है?
अ. महिला ब. पुरु-ा
स. बच्चा द. वृद्ध

4 करोड़

62 गोमय से नवग्रह धूप बनाने के लिए कितने लोगों को रोजगार मिल जायेगा?
अ. 4 करोड़ ब. 5 करोड़
स. 10 करोड़ द. 25 करोड़

उत्पादन

63 नवग्रह धूप एक दिन में एक युवा कितनी बना सकता है?
अ. 1000 नग ब. 2000
स. 3000 द. 5000

मजदूरी

64 गोमय से नवग्रह धूप बनाने के लिए कितनी मजदूरी प्रति नग देनी चाहिए?
अ. 10 पैसा ब. 25 पेसा
स. 50 पैसा द. 1 रु.

नगद लाभ

65 गोमय से नवग्रह धूप से स्वरोजगार करने वाले को कितना लाभ प्रतिदिन मिल सकता है?
अ. 100 रु. ब. 200 रु.
स. 300 रु. द. 500 रु.

स्वावलंबन

66 1 नग नवग्रह धूप की बिक्री कितने मूल्य पर करना संभव है?
अ. 50 पैसा ब. 1 रु.
स. 1.25 रु. द. 1.50 रु.

बड़े स्तर पर

67 गोशालाएं धूप बनाकर किस तरह से स्वावलंबन की ओर चल सकती हैं?
अ. बड़े स्तर पर ब. बहुत बड़े स्तर पर
स. उद्योग द. विचार

अगरबत्ती के बदले धूप

68 नवग्रह धूप का प्रयोग किसके बदले में किया जाता है?
अ. अगरबत्ती ब. मोमबत्ती
स. हवन द. अग्निहोत्र

धूप जलने का समय

69 एक नवग्रह धूप कितनी देर जलता है?
अ. आधा घंटा ब. 1 घंटा
स. 2 घंटा द. 5 घंटा

धूप की सुगंध

70 जवग्रह धूप की सुगंध नियंत्रित कैसे की जाये?
अ. जड़ीबूटी ब. गोमय
स. इत्र द. सुगंध

मंद मंद

71 नवग्रह धूप में सुगंध जलने के बाद में कैसी आती है?
अ. मंद मंद ब. तेज
स. मध्यम द. कम

पैकिंग

72 धूप की पैकिंग बाजार में कितने मूल्य की चलती है?
अ. 2 रु. ब. 6 रु.
स. 10 रु. द. 15 रु.

छोटी

73 नवग्रह धूप की पैकिंग कैसी करनी चाहिए?
अ. छोटी ब. मध्यम
स. बड़ी द. बहुत बड़ी

चलन

74 नवग्रह धूप का चलन दिनचर्या में कैसे बढ़ जाये?
अ. अनुसंधान ब. प्रचार
स. उपलब्धता द. मूल्य

जानकारी अभाव

75 नवग्रह धूप का चलन बहुत ही कम क्यों है?
अ. जानकारी का अभाव ब. अनुसंधान कम
स. उत्पादन कम द. गुणवत्ता

निर्यात

76 नवग्रह धूप के निर्यात करने के लिए क्या करना चाहिए?
अ. वेबसाइट ब. मेले
स. सम्मेलन द. शिविर

गुणवत्ता पर कम ध्यान देना

77 नवग्रह धूप के निर्यात कम के क्या कारण हैं?
अ. गुणवत्ता पर कम ध्यान देना ब. अनुसंधान कम
स. बार बार बुझना द. गीलापन

मांग

78 नवग्रह धूप की मांग किस देश में सबसे अधिक है?
अ. जापान ब. अमेरिका
स. कनाडा द. ब्राजील

धूप बनाने का स्थान

79 नवग्रह धूप कहां पर बनाना ज्यादा लाभदायक है?
अ. गोशाला ब. निवास
स. महानगर द. विदेश

प्रयोग

80 कितनी बार धूप का प्रयोग किया जाये?
अ. कम से कम 1 बार ब. 2
स. 3 द. 5

अस्पताल

81 नवग्रह धूप कहां पर प्रयोग करना चाहिए?
अ. अस्पताल ब. उद्योग
स. निवास द. खेत

सबसे अधिक धूप

82 वर्तमान में सबसे अधिक धूप कौन बना रहा है?
अ. संत श्री आसाराम जी ब. रामदेव जी
स. गोशाला द. गो सेवा आयोग

धूप का प्रारम्भ

83 गोमय से नवग्रह धूप बनाने के लिए किसने प्रारम्भ किया है?
अ. नेडेप ब. मोहन शंकर देशपांडे
स. अविनाश पंडरी पांडे द. महात्मा गांधी

कामधेनु गोमय तेल

लागत

84 कामधेनु गोमय तेल की लागत कितनी है?
अ. नगण्य ब. बहुत ही कम
स. कम द. सामान्य

स्वरोजगार

85 कामधेनु गोमय तेल हर गांव में तैयार करने पर स्वरोजगार से हर दिन युवा को कितना धन मिलेगा?
अ. 100 रु. ब. 250 रु.
स. 500 रु. द. 1000 रु.

बिक्री

86 कामधेनु गोमय तेल 10 मिलीलीटर की बिक्री का मूल्य कितना है?
अ. 20 रु. ब. 50 रु.
स. 100 रु. द. 150 रु.

बीमारी

87 कामधेनु गोमय तेल किस बीमारी के लिये लाभदायी है.
अ. आंख ब. वात स. लकवा द. बदन के जोड़ों में दर्द

कामधेनु मालिश तेल

88 गोमय का मूल्य गोपालक को कामधेनु मालिश तेल तैयार करने के लिए कम से कम कितना मिलना चाहिए?
अ. 1 रु. ब. 5 रु.
स. 10 रु. द. 25

उपयोगी

89 कामधेनु मालिश तेल तैयार करने के लिए कौन सबसे अधिक उपयोगी है?
अ. गोवंश सेवक ब. युवा
स. युवति द. गोपाल

रोजगार

90 कामधेनु मालिश तेल नियमित स्तर पर भारत में बनाने पर कितने लोगों को रोजगार मिलेगा?
अ. 10 करोड़ ब. 25 करोड़
स. 50 करोड़ द. 100 करोड़

निर्यात

91 कामधेनु मालिश तेल का निर्यात भारत से कैसे किया जाये?
अ. अप्रवासी भारतीय ब. मेला
स. ब्लोग द. गुणवत्ता सुधारकर

गोवंश

92 कामधेनु मालिश तेल के लिए किसका गोबर सबसे अच्छा है?
अ. सांढ ब. बैल
स. गोमाता द. गोवंश

गोवंश संवर्धन करके

93 कामधेनु मालिश तेल हर मेडिकल दुकान में कैसे मिले?
अ. गोवंश संवर्धन करके ब. गोशालाओं को सुधार कर
स. उत्पादन बढ़ाकर द. गुणवत्ता सुधार कर

गोपालन करके

94 कामधेनु मालिश तेल हर घर में किस तरह से मिल सकेगा?
अ. हर घर में गोपालन करके
ब. हर घर में मालिश तेल बनाने का प्रशिक्षण देकर
स. हर घर में मालिश तेल बनवा कर

द. हर घर में जागृति उत्पन्न कर

गठिया

95 कामधेनु मालिश तेल किस बीमारी के लिये लाभदायी है.
अ. गठिया ब. वात स. लकवा द. बदन के जोड़ों में दर्द

गोबर के ताजे रस

96 कामधेनु मालिश तेल किससे बनता है?
अ. गाय माता के गोबर के ताजे रस से बनता है.
ब. तिल्ली तेल से बनता है.
स. किसी भी तेल से बनता है.
द. दर्द निवारक दवा से बनता है.

महत्वपूर्ण घटक

97 कामधेनु मालिश तेल के महत्वपूर्ण घटक क्या हैं?
अ. काली मिर्च ब. भिलावा
स. कुचला द. विजया

बिक्री

98 कामधेनु मालिश तेल 25 मिलीलीटर कितने का बिक्री होता है?
अ. 20 ब. 21
स. 22 द. 23

कामधेनु मलहम

99 कामधेनु मलहम किससे बनता है?
अ. कामधेनु के गोबर से ब. कामधेनु के मूत्र से
स. कामधेनु के दूध से द. कामधेनु के घी से

गोशाला

100 कामधेनु मलहम कौन बना सकता है?
अ. गोशाला ब. गोरक्षा केंद्र
स. पांजरापोल द. गोपाल

प्रचार प्रसार की कमी

101 कामधेनु मलहम लोकप्रिय क्यों नहीं है?
अ. प्रचार प्रसार की कमी ब. मीडिया की उदासी
स. अनुसंधान की कमी द. धन की कमी

अनुसंधान की कमी

102 कामधेनु मलहम का उत्पादन कम क्यों है?
अ. अज्ञान ब. गरीबी
स. आलस द. अनुसंधान की कमी

निर्यात

103 कामधेनु मलहम का निर्यात क्यों नहीं किया जा रहा है?
अ. गुणवत्ता का अभाव ब. पैकिंग की कमी
स. प्रशिक्षण में कमी द. निर्यात का अज्ञान

गांव

104 कामधेनु मलहम कहां बनाया जा सकता है?
अ. गांव ब. नगर
स. महानगर द. विश्व

रोजगार

105 कामधेनु मलहम से रोजगार कितना मिल सकता है?
अ. करोड़ों ब. अरबों

स. खरबों द. बहुत ही अधिक

घटक

106 कामधेनु मलहम के महत्वपूर्ण घटक क्या हैं?
अ. गोमूत्र ब. नीला थोथा
स. पेट्रोलियम जेली द. उपले की राख

बाहर

107 कामधेनु मलहम का प्रयोग कैसे करना है?
अ. बाहर से ब. अंदर से
स. गोमूत्र से धोकर द. दूध से धोकर

चर्मरोग

108 कामधेनु मलहम किस बीमारी के लिये लाभदायी है?
अ. जख्म ब. फोड़े स. फुंसी
द. खाज

बिक्री

109 कामधेनु मलहम 15 ग्राम कितने का बिकता है?
अ. 20 ब. 21
स. 22 द. 23

कामधेनु श्रितहर वटी

गोमय का मूल्य

110 कामधेनु श्रितहर वटी के कारण गोमय का मूल्य गोपालक को न्यूनतम कितना मिलेगा?
अ. 1 रु. किलो ब. 5 रु. किलो
स. 25 रु. किलो द. 50 रु. किलो

रोजगार

111 कामधेनु श्रितहर वटी के नियमित रुप से हर गांव में बनाने पर कितने लोगों को भारत में रोजगार मिलेगा?
अ. 25 करोड़ ब. 50 करोड़
स. 75 करोड़ द. 100 करोड़

बीमारी

112 कामधेनु श्रितहर वटी किस बीमारी के लिये लाभदायी है?
अ. सफेद दाग ब. कोड़
स. शिरणी द. चर्म रोग

अंगराग उबटन

113 कामधेनु अंगराग उबटन किस बीमारी के लिये लाभदायी है?
अ. चेहरे पर दाग ब. धब्बे
स. रक्त की कमी द. चर्मरोग

सांढ

114 कामधेनु अंगराग उबटन में किसका गोमय उपयोग किया जाता है?
अ. सांढ ब. बैल
स. गोमाता द. गोवंश

ताजा गोमय

115 कामधेनु अंगराग उबटन किससे बनता है?
अ. गाय माता के ताजे गोबर से बनता है.
ब. काली बछिया के ताजे गोमूत्र से बनता है.
स. गाय माता के ताजे दूध से बनता है.
द. गाय माता के घी से बनता है.

मुलतानी मिटटी

116 कामधेनु अंगराग उबटन के महत्वपूर्ण घटक क्या हैं?
अ. मुलतानी मिट्टी ब. नीम पत्र
स. बिल्व पत्र द. चंदन पावडर

गोमय का मूल्य

117 कामधेनु उबटन बनाने के लिए गोमय का मूल्य गोपालक को कम से कम कितना देना चाहिए?
अ. 1 रु. ब. 2 रु.
स. 3 रु. द. 5 रु.

बहुत अधिक

118 कामधेनु उबटन प्रतिदिन नियमित बनाने पर कितने लोगों को रोजगार भारत में मिलेगा?
अ. 10 करोड़ ब. 25 करोड़
स. 50 करोड़ द. 100 करोड़

119 कामधेनु अंगराग उबटन का निर्यात भारत से करने के लिए क्या उपाय करना चाहिए?
अ. अप्रवासी भारतीय ब. विज्ञापन
स. वेबसाइट द. मेला

कामधेनु अंगराग स्नान टिकिया

120 कामधेनु अंगराग स्नान टिकिया किससे बनता है?
अ. गाय माता के ताजे गोबर से बनता है.
ब. गाय माता के दूध से बनता है.
स. गाय माता के गोमूत्र से बनता है.
द. गाय माता के घी से बनता है.

रोजगार

121 कामधेनु अंगराग स्नान टिकिया से कितने लोगों को नियमित रोजगार मिलेगा?
अ. 10 करोड़ ब. 12 करोड़
स. 25 करोड़ द. 50 करोड़

लागत

122 कामधेनु अंगराग स्नान टिकिया की लागत कितनी है?
अ. नगण्य ब. बहुत ही कम
स. कम द. सामान्य

बिक्री

123 कामधेनु अंगराग स्नान टिकिया का बिक्री मूल्य कितना है?
अ. 10 रु. ब. 15 रु.
स. 20 रु. द. 25 रु.

घटक

124 कामधेनु अंगराग स्नान टिकिया के महत्वपूर्ण घटक क्या हैं?
अ. मुलतानी मिट्टी ब. नीम पत्र
स. बिल्व पत्र द. नीम क्वाथ

दंतमंजन

गोबर का मूल्य

125 दंतमंजन बनाने के लिए गोमय का मूल्य कम से कम कितना गोपालक के लिए मिलना चाहिए?
अ. 1 रु. किलो ब. 2 रु
स. 5 रु. द. 10

गोवंश सेवक

126 कामधेनु दंतमंजन कौन सबसे अच्छी तरह से बना सकता है?
अ. गोवंश सेवक ब. गोपाल
स. युवा द. युवति

गोशालाएं

127 कामधेनु दंतमंजन कौन सबसे अधिक बना रहा है?
अ. आसाराम जी ब. रामदेव जी
स. गायत्री परिवार द. गोशालायें

गोशालाओं

128 कामधेनु दंतमंजन बनाने के लिए प्रशिक्षण कहां पर मिल रहा हे?
अ. गोशालाओं में ब. गांव
स. नगर द. महानगर

निर्यात

129 कामधेनु दंतमंजन के निर्यात करने के लिए क्या कदम उठाना चाहिए?
अ. वेबसाइट ब. विश्व में मेले
स. सम्मेलन द. सेमिनार

गोशाला

130 कामधेनु दंतमंजन कहां पर बनाया जाता है?
अ. गोशाला ब. गोरक्षा केंद्र
स. खेतों द. निवास

गोशाला

131 कामधेनु दंतमंजन के प्रशिक्षण की व्यवस्था कहां पर है?
अ. गोशाला ब. निवास
स. खेती द. अस्पताल

दांत

132 कामधेनु दंतमंजन क्यों सबसे अधिक लाभदायी है?
अ. दांत ब. मुंह
स. आंख द. गले

मुंह की दुर्गंध

133 कामधेनु दंतमंजन किस बीमारी में लाभदायक है?
अ. मुंह की दुर्गन्ध ब. मसूढ़ों से खून निकलना
स. गले में खराश द. पेट के रोग

15 पैसे

134 कामधेनु दंतमंजन 50 ग्राम तैयार करने की लागत कितनी है?
अ. 15 पैसे ब. 50 पैसे
स. 100 पैसे द. पता नहीं

गोवंश का गोबर

135 कामधेनु दंतमंजन में किसका गोबर ज्यादा प्रभावशाली है?
अ. सांढ़ ब. बैल
स. गोमाता द. गोवंश

अमृतधारा तेल

136 कामधेनु दंतमंजन में आवश्यक घटक क्या हैं?
अ. कपूर ब. अजवाइन सत
स. अमृतधारा तेल द. लौंग

गोमय

137 कामधेनु दंतमंजन का महत्वपूर्ण घटक क्या है?
अ. गाय माता का गोबर ब. नमक
स. मेंथोल द. लौंग

रोजगार

138 दंतमंजन नियमित बनाने पर भारत में कितने लोगों को रोजगार मिलेगा?
अ. करोड़ों ब. अरबों

स. खरबों द. अनन्त

बिक्री

139 कामधेनु दंतमंजन कितने रुपयों में बिकता है?
अ. 60 ब. 10
स. 5 द. 1

कामधेनु कवेलू

निर्यात

140 कामधेनु कवेलू को निर्यात करने के लिए क्या करना चाहिए?
अ. विश्व संपर्क ब. मेले
स. सम्मेलन द. प्रदर्शनी

गोमय का मूल्य

141 कामधेनु कवेलू को हर गांव में तैयार करने पर गोमय का मूल्य गोपालक को कितना मिलेगा?
अ. 1 रु. किलो ब. 2 रु. किलो
स. 5 रु. किलो द. 10 रु. किलो

स्वरोजगार

142 कामधेनु कवेलू बनाने के लिए युवा को प्रतिदिन कम से कम कितना धन मिलेगा?
अ. 300 रु. ब. 500 रु.
स. 750 रु. द. 1000 रु.

अवसर

143 कामधेनु कवेलू को हर गांव में नियमित रुप से तैयार करने पर कितने लोगों को रोजगार मिल सकता है?
अ. 10 करोड़ ब. 1.5 करोड़
स. 1.75 करोड़ द. 2 करोड़

कामधेनु समिधा

निर्यात

144 कामधेनु समिधा का निर्यात करने के लिए क्या आवश्यक है?
अ. मेले ब. अप्रवासी भारतीय
स. सम्मेलन द. विश्व संपर्क

गोमय का मूल्य

145 कामधेनु समिधा के हर गांव में बनने के कारण गोपालक को गोमय का न्यूनतम मूल्य कितना मिलेगा?
अ. 1 रु. किलो ब. 5 रु. किलो
स. 10 रु. किलो द. 25 रु. किलो

रोजगार

146 कामधेनु समिधा को हर गांव में नियमित रुप से तैयार करने पर कितने लोगों को रोजगार मिल सकता है?
अ. 1 करोड़ ब. 1.5 करोड़
स. 1.75 करोड़ द. 2 करोड़

कामधेनु हवन कंडे

गोमय का मूल्य

147 कामधेनु हवन कंडे के कारण गोमय का मूल्य न्यूनतम गोपालक को कितना मिलना चाहिए?
अ. 1 रु. किलो ब. 5 रु. किलो
स. 25 रु. किलो द. 50 रु. किलो

निर्यात

148 कामधेनु हवन कंउे का निर्यात करने के लिए क्या करना चाहिए?
अ. विश्व संपर्क ब. मेले
स. सम्मेलन द. अप्रवासी भारतीय

स्वरोजगार

149 कामधेनु हवन कंउे के स्वरोजगार से कितना धन प्रतिदिन युवा को मिलेगा?
अ. 500 रु. ब. 1000 रु.
स. 1500 रु. द. 2500 रु.

अवसर

150 कामधेनु हवन कंडे को हर गांव में नियमित रुप से तैयार करने पर कितने लोगों को रोजगार मिल सकता है?
अ. 1 करोड़ ब. 1.5 करोड़
स. 1.75 करोड़ द. 2 करोड़

कामधेनु डिसटेम्पर

गोमय का मूल्य

151 कामधेनु डिसटेम्पर के कारण गोमय का मूल्य गोपालक को कितना न्यूनतम मिलना चाहिए?
अ. 1 रु. किलो ब. 5 रु. किलो
स. 25 रु. किलो द. 50 रु. किलो

लागत

152 कामधेनु डिसटेम्पर की लागत कितनी है?
अ. बहुत ही कम ब. नगण्य
स. कम द. सामान्य

बिक्री

153 कामधेनु डिसटेम्पर का बिक्री मूल्य कितना है?
अ. 30 रु. किलो ब. 50 रु. किलो
स. 100 रु. किलो द. 250 रु. किलो

स्वरोजगार

154 कामधेनु डिस्टेम्पर बनाने पर युवा को नियमित स्वरोजगार प्रतिदिन कितना मिलेगा?
अ. 500 रु. ब. 1000 रु.
स. 1500 रु. द. 2500 रु.

रोजगार

155 कामधेनु डिसटेम्पर को हर गांव में नियमित रुप से तैयार करने पर कितने लोगों को भारत में रोजगार मिल सकता है?
अ. 10 करोड़ ब. 15 करोड़
स. 17.5 करोड़ द. 20 करोड़

कामधेनु टाइल्स

गोमय का मूल्य

156 कामधेनु टाइल्स के हर गांव में निर्माण करने पर गोमय का मूल्य न्यूनतम गोपालक को कितना मिलेगा?
अ. 1 रु. किलो ब. 5 रु. किलो
स. 10 रु. किलो द. 25 रु. किलो

स्वरोजगार

157 कामधेनु टाइल्स के निर्माण करने पर हर दिन युवा को स्वरोजगार से कितना धन मिलेगा?
अ. 400 रु. ब. 600 रु.
स. 1000 रु. द. 2500 रु.

रोजगार

158 कामधेनु टाइल्स को हर गांव में नियमित रुप से तैयार करने पर कितने लोगों को रोजगार मिल सकता है?

अ. 1 करोड़ ब. 1.5 करोड़

स. 1.75 करोड़ द. 2 करोड़

कामधेनु प्लास्टर

गोमय का मूल्य

159 कामधेनु प्लास्टर के कारण गोमय का न्यूनतम मूल्य गोपालक को कितना मिलना चाहिए?

अ. 1 रु. किलो ब. 5 रु. किलो

स. 25 रु. किलो द. 50 रु. किलो

रोजगार

160 कामधेनु प्लास्टर को हर गांव में नियमित रुप से तैयार करने पर कितने लोगों को रोजगार मिल सकता है?

अ. 1 करोड़ ब. 1.5 करोड़

स. 1.75 करोड़ द. 2 करोड़

कामधेनु फिनाइल

गोमूत्र का मूल्य

161 कामधेनु फिनाइल तैयार करने पर गोपालक को गोमूत्र का न्यूनतम मूल्य कितना मिलना चाहिए?

अ. 1 रु. लीटर ब. 5 रु. लीटर

स. 25 रु. लीटर द. 50 रु. लीटर

रोजगार

162 कामधेनु फिनाइल को हर गांव में नियमित रुप से तैयार करने पर कितने लोगों को रोजगार मिल सकता है?

अ. 1 करोड़ ब. 1.5 करोड़

स. 1.75 करोड़ द. 2 करोड़

मच्छर भगाने की कामधेनु कोइल

लाभ

163 मच्छर भगाने की कामधेनु कोइल के लाभ क्या हैं?

अ. हानिरहित है ब. गंधरहित

स. रंग रहित द. धुआंरहित

रोजगार

164 मच्छर भगाने की कामधेनु कोइल गांव गांव में तैयार करने पर कितने लोगों को रोजगार मिलेगा?

अ. 25 करोड़ ब. 50 करोड़

स. 75 करोड़ द. 100 करोड़

स्वरोजगार

165 मच्छर भगाने की कामधेनु कोइल नियमित रुप से बनाने पर प्रतिदिन कितना स्वरोजगार एक व्यक्ति को मिलेगा?

अ. 500 रु. ब. 1000 रु.

स. 2500 रु. द. 5000 रु.

लागत

166 मच्छर भगाने की कामधेनु कोइल की लागत कितनी है?

अ. 100 रु. किलो ब. 250 रु. किलो

स. 500 रु. किलो द. 1000 रु. किलो

गोमय का मूल्य

167 गोमय का मूल्य न्यूनतम गोपालक को मच्छर भगाने की कामधेनु कोइल बहुत बड़े स्तर पर बनाने पर कितना मिलना चाहिए?
अ. 5 रु. किलो ब. 10 रु. किलो
स. 25 रु. द. 50 रु.

कामधेनु गोपाल नस्य

लागत

168 कामधेनु गोपाल नस्य की लागत कितनी आयेगी?
अ. कम ब. बहुत ही कम
स. नगण्य द. सामान्य

रोजगार

169 कामधेनु गोपाल नस्य गांव गांव में बहुत बड़े स्तर पर तैयार करने पर कितने लोगों को रोजगार मिलेगा?
अ. 25 करोड़ ब. 15 करोड़
स. 10 करोड़ द. 1 करोड़

घटक

170 कामधेनु गोपाल नस्य के महत्वपूर्ण घटक क्या हैं?
अ. आक का दूध ब. काली मिर्च
स. अपामार्ग द. शिग्रु के बीज

गोमय का मूल्य

171 कामधेनु गोपाल नस्य बहुत बड़े स्तर पर बनाने पर गोमाता के बछड़े या बछड़ी के पहले गोबर का मूल्य न्यूनतम गोपालक को कितना मिलेगा?
अ. 5 रु. ब. 10 रु.
स. 25 रु. द. 50 रु.

कामधेनु केशवर्धक पावडर

172 कामधेनु केशवर्धक पावडर का निर्यात भारत से बाहर करने के लिए क्या करना चाहिए?
अ. विश्व संपर्क ब. विज्ञापन
स. ब्लोग द. मेले

रोजगार

173 कामधेनु केशवर्धक पावडर हर गांव में तैयार करने पर कितने लोगों को नियमित रोजगार मिलेगा?
अ. 25 करोड़ ब. 50 करोड़
स. 75 करोड़ द. 100 करोड़

गोमय का मूल्य

174 कामधेनु केशवर्धक पावडर के हर गांव में निर्माण करने पर गोमय का मूल्य गोपालक को क्या मिलेगा?
अ. 1 रु. प्रति किलो ब. 2 रु. प्रति किलो
स. 5 रु. प्रति किलो द. 10 रु. प्रति किलो

कामधेनु सफेद दाग मिटाने की क्रीम

रोजगार

175 कामधेनु सफेद दाग मिटाने की क्रीम गांव गांव में तैयार करने पर कितने लोगों को रोजगार मिलेगा?
अ. 10 करोड़ ब. 11 करोड़
स. 12 करोड़ द. 13 करोड़

बिक्री

176 कामधेनु सफेद दाग मिटाने की 100 ग्राम पैकिंग का बिक्री का मूल्य कितना है?
अ. 30 रु. ब. 100 रु.
स. 250 रु. द. 500 रु.

कामधेनु डर्मीन क्रीम

रोजगार

177 कामधेनु डर्मीन क्रीम गांव गांव में तैयार करने पर कितने लोगों को रोजगार मिलेगा?
अ. 10 करोड़ ब. 15 करोड़
स. 20 करोड़ द. 25 करोड़

बिक्री

178 कामधेनु डर्मीन क्रीम की 100 ग्राम पैकिंग का बिक्री का मूल्य कितना है?
अ. 30 रु. ब. 100 रु.
स. 250 रु. द. 500 रु.

कामधेनु डेन्ड्रफ फ्री क्रीम

रोजगार

179 कामधेनु डेन्ड्रफ फ्री क्रीम हर गांव में बनाने पर कितने लोगों को भारत में नियमित रोजगार मिलेगा?
अ. 10 करोड़ ब. 15 करोड़
स. 20 करोड़ द. 25 करोड़

बिक्री

180 कामधेनु डेन्ड्रफ फ्री क्रीम की 100 ग्राम पैकिंग का बिक्री का मूल्य कितना है?
अ. 30 रु. ब. 100 रु.
स. 250 रु. द. 500 रु.

कामधेनु सौंदर्यवर्धक क्रीम

रोजगार

181 कामधेनु सौंदर्यवर्धक क्रीम 10 ग्राम, 25 ग्राम, 50 ग्राम, 100 ग्राम हर गांव में बनाने पर कितने लोगों को रोजगार मिलेगा?
अ. 10 करोड़ ब. 15 करोड़
स. 20 करोड़ द. 25 करोड़

बिक्री

182 कामधेनु सौंदर्यवध्रक क्रीम की 100 ग्राम पैकिंग का बिक्री का मूल्य कितना है?
अ. 30 रु. ब. 100 रु.
स. 250 रु. द. 500 रु.

कामधेनु सौंदर्यवर्धक लेप

बिक्री

183 कामधेनु सौंदर्यवध्रक लेप की 250 ग्राम पैकिंग का बिक्री का मूल्य कितना है?
अ. 50 रु. ब. 100 रु.
स. 250 रु. द. 500 रु.

लागत

184 कामधेनु सौंदर्यवर्धक लेप की लागत कितनी है?
अ. 100 रु. किलो ब. 150 रु. किलो
स. 250 रु. किलो द. 500 रु. किलो

गोमय का मूल्य

185 कामधेनु सौंदर्यवर्धक लेप हर गांव में तैयार करने पर गोमय का न्यूनतम मूल्य गोपालक को कितना मिलेगा?
अ. 1 रु. किलो ब. 2 रु. किलो
स. 5 रु. किलो द. 10 रु. किलो

रोजगार

186 कामधेनु सौंदर्यवर्धक लेप हर गांव में तैयार करने पर कितने लोगों को नियमित रोजगार मिलेगा?
अ. 25 करोड़ ब. 50 करोड़

स. 75 करोड़ द. 100 करोड़

कामधेनु बर्तन मांजने का पावडर

लागत

187 कामधेनु बर्तन मांजने का पावडर की लागत कितनी है?
अ. नगण्य ब. बहुत ही कम
स. कम द. सामान्य

188 कामधेनु बर्तन मांजने का पावडर का बिक्री मूल्य कितना है?
अ. 20 रु. किलो ब. 25 रु. किलो
स. 30 रु. किलो द. 50 रु. किलो

189
190 कामधेनु बर्तन मांजने का पावडर हर गांव में तैयार करने पर गोमय का मूल्य गोपालक को कितना मिलना चाहिए?
अ. 1 रु. किलो ब. 5 रु. किलो
स. 25 रु. किलो द. 50 रु. किलो

रोजगार

191 कामधेनु बर्तन मांजने का पावडर हर गांव में तैयार करने पर कितने लोगों को रोजगार मिलेगा?
अ. 25 करोड़ ब. 50 करोड़
स. 75 करोड़ द. 100 करोड़

कामधेनु केशनिखार

निर्यात

192 कामधेनु केश निखार का निर्यात कैसे किया जाये?
अ. गुणवत्ता सुधारकर ब. अच्छी पैकिंग कर
स. मूल्य कम कर द. व्यक्ति संपर्क कर

लोकप्रियता

193 कामधेनु केश निखार भारत में लोकप्रिय कैसे बनाया जाये?
अ. विज्ञापन तैयार कर ब. गुणवत्ता में सुधार कर
स. वितरक तैयार कर द. मेले में स्टाल लगाकर

रोजगार

194 कामधेनु केश निखार नियमित स्तर पर तैयार करने पर कितने लोगों को भारत में रोजगार मिलेगा?
अ. 10 करोड़ ब. 20 करोड़
स. 60 करोड़ द. 100 करोड़

गोशालाओं

195 कामधेनु केश निखार कहां पर बड़े स्तर पर बनाया जाये?
अ. गोशालाओं में ब. नगर
स. महानगर द. गांव

196 कामधेनु केश निखार की मांग में बढ़ोत्तरी कैसे की जाये?
अ. निर्यात कर ब. विदेशों में उत्पादन कर
स. उद्योग तैयार कर द. वितरक तैयार कर

197 कामधेनु केशनिखार किस बीमारी के लिये लाभदायी है?
अ. बाल झड़ना ब. असमय बाल सफेद होना
स. बालों में रुसी होना द. सिर में खुजली होना

कामधेनु नहाने का साबुन

निर्यात

198 कामधेनु नहाने का साबुन का निर्यात कैसे करें?
अ. गुणवत्ता सुधारकर ब. पैकिंग
स. मूल्य कम कर द. उपयोग

रोजगार

199 कामधेनु नहाने का साबुन तैयार करने पर कितने लोगों को भारत में नियमित रोजगार मिलेगा?
अ. 35 करोड़ ब. 50 करोड़
स. 75 करोड़ द. 100 करोड़

गोमय का मूल्य

200 नहाने का साबुन गोमय से तैयार करने के लिए गोमय का मूल्य प्रतिकिलो कम से कम कितना होना चाहिए?
अ. 1 रुपये ब. 2 रुपये
स. 5 रुपये द. 10 रुपये

गोवंश

201 नहाने का साबुन गोमय से तैयार करने के लिए गोमय किसका उपयोग करना है?
अ. सांढ ब. बैल
स. गोमाता द. बछिया

202 नहाने का साबुन तैयार करने के लिए गोमय कैसा रहना चाहिए?
अ. ताजा ब. पुराना
स. कैसा भी द. जंगली

युवा

203 नहाने का साबुन तैयार करने के लिए कौन सबसे अधिक उपयोगी है?
अ. युवा ब. महिला
स. बाल द. युवति

आय

204 नहाने का साबुन बनाने के लिए प्रतिदिन कम से कम कितना रुपया मिल सकता है?
अ. 250 ब. 500
स. 1000 द. 2500

हजारों

205 कितने प्रकार के साबुन नहाने के गोमाता के गोमय से बन सकते हैं?
अ. हजारां ब. बहुत
स. जितने चाहें द. अनन्त

206 कामधेनु साबुन प्रतिदिन कितने एक व्यक्ति तैयार कर सकता है?
अ. 350 ब. 500
स. 1000 द. 2000

207 कामधेनु साबुन कौन तैयार कर सकता है?
अ. गोवंश सेवक ब. महिला
स. युवा द. बालक

सहयोग

208 कामधेनु साबुन बनाने के लिए कौन सहयोग देगा?
अ. गो सेवा आयोग ब. सरकार
स. जनता द. गायत्री परिवार

विशे-ता

209 कामधेनु साबुन की क्या विशे-ता है?
अ. गर्मी को सोखता है ब. त्वचा मुलायम
स. त्वचा चमकदार द. ठंडक

चर्बी रहित

210 कामधेनु साबुन में बाजार में मिलने वाले साबुन से क्या अलग है?

अ. चर्बी नहीं है ब. वसा रहित
स. हानिरहित द. चर्मरोग नहीं होगा

रोगी

211 कामधेनु साबुन किसके लिए लाभकारी है?
अ. रोगी ब. योगी
स. भोगी द. बालक

212 कामधेनु साबुन का उपयोग कैसे करना है?
अ. नहाने के समय ब. नहाने के बाद में
स. नहाने के पहले द. कभी भी

लागत

213 कामधेनु साबुन की लागत कितने रुपये है?
अ. 1 ब. 2
स. 3 द. 5

214 कामधेनु साबुन कहां पर बनाना चाहिए?
अ. गोशाला ब. पांजरापोल
स. अनुसंधान केंद्र द. गांव

215 कामधेनु साबुन बनाने का प्रशिक्षण कहां पर मिल रहा है?
अ. गोशालाओं ब. महानगर
स. गांव द. अनुसंधान केंद्र

216 कामधेनु साबुन की मांग क्यों नहीं है?
अ. प्रचार प्रसार का अभाव ब. पैकिंग में कमी
स. उत्पादन में कमी द. मिलना कठिन

217 कामधेनु नहाने का साबुन का मूल्य कितना है?
अ. 12 रु. ब. 10
स. 5 द. 1

218 वर्तमान में कामधेनु साबुन का उत्पादन सबसे अधिक कौन बना रहा है?
अ. आसाराम जी ब. रामदेव जी
स. गोशालाएं द. गोपाल

मधुमेह

219 कामधेनु नहाने का साबुन किस बीमारी में लाभदायक है?
अ. मधुमेह ब. चर्मरोग
स. सफेद दाग द. दाद

220 कामधेनु पंचगव्य नहाने का साबुन किससे बनता है?
अ. गाय माता के ताजे गोबर से बनता है.
ब. मुलतानी मिटटी से बनता है.
स. गाय माता के ताजे दूध से बनता है.
द. गाय माता के गोमूत्र से बनता है.

221 एक्जीमा साबुन बनाने के लिए कितनी लागत लगेगी?
अ. नगण्य ब. बहुत ही कम
स. कम द. सामान्य

222 एक्जीमा साबुन भारत के हर गांव में बनाने पर कितने लोगों को रोजगार मिलेगा?
अ. 1 करोड़ ब. 1.5 करोड़
स. 2 करोड़ द. 5 करोड़

223 एक्जीमा साबुन का बिक्री मूल्य कितना है?
अ. 10 रु. ब. 25 रु.
स. 50 रु. द. 100 रु.

224 एक्जीमा साबुन के निर्यात करने के लिए क्या करना चाहिए?
अ. विश्व संपर्क ब. अप्रवासी भारतीय
स. मेले द. सम्मेलन

225 कामधेनु पंचगव्य नहाने का साबुन के महत्वपूर्ण घटक क्या हैं?
अ. वनस्पति तेल ब. दूध
स. दही द. घी

गोमय वस्ते लक्ष्मी

226 भारतीय गोवंश के गोबर की महत्वपूर्ण पहचान क्या है?
अ. कीड़े नहीं पड़ते हैं. ब. कैरोटिन की परत चढ़ी रहती है.
स. धारी पड़ती हैं. द. खराब नहीं होता है.

227 गोबर का उपयोग अधिकतम करने के लिये उपाय क्या है?
अ. नवग्रह धूप ब. नहाने का साबून
स. दंतमंजन द. अंगराग पावडर

228 भारतीय गाय के गोबर में कितने रसायन होते हैं?
अ. 16 रसायन ब. 16 से कम
स. 16 से अधिक द. करोड़ो रसायन.

229 गोबर में कौन सा रसायन कीटाणुओं को रोकता है?
अ. फिनोल ब. इंडोल
स. मेंथाल द. पोटास

230 गोबर में कौन सा रसायन बिजली को पूरी तरह से सोखता है?
अ. स्ट्रोंशियम ब. मेंथोल
स. इंडोल द. एमडीजीआई

231 गोबर में कौन सा रसायन पर्यावरण को पवित्र बनाये रखता है?
अ. फार्मेलीन ब. इंडोल
स. मेंथाल द. फिनोल

232 गोबर किटाणुनाशक है क्योंकि गोबर में मौजूद है
अ. यूरिया ब. यूरिक अम्ल
स. अमिनो अम्ल द. विटामिन बी

233 गोबर विषनाशक है क्योंकि गोबर में है?
अ. यूरिक अम्ल ब. फीनोल

स. मेंथोल द. नौसादर

234 गोबर से स्नान करने पर क्या लाभ है?
अ. गर्मी शांत होती है. ब. त्वचा निखरती है.
स. रोम छिद्र खुलते हैं. द. शरीर निरोगी रहता है.

235 गोबर का उपयोग खेती में क्यों किया जाता है?
अ. जमीन उपजाउ होती है.
ब. अनाज अधिक उत्पन्न होता है.
स. पानी की आवश्यकता कम होती है.
द. कीटनाशक की आवश्यकता नहीं पड़ती है.

236 गोबर से घर में लीपने की परम्परा भारत में प्राचीन समय से क्यों है?
अ. भूमि पवित्र होती है. ब. लक्ष्मी आती है.
स. सफाई रहती है. द. पैसों की बचत होती है.

237 बच्चा जब जन्म लेता है तब गोबर पर लीपकर उस पर भारत में सुलाने की प्राचीन परम्परा क्यों रही है?
अ. गोबर कीटाणुनाशक है. ब. गोबर में रोगप्रतिरोधक क्षमता है.
स. गोबर बच्चे को पसंद है. द. गोबर आसानी से उपलब्ध है.

238 गोबर से लीपकर मनुष्य को मरने के बाद उस स्थान पर लिटाने की प्राचीन परम्परा क्यों है?
अ. गोबर कीटाणुनाशक है. ब. गोबर में रोगप्रतिरोधक क्षमता है.
स. गोबर बच्चे को पसंद है. द. गोबर आसानी से उपलब्ध है.

239 गोबर से तैयार गोबर गैस के उपयोग क्या हैं?
अ. भोजन बनाने के लिये. ब. वाहन चलाने के लिये
स. उर्जा उत्पन्न करने द. प्रकाश के लिये.

240 गोबर के अंदर कौन सा गुण है?
अ. परमाणु विकिरण को पूरी तरह से सोखने का.
ब. बिजली को सोखने का
स. गर्मी सोखने
द. गंदगी को अपने जैसा बनाने का.

241 गोबर का नियमित सर्वाधिक उपयोग गांव में किसलिये होता है?
अ. कंडे बनाने ब. खाद तैयार करने.
स. नहाने द. राख बनाने.

242 गोबर से रोजगार कैसे संभव है?
अ. नवग्रह धूप तैयार करके.ब. साबून तैयार करके.
स. दंतमंजन तैयार करके. द. अंगराग पावडर तैयार करके.

243 गोबर से गोरक्षा करना संभव है क्योंकि?
अ. गोबर 12 माह प्राप्त होता है. ब. गोबर बहुत ही मूल्यवान है.
स. गोबर में सोना है. द. गोबर आसानी से मिल जाता है.

244 गोबर का उत्पादन प्रतिदिन भारत में कितना है?
अ. 100 करोड़ किलो ब. 100 करोड़ से कम
स. 100 करोड़ से अधिक द. पता नहीं.

कामधेनु गोपाल नस्य

काउ थेरेपी

कामधेनु गोपाल नस्य यानी काउ थेरेपी वर्तमान में मिर्गी को दूर करने के लिए गो वत्स पुरी-ा यानी गाय माता के बच्चे के जन्म के समय गाय माता के बच्चे के प्रथम गोबर से तैयार किया जाता है.

गो वत्स पुरी-ा

कामधेनु यानी मानव की हर कामना की पूर्ति करने वाली धेनु है. कामधेनु के बच्चे का पहला गोबर गो वत्स पुरी-ा कहलाता है बहुत सारी विशे-ताओं के साथ में है. कोलाइन वि-ा को पूरी तरह से सोखने की शक्ति है. सूर्य की समस्त उर्जा मौजूद है. गो वत्स पुरी-ा को सूंघने पर गंध बहुत ही तेज देता है तथा देखने में सामान्य गोबर से रंग भी अलग ही होता है.

गो वत्स पुरी-ा यानी गाय माता के बच्चे का प्रथम गोबर के बारे में वैज्ञानिक ढंग से अनुसंधान करने और प्रथम गोबर में मौजूद रसायनों को विस्तार से समाज में रखने की आवश्यकता है.

सावधानी

गाय माता के बच्चे का प्रथम गोबर सावधानी के साथ एकत्र करना बहुत अधिक आवश्यक है. गाय माता जब बच्चे को पूरी तरह से चाटती है तब प्रथम गोबर भी चाट जाती है. रात्रि के समय यदि गाय माता बच्चे को जन्म देती है तो गोपालक की गहरी नींद के कारण प्रथम गोबर उपयोग में नहीं लाया जा सकता है. गाय माता के बछड़े या बछड़ी के प्रथम गोबर का उपयोग किया जा सकता है.

महत्वपूर्ण घटक

कामधेनु गोपाल नस्य बनाने के लिये आवश्यक सामग्री में 100 ग्राम गाय माता के बच्चे का प्रथम गोबर, 100 ग्राम आक का दूध, 25 ग्राम काली मिर्च, 25 ग्राम अपामार्ग, 25 ग्राम बबूल या शिग्रू के बीज हैं.

गुणधर्म

आक का दूध

आक का दूध बहुत अधिक जहरीला होता है. जहर का उपयोग रोग को दूर करने के लिए किया जाता है. गांव में आक का पौधा आसानी से उपलब्ध है. आक का दूध निःशुल्क उपलब्ध है. आक का दूध औ-धि के रुप में आयुर्वेद में प्रयुक्त किया जाता है.

अपामार्ग

अपामार्ग का प्रयोग आयुर्वेद में औ-धि के लिए किया जाता है.

बबूल या शिग्रु के बीज

बबूल या शिग्रु के बीज का प्रयोग आयुर्वेद में औ-धि के लिए किया जाता है.

काली मिर्च

काली मिर्च आयुर्वेद में औ-धि के रुप में प्रयुक्त की जा रही है. काली मिर्च भी सूंघने पर बहुत तेज गंध वाली तथा खाने पर स्वाद में भी तेज होती है.

उपरोक्त पांचों वस्तुएं एक साथ में मिलाकर प्रयोग करने पर कल्याणकारी परिणाम मिलते हैं. गांव में सभी वस्तुएं बहुत ही आसानी से बहुत ही कम मूल्य पर मिल जाती हैं.

1 करोड़

मिर्गी के वर्तमान में 1 करोड़ से अधिक मरीज भारत में हैं. भारत में बहुत ही तेजी से अपस्मार यानी मिर्गी रोग बढ़ रहा है.

ताजे सर्वेक्षण के अनुसार विश्व में मिर्गी के

मरीजों की संख्या बहुत ही तेजी से बढ़ रही है.

अनुसंधान

विश्व में मिर्गी पर बहुत अधिक धन खर्च कर लगातार गहन अनुसंधान किये गये है. अनुसंधान के अनुसार मिर्गी यानी अपस्मार के बारे में बहुत सारी बातें स्प-ट हैं.

कभी भी

अनुसंधान से यह स्प-ट है कि मिर्गी का रोग जन्म से लेकर बुढ़ापे तक मानव को कभी भी आ सकता है.

परिणाम

अनुसंधान के अनुसार यह बात तो स्प-ट है कि मिर्गी के रोग में मानव की जान भी जा सकती है.

महिलाओं में अधिक

विश्व में मिर्गी पर लगातार अनुसंधान से यह बात तो स्प-ट है कि महिलाओं में मिर्गी का रोग अधिक होता है.

उपचार

मिर्गी के उपचार के लिये वर्तमान में विश्व में सबसे लोकप्रिय आधुनिक चिकित्सा यानी एलोपेथी है. एलोपेथी बहुत ही अधिक मंहगी, जटिल, साइड इफेक्ट वाली चिकित्सा पद्धति है.

गारंटी नहीं

एलोपेथी चिकित्सा पद्धति में मिर्गी का उपचार गारंटी के साथ करने का कोई दावा नहीं है.

विज्ञान की कमजोरी

मिर्गी को लगातार अनुसंधान के बाद भी विज्ञान के द्वारा अभी तक पूरी तरह से समझा नहीं जा सका है.

सफल उपचार नहीं

मिर्गी का सफल उपचार भी वर्तमान में आधुनिक विज्ञान के पास में नहीं है.

प्रमुख कारण

कोलाइन

आधुनिक विज्ञान ने अभी तक अपस्मार का कोई निश्चित कारण नहीं बताया है. आधुनिक वैज्ञानिकों के अनुसार अपस्मार के रोगी के देह में समवर्त की क्रिया से रोगी के रक्त में एक विशिष्ट प्रकार का अन्तस्थ विष उत्पन्न हो जाता है जिसे कोलाइन कहते हैं.

वि-ा का प्रभाव

इसी विष के कारण ही मस्तिष्क की उच्च क्रियाओं सोचने, विचार करने, याद करने आदि के लोप होने के साथ साथ हाथ पैर का विक्षेप, फेन झाग का उदगम आदि का नियंत्रण भी समाप्त हो जाता है.

मुख्य कारण

दिमाग का कैंसर, टीनिया सोलियम के अंडों की उपस्थिति, दिमाग का फिरंग रोग, दिमाग की रक्तवाहिनियों के विकार, आनुवांशिकता, भय, मानसिक उत्तेजना, चिंता, अत्यधिक मानसिक श्रम करना, अनिद्रा, अपनी इच्छा के अनुसार नौकरी या व्यवसाय न मिलना, दिमाग के विकार, रिकेट, अंतःस्त्रावी ग्रंथियों के विकार, विविध प्रकार की विषमयता आदि है.

वैकल्पिक चिकित्सा

मिर्गी रोग के उपचार के लिए वर्तमान में विश्व में मनोविज्ञान, परामनोविज्ञान, होम्योपेथी, एक्यूप्रेशर, एक्यूपंचर, प्राण हिलिंग थैरेपी, आयुर्वेद चिकित्सा, प्राकृतिक चिकित्सा, विपश्यना, पातांजलि योग चिकित्सा, पंचगव्य चिकित्सा एवं सूर्य चिकित्सा जैसी अन्य बहुत सारी वैकल्पिक चिकित्सायें चलन में हैं.

मजबूरी

गरीब आदमी मिर्गी का उपचार महंगी एवं जटिल प्रचलित चिकित्सा पद्धतियों से नहीं करवा सकता है.

काउ थेरेपी

गरीब व्यक्ति अपने गांव में ही मिर्गी का उपचार बहुत ही कम समय में सस्ते में तथा बहुत ही सरलता के साथ में बिना साइड इफेक्ट के सिर्फ काउ थैरेपी से ही कर सकता है.

लक्षण

लगातार अनुसंधानों के फलस्वरुप अनुभव के आधार पर यह निश्चित हे कि अपस्मार में एक ओर के अंगों अथवा पेशी समूह में पेशी संकोच पाया जाता है जिससे मुख, गला, संपूर्ण देह की मांस पेशियों में संकोच होकर रोगी की आंखें, मुख, गर्दन टेडी हो जाती हैं. संज्ञानाश, बेहोशी, ह्रदय का कांपना, ह्रदय शून्यता, विस्मय, मूर्च्छा, मनोमोह, इंद्रियों का मोह, निद्रानाश, शरीर ठंडा, सभी वस्तुओं का सफेद दिखना, कान में विविध प्रकार की आवाजों का आभास, सांस में दुर्बलता, विविध प्रकार की दुर्गंध का आभास, जीभ पर तरह तरह की रूचि मालूम होना, जी मितलाना, आमाशयिक प्रदेश में बैचेनी, चक्कर आना, चेहरा काला हो जाना, बुखार आना आदि मुख्य लक्षण हैं.

उपचार

मिर्गी आने पर सूंघनी में तैयार दवा सूंघाने पर मिरगी पूरी तरह से ठीक हो जाती है. एक बार सुंघाने पर यदि मरीज पूरी तरह से ठीक नहीं होता है तो दूसरी बार सूंघाया जाता है. दूसरी बार में भी यदि मरीज पूरी तरह से ठीक नहीं होता है तो मरीज को तीसरी बार सूंघाने पर गारंटी के साथ लाभ मिलता है.

विश्व में लोकप्रिय

काउ थैरेपी मिर्गी के रोग में वर्तमान में विश्व में अपने कारगर परिणामों के कारण ही बहुत अधिक लोकप्रिय हुई है.

काउ थैरेपी वैद्य

गांवों में मिर्गी के मरीजों का उपचार करने के लिए बहुत सारे तरीके उपयोग किये जाते हैं लेकिन मिर्गी ठीक नहीं होती है. मिर्गी के मरीजों को कामधेनु गोपाल नस्य से अच्छा करने के लिए अच्छे काउ थैरेपी वैद्यों की आवश्यकता है.

गाय माता का बच्चा जब 9 माह तक पेट में रहता है तो उसके अंदर असाधारण उर्जा रहती है जो उसके प्रथम गोबर में मिलती है.

विश्व में लम्बे समय से किये गये अनुसंधान के बाद यह ज्ञात हुआ है कि मिरगी की बीमारी को पूरी तरह से दूर करने के लिये कामधेनु गोपाल नस्य रामबाण साबित हुई है.

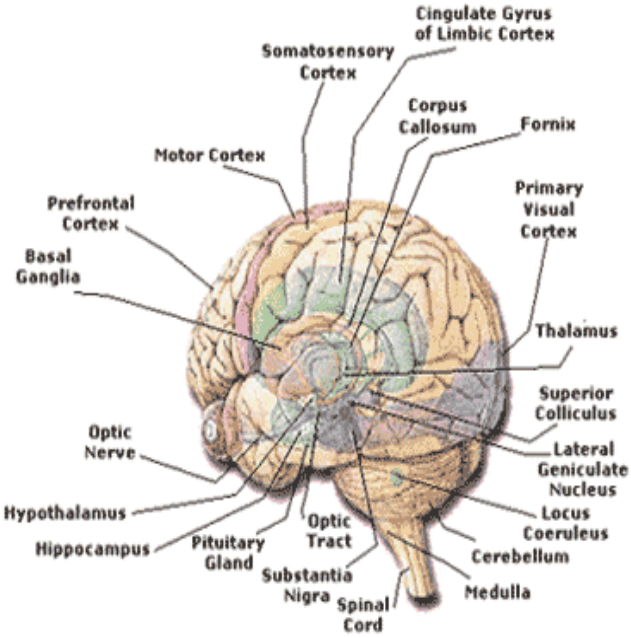

मानसिक बीमारी

अपस्मार मानसिक बीमारी है जिसमें बुद्धि का नाश पाया जाता है. अपस्मार में मनोवह तथा संज्ञावह स्त्रोत विकृत होते हैं.

मनोवह

मानव देह में मानसिक क्रिया कलापों को संपन्न करने वाले सभी केंद्र, मार्ग, तंतु मनोवह कहलाते हैं. अपस्मार में प्रकुपित हुए दोष मस्तिष्क के मनोवाही स्त्रोतों में पहुंचकर मन तथा बुद्धि को आवृत कर संज्ञानाश उत्पन्न करते हैं.

साधारणतया अपस्मार पीडित रोगी के मस्तिष्क में अंगगत कोई भी विकृति नहीं पायी जाती है.

स्वरोजगार

सबसे अधिक गायें भारत में मौजूद हैं. बहुत बड़ी संख्या में प्रतिदिन गायें बच्चे देती हैं. बहुत बड़ी मात्रा में प्रतिदिन गोवत्स पुरी-ा उत्पन्न होता है. भारत में वर्तमान में उपयोग नहीं करने के कारण गो वत्स पुरी-ा बेकार चला जाता है.

24 करोड़

गो वत्स पुरी-ा का उपयोग कर कामधेनु गोपाल नस्य बहुत बड़ी मात्रा में बनाने पर भारत में 24 करोड़ युवाओं को स्वरोजगार मिलेगा.

100 प्रतिशत गोरक्षा

युवाओं के द्वारा संगठित होकर 100 प्रतिशत गोरक्षा करना संभव है.

प्रथम स्तर

कुशल वैद्य के मार्गदर्शन में गोशालाओं में संपूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त कर कामधेनु गोपाल नस्य व्यक्तिगत स्तर पर गांवों में प्रतिमाह कम से कम 10 किलो एवं अधिकतम 100 किलो तक बनाने पर बिना विज्ञापन के ही मिर्गी के लोगों को नमूने के तौर पर प्रयोग के स्तर पर बहुत ही कम मूल्य पर देने पर वर्तमान में शिक्षित युवाओं के लिए स्वरोजगार की बहुत अच्छी संभावनायें हैं.

पंचगव्य महो-धियां

प्रथम स्तर पर आयुर्वेद संस्था में कम से कम 3 से 6 माह का संपूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त कर बहुत सारी पंचगव्य महो-धियां तैयार कर सकता है.

1 साल का डिप्लोमा

श्री निरंजन वर्मा जी ग्राम कटटावाक्ककम, तालुका तिनेरी, जिला कांचीपुरम, तमिलनाडू कार्यालय गव्य नेचर क्योर रिसर्च सेंटर सीयू शाह भवन 78-79 रिचर्डन रोड वेपेरी चेन्नई 600007 वर्तमान में युवाओं को पंचगव्य महो-धियों का 1 साल का डिप्लोमा दे रहे हैं.

युवा कामधेनु गोपाल नस्य के साथ में जड़ीबूटीयुक्त विभिन्न प्रकार के गोमूत्र अर्क, अनेक प्रकार की जड़ीबूटी युक्त घनवटी, अग्निहोत्र भस्म की कैप्सूल, आसव, युवतियों के लिए नारी संजीवनी, बच्चों के लिए बालपालरस, युवाओं के लिए प्रमेहारी, तक्कारि-ट, आंखों की दवाएं, कान की दवाएं, नाक की दवाएं, दंतमंजन, नहाने का साबुन, एक्जीमा साबुन, अंगराग पावडर, उबटन, क्रीम, लोशन, बर्तन मांजने की राख, बायो गैस, सी.एन.जी., अग्निहोत्र के कंडे, मलहम, मालिश तेल, पंचगव्य घृत, महापंचगव्य धृत, बहुत सारे जड़ीबूटियों वाले धृत, जैविक खादें, फसलरक्षक, फिनाइल, डिस्टेम्पर, कवेलू, प्लास्टर, टाइल्स, कागज, मच्छर भगाने की कोइल, धूप, अगरबत्ती जैसी बहुत सारी सामग्री तैयार कर नमूने के रुप में कम मूल्य पर लोगों को देकर सम्मान के साथ में जीवन जी सकता है.

द्वितीय स्तर

भारत में सबसे अधिक देशी गायें हैं. कामधेनु गोपाल नस्य बनाना बहुत ही सरल है एवं इसकी लागत भी बहुत ही कम है तथा मरीज को ठीक करने के लिये प्रयोग करना भी सरल है तथा साइड इफेक्ट भी नहीं है इसलिये गांव में बहुत ही आसानी से तैयार किया जा सकता है.

छोटी गोशालाओं में गायों को पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए वर्तमान में युवा शिक्षित व्यक्तियों के द्वारा आयुर्वेद के विशे-ज्ञों के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रतिमाह कम से कम 100 किलो तक एवं अधिकतम 1000 किलो तक कामधेनु गोपाल नस्य तैयार कर बिना विज्ञापन के ही नमूने के रुप में प्रयोग करने के लिए बहुत ही कम मूल्य पर मिर्गी के मरीजों के लिए अस्पतालों में पहुंचाने के लिए आयुर्वेद संगठनों के सहयोग से स्वरोजगार की बहुत अच्छी संभावनायें हैं.

तृतीय स्तर

मध्यम गोशालाओं में गायों के संपूर्ण स्वावलंबन के लिए आधुनिक अनुसंधान के साथ में कुशल वैद्यों के साथ में मिलकर कामधेनु गोपाल नस्य प्रतिमाह कम से कम 1000 किलो तथा अधिकतम 10,000 किलो तक तैयार करने के लिए अखिल विश्व गायत्री परिवार जैसे अंतरा-ट्रीय स्तर के संगठन के सहयोग से साहित्य एवं वीडियो सीडी तैयार कर गांवों के प्रत्येक मिरगी के मरीज तक बहुत ही कम मूल्य पर नमूने के तौर पर प्रयोग करने पर परिणाम मिलने पर निर्यात के लिए उच्च गुणवत्ता के उत्पाद के साथ में देखने के लिए युवाओं के स्वरोजगार की संभावना है.

चतुर्थ स्तर

बड़ी गोशालाओं में गायों के स्वावलंबन के लिए बहुत ही कम मूल्य में कामधेनु गोपाल नस्य बहुत ही उच्च गुणवत्ता के साथ में प्रतिमाह कम से कम 10,000 किलो एवं अधिकतम 50,000 किलो तक तैयार कर रामदेव जी जैसे संगठन के माध्यम से मिर्गी के मरीजों तक पहुंचना है.

पंचम स्तर

महानगरों में आधुनिक अनुसंधान केंद्र स्थापित कर गोशालाओं से गो वत्स पुरी-ा खरीद कर कामधेनु गोपाल नस्य के निर्यात करने के लिए प्रतिमाह कम से कम 1 लाख किलो का निर्माण कर तैयारियां करें.

निर्यात

विश्व में मिर्गी के मरीज बहुत ही अधिक हैं. कामधेनु गोपाल नस्य के निर्यात की संभावनायें बहुत ही अधिक हैं.

कामधेनु गोपाल नस्य बनाने की संपूर्ण विधि

सबसे पहले प्रथम गोबर को अच्छी तरह से पीसकर चूर्ण तैयार कर लें. चूर्ण में आक का दूध आवश्यकता अनुसार मिलाकर खरल में मिला लें.

काली मिर्च का चूर्ण अलग से तैयार कर लें. काली मिर्च का चूर्ण खरल में डालकर आक का दूध मिलाकर खूब अच्छी तरह से मिश्रण तैयार करें.

अपामार्ग को खरल में डालकर आक के दूध से मिलाकर पीस लें. शिग्रू या बबूल के बीज को खरल में डालकर आक के दूध के साथ पीस लें. सभी वस्तुएं अच्छी तरह से मिला लें तथा खाली सूंघनी में भर लें.

वर्तमान में गोशालाओं में सूंघनी के बदले में कांच की बोतल में बंद करके बेचते हैं.

प्रशिक्षण

कामधेनु गोपाल नस्य को तैयार करने के लिये अनुभवी कामधेनु चिकित्सक के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण की आवश्यकता है. वर्तमान में श्री रेवाशंकर जी शर्मा स्वर्णपदक से सम्मानित, गोमूत्र चिकित्सक आरोग्य मंदिर रटलाई झालावाड़ राजस्थान कामधेनु गोपाल नस्य तैयार करने का प्रशिक्षण पूरे भारत में बहुत लम्बे समय से सभी गोशालाओं में दे चुके हैं. श्री रेवाशंकर जी शर्मा से संपर्क कर उन्हें अपने यहां पर प्रशिक्षण देने के लिये बुलवाया जा सकता है.

श्री सुनील बालकृ-ण मानसिंगा, गो विज्ञान अनुसंधान केंद्र नागपुर, श्री रतनलाल जी खंडेलवाल अकोला, श्री रतनलाल जी बाफना, अहिसा तीर्थ जलगांव, श्री केसरीचंद जी मेहता कामधेनु औ-धालय झाझूवाड़ी बजाज कोलोनी वर्धा महारा-ट्र 442001, श्री अचलदास पारख, श्री कृ-ण गोरक्षण केंद्र पारख भवन, शनिचरी बाजार दुर्ग छतीसगढ़ राज्य 9826636000, डा. हरि प्रसाद जोशी जी उज्जवल गोरक्षण केंद्र बंजारी धाम, रांवा भाटा रायपुर छतीसगढ़ राज्य 492001 के द्वारा पिछले 12 सालों से, श्री मोहन जी नामधर, गोपाल गोशाला भीलवाड़ा मार्ग चितौड़गढ़ राजस्थान, डा. अशोक कलवार जी, राजस्थान गोसेवा संघ रानी बाजार बीकानेर राजस्थान के द्वारा 10 सालों से, प्रशिक्षण दिया जा रहा है.

वित्तीय सहायता

6 राज्यों में उनकी राजधानी में गोसेवा आयोग के द्वारा गोशालाओं को हर साल 15 हजार रु वित्तीय सहायता प्रशिक्षण देने के लिए देती है.

भारतीय जीवजंतु कल्याण बोर्ड चैन्नई के द्वारा भी गोशालाओं को गोवंश सेवकों को संपूर्ण प्रशिक्षण देने के लिए वित्तीय सहायता दी जा रही है.

डा. राजेंद्र प्रसाद जी निदेशक महात्मा गांधी ग्रामीण औद्योगिकीकरण संस्थान रामनगर वर्धा महारा-ट्र 442001 10 गांवों में प्रशिक्षण देने के लिए वित्तीय सहायता भी दे रही है.

अनुसंधान

भारत में गांव में कामधेनु गोपाल नस्य पर निरन्तर अनुसंधान करने के लिये तथा मिर्गी के साथ साथ बहुत सारे मानसिक रोगों को दूर करने के लिये बहुत सारी दवायें तैयार करने के लिये ग्रामीण कामधेनु विश्वविद्यालय की तुरन्त ही आवश्यकता है. छतीसगढ़ राज्य में सरकारी कामधेनु विश्वविद्यालय अंजोरा में 2007 में प्रारम्भ किया गया है. गुजरात में सौरा-ट्र में मई 2009 से कामधेनु विश्वविद्यालय प्रारम्भ किया गया है.

श्री वीरेन्द्र जी जैन निवास जी-12, रतलाम कोठी, इंदौर एवं कार्यालय बसंत मेंशन, किसान किसानी विकास ट्रस्ट 165, रविन्द्रनाथ टैगोर मार्ग, इंदौर 452001 के द्वारा निरन्तर अनुसंधान किए गये हैं.

वर्तमान में डा. रामस्वरुप सिंह जी चौहान संचालक इंडियन वेटनरी रिसर्च इंस्टीटयूट इज्जतनगर बरेली उत्तरप्रदेश 243122 मोबाइल 09412288343 में पहले गोबर के रसायनिक संगठन पर अनुसंधान चल रहे हैं.

गोमय से नहाने का साबुन

प्रस्तावना

आदेश

महाभारत में अनुशासन पर्व 28-19 में आदेश दिया गया है कि मानव प्रतिदिन अपने देह पर गोबर लगाकर स्नान करे. गोबर से किया गया स्नान संस्कारित होता है,

अनिवार्य

प्रत्येक गोभक्त को प्रतिदिन गोमय साबुन से नहाना अनिवार्य है.

सूर्य की शक्तियां

गोलोक से कामधेनु मानव की हर कामना की पूर्ति करने के लिए मृत्युलोक में आयी है. गाय माता के गोबर में सूर्य की सभी शक्तियां हैं जिससे सर्व शारीरिक एवं मानसिक व्याधियों का दहन होता है.

परिवर्तन

गोमय साबुन से स्नान करने के कारण आधिभौतिक, आधिदैविक एवं आध्यात्मिक परिवर्तन प्रारम्भ होते हें. राक्षस मानव से पशु मानव, पशु मानव से मानव, मानव से देव मानव एवं देव मानव से दिव्य मानव इस तरह से विकास संभव है. देवत्व के गुण मानव में विकसित होते हैं.

लाभ

सुरक्षा

ओजोन परत में 280 लाख वर्गकिलोमीटर के छेद के कारण सूर्य से पराबैंगनी तरंगे सीधी धरती पर आ रही है जिससे सुरक्षा गोमय साबुन से ही संभव है.

कीटाणुनाशक

गोबर में फिनोल होता है जो कीटाणुनाशक है. एक बार गोमय साबुन से नहाने पर त्वचा पूरी तरह से निखरने लगती है.

गोबर में इंडोल, मेंथोल, फार्मेलीन, विटामिन बी-12 होता है. फार्मेलीन रोग प्रतिरोधक क्षमता में वृद्धि कर त्वचा के रोगों को समाप्त करने का गुण है.

वि-नाशक

गोबर में स्ट्रांशियम होता है. रक्त की बढी हुई गर्मी को भी गाय माता का गोबर अपने अंदर खींच लेता है. गोबर वि-नाशक है इसलिए रक्त के अंदर के वि-ा को पूरी तरह से खीच लेता है.

सोने की चमक

गोबर में कैरोटिन यानी स्वर्ण क्षार होता है इसलिए मानव देह में गोबर सोने की चमक उत्पन्न करता है.

विटामिन ए

कैरोटिन शरीर में प्रवेश कर विटामिन ए में बदल जाता है जिससे गाय माता के गोबर से मानसिक एकाग्रता बढ जाती है.

विटामिन बी-12

गोमय में विटामिन बी-12 होता है. विटामिन बी-12 रोम छिद्रों के माध्यम से अंदर पहुंचता है.

गोबर से बने साबुन से प्रतिदिन नहाने पर गोबर के समान ही सभी लाभ मिल रहे हैं. वर्तमान में विश्व में करोडो लोग गोमय साबुनों से नहा रहे हैं.

सत्युग

श्रीमद भागवत के अनुसार सत्युग में गाय के गोबर का उपयोग प्रत्येक मनु-य के द्वारा दिव्य उबटन, अदभुत अंगराग, चमत्कारिक लेप के रुप में प्रतिदिन नहाने के लिए किया जाता था.

त्रेता

नारद संहिता के अनुसार त्रेतायुग में कामधेनु का सम्मान करते हुए सूर्यवंशी भगवान श्री राम ने गोबर का उपयोग प्रतिदिन नहाने के लिए पंचगव्य, महापंचगव्य के रुप में किया था.

द्वापर

गर्ग संहिता के अनुसार द्वापर युग में चंद्रवंशी भगवान श्रीकृ-ण ने व्रज में प्रतिदिन नहाने के लिए गायों के गोबर का उपयोग किया था.

कलियुग

कलियुग में भी विश्व में नहाने के लिए कामधेनु गायों के गोबर का उपयोग पंचगव्य, महापंचगव्य, साबुन, अंगराग, उबटन, लेप, लोशन के रुप में किया जाता है.

आवश्यक सामग्री

1250 ग्राम गाय का ताजा गोबर, नीम पत्र, गेरु मिटटी 200 ग्राम, मुल्तानी मिटटी 1000 ग्राम, गोबर के रस में बराबर मात्रा में तिल्ली के तेल को मिलाकर पकाया हुआ 250 ग्राम, 50 ग्राम डली वाला कपूर, अजवाइन सत 10 ग्राम

सावधानी

आवश्यक कच्ची सामग्री तराजू में तौल कर ली जाये. अंदाज से नहीं लेनी चाहिये. गुणवत्ता को बनाये रखने के लिये नहाने के साबुन के जानकार को ही देखरेख करने के लिये रखना अनिवार्य है. पैकिंग अच्छी रखनी है.

अलग अलग नहाने के साबुन बनाने के लिये आवश्यक सामग्री में परिवर्तन करना है.

विधि

गोबर के रस में मुलतानी मिटटी, गेरु, नीम पत्र मिला कर खूब पीसकर 2 दिनों तक धूप में सुखायें. फिर पलव्हलाइजर में डालकर बारीक बारीक चूर्ण करके कपडे या बारीक चलनी में छानें. कड़ाही में तिल तेल झाग आने तक गर्म करें.

गर्म होने के बाद उसमें गोमय रस स्वरस मिला दें. मंद अग्नि पर तेल तथा गोमय स्वरस पकायें. गोमय स्वरस औटकर हरे रंग के पत्थर के समान दिखने लगता है. यह तेल हरे रंग का होने पर सिद्ध हुआ ऐसा समझना चाहिये.

तेल सिद्धि की परीक्षा कर यह तेल गर्म रहते ही छान लें. बाद में कपूर के तेल को खूब पीसकर और गोमय तेल इसी में मिलाकर खूब मसलें. नीम के पत्तों को 400 ग्राम पानी में डालकर पानी आधा होने तक पका लें. नीम का गरम काढा मिलाकर छानकर मात्रा के अनुपात में मिला लें.

150 ग्राम के गोले बनाकर टिकिया डाई या सांचे में दबाकर पहले 24 घंटे छांव में सुखाकर बाद में धूप में साबुन को सूखा दें. 7-8 दिन के बाद टिकिया पलटकर फिर से सुखा लें. ऐसा 3-4 बार करें.

सुखने पर टिकिया को संगजीरा पावडर लगायें. उपरांत पैकिंग करें.

स्वरोजगार

अच्छी गुणवत्ता वाला नहाने का साबुन अधिकतम 5 रुपये में तैयार करना संभव है. गोबर के अधिकतम उपयोग करने पर 100 प्रतिशत गोवंश रक्षा करना संभव है.

5 रु. किलो

गोपालकों से 1 किलो गोबर कम से कम 5 रु. में खरीदने पर गोपालन को बढ़ावा मिलेगा.

स्वरोजगार

प्रतिदिन नहाने के साबुन बनाने वाले प्रशिक्षित व्यक्ति के द्वारा कम से कम 100 साबुन तैयार करना आराम से संभव है. सम्मान के साथ नहाने का साबुन तैयार कर प्रतिदिन 100 रुपये से लेकर 200 रु. तक कमाना संभव है.

महानगरों में 500 रु. से 1500 तक कुशल कारीगर कमा सकता है.

नहाने के साबुनों का उत्पादन तथा विक्रय मात्रा जैसे जैसे बढता जायेगा मासिक लाभ बढता ही जायेगा.

प्रथम स्तर

कलकत्ता पिंजरापोल सोसायटी चाकुलिया झारखंड 832301 06594233090, 233275 मोबाइल 09304170629, 09431544016 श्री पुरु-गोत्तम जी झुनझुनवाला के मार्गदर्शन में 65 एकड़ के विशाल क्षेत्र में 314 गोवंश के साथ 1916 से ही गोशाला चलायी जा रही हे तथा 1995 में गोमय से नहाने का साबुन 10 रु. में बेचा जा रहा है. 1000 गोवंश सेवकों को नहाने के साबुन बनाने का निःशुल्क प्रशिक्षण देने के लिए तैयारी की गयी है.

चेतावनी

नहाने के साबुनों में कृत्रिम सुगंध रसायनों से तैयार करने के कारण ही मानव चमडी के लिये नुकसानदायक रसायनों का लगातार उपयोग किया जाता है. विश्व में हुए गहन अनुसंधानों से यह साबित हो गया है कि बाजार में मिल रहे साबुनों के लगातार प्रयोगों से त्वचा का कैंसर बहुत अधिक हो रहा है. नहाने के साबुनों को मुलायम तथा कोमल बनाने के लिये मरे हुए जानवरों की चर्बी भी मिलायी जाती है जिससे हिंसा को बढावा मिल रहा है.

भारत में गांव में गाय माता के गोबर का सबसे अच्छा उपयोग नहाने का पंचगव्य या गोमय साबुन का निर्माण करने पर संभव है.

भारत की घरेलू बचत का बहुत बडा भाग प्रतिदिन नहाने के लिये साबुन खरीदने में प्रतिदिन खर्च किया जाता है. आम आदमी को नहाने के लिए कम मूल्य पर हम यदि अच्छे ढंग से हर गांव में गोमय साबुन उपलब्ध करवा दें तो बहुत अधिक धन गोमाता के लिए प्राप्त कर सकते हैं.

विज्ञापन के अभाव में भी गुणवत्ता के आधार पर गोभक्त स्वर्गीय नेडेप काका के अनुसार गोमय साबुन हर गांव में बहुत ही बड़े स्तर पर बनाने से 40

करोड से अधिक शिक्षित युवा बेरोजगारों को नियमित रोजगार मिलना संभव है.

प्रथम स्तर में साबुन बनाने के उद्योग में संपूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त कर भारत में गांव में व्यक्ति जड़ी बूटियों वाले औ-धि युक्त नहाने के साबुन, गंगा जल, मुलतानी या पंचगव्य या नीम, तुलसी, केवड़ा, जास्मीन, जूही, मोगरा, गुलाब, चमेली, चंदन, एलेवेरा, आंवला, एक्जीमा में से कोई भी एक चुनकर बहुत ही कम लागत लगाकर गोशाला से कम से कम 5 रु. किलो मूल्य पर गोमय खरीद कर बिना विज्ञापन के कम से कम 100 किलो एवं अधिकतम 5000 किलो तक प्रतिमाह बहुत ही कम मूल्य के साबुन का उत्पादन बहुत ही आराम से कर सकता है. स्वरोजगार के रुप में सर्वश्रे-ठ है.

नमूने के रुप में कम मूल्य 10 रु. से 12 तक के साबुन बहुत आराम से बिक जाते हैं.

श्री जलाराम गो सेवा केंद्र भाभर जिला बनासकांठा उत्तर गुजरात के द्वारा श्री दत्तशरणानंद जी श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा राजस्थान के मार्गदर्शन में सुरभि के नाम से एलोवेरा 1 प्रतिशत 1.5 प्रतिशत ग्लिसरीन मिलाकर 10 रु. मूल्य पर नहाने का सफेद रंग का बहुत ही आक-र्क साबुन जैन सोप एंड डिटरजेंट शाहीबाग अहमदाबाद में तैयार किया गया है बहुत ही अच्छी पैकिंग में उपलब्ध है जो बहुत ही लोकप्रिय है.

15 रु. मुद्रित बिक्री मूल्य पर बेचने पर 5 रु. लाभ मिल रहा है. एक वीडियो सीडी तैयार की गयी है जिसमें गोवंश की सेवा करने के बारे में 41 मिनट की तैयार की गयी है.

साबुन के साथ में पंचगव्य दवायें बनाने का कम से कम 6 माह से 1 साल का संपूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त कर देनिक जीवन में उपयोगी वस्तुओं दूध के विभिन्न उत्पाद रसगुल्ले, दूधपाक, मावे की जलेबी, मावे के लडडू, मेवे के लडडू, राजभोग, छप्पन भोग, मोहनथाल, गोरसपाक, सुहाग सूंठ, रबड़ी, बासुंदी, दूध का हलवा, दूध की मेवे युक्त खीर, श्रीखंड, संदेश, मिल्क केक, मिल्क शेक, मावाबरफी, मावा कुल्फी, लस्सी, मक्खन मिश्री, मिठी दही, योगहर्ट, आइसक्रीम, चोकलेट बरफी, काजू कतली, मोहनभोग, मेवामलाई, गुलाबजामुन, कालाजामुन, युवतियों का टानिक नारी संजीवनी, युवाओं का टानिक प्रमेहारी, बच्चों का टानिक बालपालरस, कब्ज निवारक चूर्ण, मधुमेहनाशक चूर्ण, जवानी का जोश देने के लिए विभिन्न जड़ीबूटियों वाली घनवटी, उत्साहवर्धक विभिन्न जड़ीबूटियों युक्त अर्क, आसव, पंचगव्य धृत, महापंचगव्य घृत, दंतमंजन, पेस्ट, मलहम, क्रीम, लोशन, फेस पैक, शेव आफटर लोशन, शैम्पू, फिनाइल, कागज, बायो गैस, सी.एन.जी., जैविक खाद, फसलरक्षक, धूप, हवन सामग्री, अग्निहोत्र के कंडे, बर्तन मांजने की राख, मच्छर भगाने की कोइल, का निर्माण कर सकता है.

उत्तरी अमेरिका

वंडरफुल वीपन

विश्व में गोमय से बने साबुनों के लिए मानसिक सोच बदली है. 1973 से विश्वविद्यालयों में गोमय पर गहन अनुसंधान किये गये हैं. 1979 से अग्निहोत्र विश्वविद्यालय स्थापित किया गया है.

उत्तरी अमेरिका में नहाने के साबुनों के लिए भारतीयों के द्वारा गोमय के उपयोग करने पर जोर दिया गया है.

गोमय से बने साबुनों के उपयोग के लिए अमेरिका में बहुत अधिक अनुसंधान किये गये हैं. गोमय के साबुनों पर बहुत अधिक परीक्षण अमेरिका में हुए हैं. परीक्षणों के बाद में गोमय के साबुनों को अमेरिका वंडरफुल वीपन कहता है.

विश्व का ध्यान गोमय के साबुनों के लिए सबसे पहले अमेरिका ने खीचा है.

मैजिक सोप

1974 से पश्चिमी जर्मनी में गोमय से बने साबुनों के लिए मानसिकता तैयार हुई है. लगातार वैज्ञानिक अनुसंधानों के कारण पश्चिमी जर्मनी गोमय के साबुनों को मैजिक सोप कहता है.

दक्षिण आफ्रीका

लंबे सींगो वाले भारतीय गोवंश को 2000 सालों पूर्व भारत से ले जाया गया था. कम दूध देने के बाद भी भारतीय गायों को गोमय के उपयोग करने के लिए आदिवासियों के द्वारा पालकर विकसित किया है. अधिकतम 10 प्रतिशत वसा दूध में मौजूद है.

अधिक वसा के कारण ही अंकोल तथा वाटसी प्रजातियां वर्तमान में अमेरिका आफ्रीका से ले गया है.

दक्षिण आफ्रीका गोमय के साबुनों के लिए विशे-ा रुचि रखता है.

कोरिया, नोर्वे, इजिप्ट, क्यूबा, मोरिशस, रुस, चीन, पाकिस्तान, बंगलादेश, श्रीलंका, मलेशिया, इंडोनेशिया, कुवेत, दुबई, मस्कत, इरान, इराक,

इजराइल, जापान में नहाने के साबुन के निर्यात करने के लिए महानगर में निर्यातकों से संपर्क कर गुणवत्ता पर पूरा ध्यान देना आवश्यक है.

द्वितीय स्तर

द्वितीय स्तर में छोटी गोशालाओं में गोवंश को पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए बिना विज्ञापन के कुशल कारीगरों के सहयोग से नीम, तुलसी, आवला, मुलतानी, चमेली, मोगरा, गुलाब, पंचगव्य, महापंचगव्य, चंदन, एलोवेरा, जड़ीबूटियों वाले अलग अलग नहाने के साबुन बन सकते हैं.

कम से कम 1000 से अधिकतम 20000 किलो प्रति माह तक साबुन का उत्पादन गोशाला में कर सकता है.

गो ब्रांड प्रोडक्ट वर्तमान में 200 गोशालाओं से साबुन खरीदकर विश्व हिंदु परि-द के सहयोग से बेच रहे हैं. 75 ग्राम के साबुन 15 रु. में बिक रहे हैं. बड़े साबुन 30 रु. तक बिक रहे हैं. ऐलोवेरा का साबुन 30 से 50 रु. तक बिकता है.

भारत में वर्तमान में विदेशी बहुरा-ट्रीय कंपनी के द्वारा 5000 से अधिक प्रकार के नहाने के साबुन तैयार कर दूरदर्शन में मनमोहक विज्ञापन दिखाकर मंहगे मूल्य पर उपयोग किये जा रहे हैं.

भारत में नहाने के साबुनों का बहुत बडा बाजार मौजूद है. विदेशी कंपनियां के द्वारा लोगों को मनोवैज्ञानिक ढंग से प्रतिदिन साबुनों का उपयोग करने के लिये प्रेरित करने नहाने के साबुनों में ढेर सारा झाग उत्पन्न करने के लिये सोडियम लोरल सल्फेट का उपयोग किया जाता है.

वर्तमान में भारत में 5000 प्रकार के साबुनों से नहाने के कारण चमडी के रोग तेजी से बढ रहे हैं.

गोमय से बने साबुनो से ग्रामीण रोजगार को बहुत अधिक बढावा मिलेगा तथा गोबर का मूल्य अधिक मिलने से गोपालन को बढावा मिलने से गोपालक बहुत सुखी होंगे.

तृतीय स्तर

तृतीय स्तर में मध्यम गोशालाओं में गोवंश को पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए विज्ञापन के सहयोग से पंचगव्य, पंचगव्य में 24 जड़ीबूटियों के साथ में मिलाने पर महापंचगव्य, ऐलोवेरा, चंदन, एक्जीमा, नीम, आंवला, जड़ीबूटियों के कम से कम 1100 किलो एवं अधिकतम 2000 किलो प्रतिमाह साबुन का उत्पादन कर सकता है. 150 ग्राम के बड़े साबुन 30 रु. से 50 रु. तक बिक रहे हैं. कानपुर गोशाला सोसायटी के द्वारा तैयार पंचगव्य साबुन मूल्य 16 रुपये भारत में बहुत ही अधिक लोकप्रिय है. कानपुर गोशाला सोसायटी के द्वारा तीन रुपये विक्रेता को लाभ 1 साबुन बेचने पर दिया जाता है.

चतुर्थ स्तर

चतुर्थ स्तर में चंदन, ऐलोवेरा, नीम, तुलसी, मुलतानी, गंगाजल, यमुनाजल जैसे अनेकों प्रकार के साबुन कम से कम 2100 किलो तथा अधिकतम 10,000 किलो प्रतिमाह तक बड़ी गोशालाओं में कर सकता है.

श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा राजस्थान के द्वारा 3 प्रकार के नहाने के साबुन तैयार किये गये हैं.

पंचम स्तर

पंचम स्तर में 11,000 से 20,000 किलो प्रतिमाह तक महानगरों में निर्यात करने के लिए उच्च गुणवत्ता वाले 80,000 जड़ीबूटियों वाले विभिन्न प्रकार के साबुनों का उत्पादन कर सकता है. असाध्य रोगों में 100 रु. तक जड़ीबूटीयुक्त साबुन बिक रहे हैं.

भारत में महानगरों में पंचगव्य साबुनों की मांग जबरदस्त है. मांग को ध्यान में रखकर संत श्री आसाराम जी के द्वारा महानगरों में संगठन के माध्यम से वातानुकूलित दुकानें खोली गयी हैं. भारत से बाहर रहने वाले भारतीयों में भी नहाने के लिये पंचगव्य, गोमय, अंगराग, नीम, मुलतानी साबुनों की बहुत अधिक मांग है.

संत आसाराम बापू जी के द्वारा बहुत बडे स्तर पर नहाने का साबुन 7 प्रकार से पंचगव्य, तुलसी, मोगरा, गुलाब, मुलतानी, चमेली, केवडा तैयार किया जा रहा है तथा प्रत्येक 15 रुपये में बेचा जा रहा है. आसाराम बापू जी के अनुयायी बहुत बडी संख्या में इन साबुनों का उपयोग पूरे भारत में लम्बे समय से कर रहे हैं. साबुन बेचने वाले को कम से कम 25 प्रतिशत कमीशन दिया जाता है.

एक्जिमा साबुन

ओजोन परत में छेद

विश्व में ओजोन परत में 280 लाख वर्ग किलोमीटर के छेद के कारण ही सूर्य की पराबैंगनी तरंगों का आक्रमण सीधा त्वचा पर पड़ने के कारण ही एक्जीमा की बीमारी बढ़ रही है.

रामबाण

विश्व में किये गये अनुसंधानों के कारण यह बात स्प-ट है कि एक्जीमा साबुन एक्जीमा, पामा, दाद, सिरोसिस ओफ स्कीन, मंडल, कुस्ठ की बीमारी में बहुत ही प्रभावशाली है.

विश्व में किये गये वेज्ञानिक परीक्षणों से गोमय में उपस्थित करोड़ो रसायनों के बारे में पता लगा है.

घिसकर लगाना

एक्जीमा साबुन का मुख्य उपयोग पामा, दाद, सिरोसिस ओफ स्किन, मंडल कुस्ठ में पानी में घिसकर लगाना है.

सावधानी

यदि लगाने पर जलन लगे तो घी, खोपरे का तेल लगा लें. एक्जिमा साबुन लगाते समय सावधानी यह रखनी है कि टिकिया को चेहरे और आंखों पर नहीं लगाना चाहिये.

नहाने के लिए नहीं

एक्जिमा साबुन नहाने के लिये नहीं है. एक्जिमा साबुन सिर्फ एक्जिमा प्रभावित जगह पर ही लगाना है.

स्वरोजगार

गोमय का उपयोग कर निर्यात करने के लिए उच्च गुणवत्ता के साथ में एक्जीमा साबुन बनाने से कम से कम 40 करोड़ युवा लोगों को विश्व में स्वरोजगार मिलेगा.

प्रथम स्तर

प्रथम स्तर पर एक्जीमा पर आधुनिकतम अनुसंधान केंद्र तेयार कर भारत में गोमय का अच्छा मूल्य देकर गांव गांव में युवाओं के द्वारा व्यक्तिगत एकजीमा साबुन बनाने के लिए आयुर्वेद के आचार्य के मार्गदर्शन में कम से कम 1 साल का संपूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त कर कम से कम प्रतिमाह 100 किलो तक प्रयत्न करें.

द्वितीय स्तर

छोटी गोशालाओं में नमूने के रुप में प्रयोग करने के लिए कम मूल्य पर देने के लिए आधुनिकतम सुविधा के साथ में अनुसंधान केंद्र स्थापित कर गोवंश को पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए कम से कम प्रतिमाह 1000 किलो एक्जीमा साबुन बनायें.

तृतीय स्तर

मध्यम गोशालाओं में सभी सुविधओं के साथ में अनुसंधान केंद्र स्थापित कर अखिल विश्व गायत्री परिवार के सहयोग से गांव गांव में वितरित करने के लिए कम से कम एक्जीमा साबुन प्रतिमाह 10,000 किलो बनायें.

चतुर्थ स्तर

बड़ी गोशालाओं में स्वामी रामदेव जी के समान ही उच्च गुणवत्ता के साथ में बहुत ही कम मूल्य पर गांव गांव में देने के लिए कम से कम एक्जीमा साबुन प्रतिमाह 1 लाख किलो बनायें.

पंचम स्तर

महानगरों में निर्यातकों को देने के लिए एक्जीमा साबुन कम से कम प्रतिमाह 10 लाख किलो बनायें.

आवश्यक सामग्री

मुल्तानी मिटटी 1 किलो, लाल गेरु मिटटी 200 ग्राम, गीला गोबर 1250 ग्राम, नीला थोथा यानी कोपर सल्फेट 6 ग्राम, कामधेनु तेल 125 ग्राम, नीमपत्र 100 ग्राम, जल 400 ग्राम,

विधि

मुलतानी मिट्टी को अच्छी तरह से साफ करके छोटे छोटे टुकड़े कर पल्व्हरायझर में डालकर बारीक कपड़छन चूर्ण करें. गेरु मिटटी को शोधन करके छोटे टुकड़े कर पल्व्हलायझर में डालकर बारीक पावडर करें. मुलतानी मिट्टी गेरु एवं गोबर की राख समप्रमाण में लेकर अच्छी तरह से एकत्र कर मिला लें. यह मिश्रण धूप में सूखा लें. अच्छी तरह से सूख जाने के बाद पल्व्हलायझर में डालकर इस मिश्रण को पीस लें. उसके बाद छानकर रखें. कोपर सल्फेट यानी नीला थोथा को बारीक पीसकर उपरोक्त सामान में मिलाकर नीम के पत्तों का काढा बनाकर छानकर उस पानी से गिलाकर टिकिया सा बनाकर डाई या वैसे ही टिकिया बनाकर धूप में सूखा लें.

गोमय से चमरोग नाशक मलहम

प्रस्तावना

वर्तमान में मानव के द्वारा 1928 में सीएफसी की खोज करने के बाद में सीएफसी का वातानुकूलन, शीतलन एवं अन्य में अंधाधुध उपयोग करने के कारण 1955 में फुटबाल जितना छेद ओजोन परत में हो गया था.

जीवहत्या के कारण 1040 मेगावाट उर्जा के उत्पन्न होने के कारण ओजोन परत खतरे में है. ओजोन की परत में 280 लाख वर्ग किलोमीटर छेद हो जाने के कारण ही सूर्य की किरणें जो परा बैंगनी तरंगे अपना घातक प्रभाव सीधे ही त्वचा पर डालने से कोमल तथा उजली त्वचा वाले लोगों को चर्मरोग की बीमारी पूरे विश्व में बहुत ही अधिक बढती जा रही है.

मानव की प्रकृति के क्रियाकलापों में बढ़ती अवांछित दखलंदाजी ने अपनी सुरक्षा कवच में ही सेंध लगा दी है. जिसके कारण ओस्ट्रेलिया तथा तस्मानिया में त्वचा के रोग बहुत ही अधिक हो रहे हैं. आयरिस और स्काटिस के मूल लोगों को बाहर काम करने वाले लोगों किसान, नाविकों चर्मरोग को दूर करने के लिये गोमय से चर्मरोग नाशक मलहम की मांग बहुत ही अधिक है.

मानव के देह की तीन प्रणालियां सीधे पराबैंगनी यानी यूवी तरंगों का सामना करती है. हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली जो हमें रोगों से लड़ने में मदद करती है यूवी तरंगों का सीधे सामना करती है.

यूवी तरंगे हमारी प्रतिरक्षा प्रणाली को कमजोर कर देती है जिसके कारण ही त्वचा संक्रमणों का सामना नहीं कर पाती है जिसके कारण त्वचा की कसावट ढीली पड़ जाती है उस पर झूरियां पड़ जाती है.

स्वरोजगार

गांव गांव में गोमय से चर्मरोग नाशक मलहम तैयार करना संभव है तथा 40 करोड़ से अधिक लोगों को विश्व में निर्यात के माध्यम से स्वरोजगार मिलेगा.

प्रथम स्तर

विश्व में गोबर पर गहन अनुसंधान लगातार चल रहे हैं. देशी गाय के गोबर में करोड़ों रसायन मौजूद हैं. देशी गाय का गोबर त्वचा में मलहम के रुप में प्रयोग करने पर कल्याणकारी प्रभाव देता है.

प्रथम स्तर पर प्रतिदिन 100 से 500 रु. तक का लाभ प्राप्त करने के लिए निर्यात पर ध्यान देना आवश्यक है.

वर्तमान में व्यक्तिगत स्तर पर युवाओं के द्वारा आयुर्वेद के आचार्य के पास में कम से कम 1 साल तक संपूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त कर गोमय का मूल्य अधिकतम देकर 100 प्रतिशत गोवंश रक्षा करना संभव है.

आने वाले समय में चर्मरोग में बहुत ही तेजी के साथ में वृद्धि संभव है. चर्मरोग नाशक मलहम की मांग में बढ़ोत्तरी संभव है.

100 किलो

आधुनिक सुविधाओं सहित चर्मरोग पर अनुसंधान केंद्र स्थापित कर बहुत ही कम मूल्य पर अपने रिश्तेदारों तथा मित्रों को नमूने के रुप में देने के लिए बहुत ही कम लागत में गोमय से कामधेनु चर्मरोगनाशक मलहम प्रतिमाह कम से कम 100 किलो एवं अधिकतम 1000 किलो तक तैयार करना आवश्यक है.

द्वितीय स्तर

वितरण व्यवस्था

छोटी गोशालाओं में साइकिल या ओटो रिक्शाओं के माध्यम से घर घर में पंचगव्य महो-षधियों के वितरण की व्यवस्था करने पर चमत्कारिक परिणाम संभव है.

1000 किलो

गोवंश को पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए मरीज को भरती कर उपचार करने के लिए आधुनिकतम सुविधाओं के साथ में आयुर्वेद के विशे-ज्ञ के साथ में चर्मरोग पर गहन अनुसंधान कर कम से कम प्रतिमाह 1000 किलो तथा अधिकतम 10,000 किलो तक कामधेनु चर्मरोग नाशक मलहम तैयार करना आवश्यक है.

तृतीय स्तर

वितरण

मध्यम गोशालाओं में व्यक्तिगत वाहनों से वितरकों तक पंचगव्य महो-षधियों के वितरण करने के कार्य से बहुत अच्छे परिणाम मिलते हैं.

10,000 किलो

हर गांव में चर्मरोग के मरीज के शिविर लगाकर नमूने के रुप में देने के लिए चर्मरोग अनुसंधान केंद्र की

स्थापना कर युवाओं को संपूर्ण प्रशिक्षण देकर कम से कम प्रतिमाह 10,000 किलो तथा अधिकतम 50,000 किलो तक कामधेनु चर्मरोग नाशक मलहम तैयार करना आवश्यक है.

चतुर्थ स्तर

बड़े वाहनों में गायत्री शक्तिपीठों, प्रज्ञापीठों, ज्ञानमंदिरों जैसे वितरण केंद्रों तक पंचगव्य महो-धियों के वितरण करने से अच्छे परिणाम संभव हैं.

50,000 किलो

बड़ी गोशालाओं में प्रतिमाह कम से कम 50,000 किलो एवं अधिकतम 1 लाख किलो तक कामधेनु चर्मरोग नाशक ममलहम बनाना आवश्यक है.

पंचम स्तर

1 लाख किलो

महानगरों में निर्यातकों को देने के लिए प्रतिमाह कम से कम 1 लाख किलो एवं अधिकतम 10 लाख किलो तक बनाय जा सकता है.

वर्तमान में भारत में केंद्र सरकार के द्वारा गोशालाओं में चर्मरोग नाशक मलहम बनाने के लिए अनुसंधान करने के लिए लापरवाही के कारण ध्यान नहीं दिया जा रहा है.

<u>सामग्री</u>

गोबर के कपडे का बारीक रगडा हुआ चूर्ण 500 ग्राम, गेरु मिटटी 400 ग्राम, गोमूत्र क्षार 100 ग्राम, नीला थोथा 50 ग्राम पेट्रोलियम जेली 1 किलोग्राम

<u>निर्माण विधि</u>

पहले नीला थोथा पीसकर फिर मंद आंच पर छोटी सी कढाई में हल्का भून लेवें. रंग सफेद होने पर उतार लेवें. फिर सूखी सभी चीजों को बारीक रगड कर पेटोलियम जेली में मिलाकर खरल में खूब रगडें. बाद में डिब्बी में भर लेवें.

<u>सावधानी</u>

कभी कोमल जगह पर लगाने से जलन हो तो थोडा घी मिलाकर हल्का करें.

<u>उपयोग</u>

त्वचा पर दाद, खाज, एक्जिमा, सिरोसिस पामा, दूसित घाव, त्वचा कैंसर पर लाभकारी है.

भारत में प्रशिक्षण प्राप्त कर गोशालाओं में में कम मात्रा में तैयार किया जाता है.

गोमय से नेत्र रोग हर अंजन

प्रस्तावना

भारत में प्राचीन समय से गांवों में नेत्र रोगो को हरने के लिये गोमय से नेत्र रोग हर अंजन बनाने की परम्परा है. प्राचीन परम्परा धीमे धीमे समाप्त हो गई जिसे फिर से लाने के लिये गांव गांव में संगठित अभियान चलाना है. 72 प्रकार की आंखों की बीमारियां वर्तमान में विश्व में प्रचलित हैं.

विधि

नेत्र रोग हर अंजन बनाने के लिये गोबर के स्वरस को गो घृत और गो दुग्ध में पकाकर अंजन करने से नेत्र रोगों में लाभ होता है.

गोमय तेल

प्रस्तावना

भारत में प्राचीन समय से गोमय तेल के उपयोग की परम्परा रही है. भारत में गाय माता के गोबर का बहुत अच्छा उपयोग तथा मूल्य गोमय तेल तैयार करने पर है. गोमय तेल को व्यापारिक स्तर पर तैयार करने के लिये गांव गांव में प्रशिक्षण केंद्रों की आवश्यकता है. भारत के गांव में कम समय में बहुत ही कम लागत में गोमय तेल बनाना संभव है. विश्व में विकसित देशों में निवास कर रहे हिंदुओं के द्वारा गोमय तेल की मांग की जा रही है.

सामग्री

100 मिलीलीटर गोबर का रस, तिल्ली का तेल 100 मिलीलीटर

विधि

गोबर का रस तथा तिल्ली का तेल दोनों को स्टील की भगोनी में मिलाकर मन्द मन्द आंच पर पकावें. जब गोबर का रस जल जावे तब साफ कपडे से तेल को छाने.

उपयोग

आंखों की जलन, लाली, आंखों के कारण सिरदर्द, तनाव, कच्चा मोतीयाबिन्द, रात्रि को कम दिखना, जाला, आंखों में खुजली होना, आंखों से पानी आना, कम आयु में चश्मा लगना, आंखों के कैंसर आदि बीमारियों में गोमय तेल बहुत ही लाभकारी है. वर्तमान में भारत में कुछ गोशालाओं में गोमय तेल का निर्माण बहुत बडे स्तर पर किया जा रहा है.

गोमय से उबटन

प्रस्तावना

भारत में महान योगीराज श्री रामदेव जी महाराज तथा परम पूज्य श्री आसाराम बापू जी के द्वारा संस्कार और आस्था चेनल में निरन्तर प्रवचन करने के कारण तथा उबटन के उपयोग पर अधिक जोर देने के कारण वर्तमान में गाय माता के गोबर से तैयार उबटन की बहुत अधिक मांग पूरे विश्व में उत्पन्न हो गयी है. विश्व के कई विकसित देशों में रहने वाले भारतीयों के लिये भारत से गोमय से उबटन तैयार कर के निर्यात करने की अपार संभावनायें मौजूद हैं. निर्यात के लिये भारत के गांव के उर्जावान संस्कारित युवाओं को गोमय से उबटन तैयार करने के लिये ग्रामीण कामधेनु विश्वविद्यालय में संपूर्ण प्रशिक्षण की आवश्यकता है. भारत में कुछ गोशालायें गाय माता के गोबर से उबटन तैयार भी कर रही हैं.

प्रशिक्षण

कानपुर गोशाला सोसायटी भौती कानपुर उत्तरप्रदेश के द्वारा भारत सरकार के सहयोग से साल भर 7 दिनों का प्रशिक्षण पूरी तरह से निःशुल्क दिया जाता है.

उपयोग

सौदर्य प्रसाधन के साधनों में उबटन का उपयोग भारत में प्राचीन समय से किया जा रहा है. वर्तमान में सौंदर्य बढ़ाने के लिये उबटन का उपयोग भारत के साथ विश्व के बहुत सारे विकसित देशों में किया जा रहा है.

गोमय का मूल्य

गाय माता के गोबर का बहुत अच्छा मूल्य उबटन तैयार करने पर प्राप्त होता है. गोबर से तैयार उबटन भारत में ग्रामीण स्तर पर बहुत अच्छी समृद्धि ला सकता है.

गुणधर्म

गोबर में शरीर के अंदर से गर्मी खीचने की क्षमता मौजूद है. गोबर रोम छिद्रों को खोल देता है. त्वचा को मुलायम बनाये रखने में गोबर का महत्वपूर्ण योगदान है.

सिर्फ गाय माता के गोबर से ही उबटन तैयार किया जाता है. उबटन के व्यापारिक उत्पादन के लिये बडे उद्योगपतियों को आगे आना आवश्यक है. उबटन को पूरे भारत में बेचने के लिए स्वयं सेवी संस्थाएं तथा खादी ग्रामोद्योग पंजीयन करके महानगरों में मेलों का आयोजन करके निःशुल्क स्टाल उपलब्ध करवाते हैं.

आवश्यक सामग्री

100 ग्राम उबटन तैयार करने के लिये बाह्य प्रयोग करने के लिए मुख्य घटक गोमय भस्म 15 ग्राम, शुद्ध गैरिक 15 ग्राम, गोमय तेल, मुलतानी मिटटी 50 ग्राम, नीम पत्र, कपूर काचरी 2 ग्राम, शतावरी चूर्ण 3 ग्राम, बचा 8 ग्राम, हरिद्रा 2 ग्राम, हरडे 5 ग्राम मिलाया जाता है.

विधि

गोमय भस्म को बारीक छलनी से छानकर उसमें गैरिक, शतावरी, बचा, कपूर काचरी, हरिद्रा तथा हरडे आदि चूर्ण को मिलाकर बारीक चलनी से छनी हुई मुलतानी मिट्टी में उपरोक्त प्रमाण में अच्छे से मिलाए. उपरांत पैकिंग करें.

प्रयोग

उबटन का प्रयोग नहाने के पहले करना चाहिये. उबटन का पानी या गाय के दूध में पेस्ट भी बनाकर शरीर में लगायें.

लाभ

उबटन से मुख एवं शरीर की कांति बढ़ती है. उबटन चेहरे के दाग दूर करता है. त्वचा का रंग सुधरने लगता है. त्वचा में से पसीना बहुत अच्छी तरह से निकलता है. देह में सुगंध बनी रहती है. त्वचा मुलायम रहती है. उबटन देह की झूरियों को रोकता है जिससे जवानी बने रहती है. देह की अंदर की गर्मी भी पूरी तरह से नियंत्रित रहती है. उबटन से चर्म रोग कभी नहीं होता है. उबटन के साइड इफेक्ट नहीं हैं.

कामधेनु अंगराग पाउडर

प्रस्तावना

उपयोग

भारत में अंगराग का उपयोग बहुत प्राचीन समय से किया जा रहा है. भारत के अलावा बहुत सारे देशों में भी अंगराग का उपयोग प्राचीन समय से किया जा रहा है.

भ्रम

दूरदर्शन के द्वारा भारत में मनमोहक विज्ञापन दिखाकर अंगराग के बदले सौंदर्य को बढाने की मंहगी क्रीमों को प्रयोग करने के लिये मजबूर कर दिया है.

चेतावनी

सौंदर्य बढाने वाली मंहगी क्रीमों में कंपनियां हानिकारक रसायनों का उपयोग कर रही हैं. हानिकारक रसायनों के कारण त्वचा के कैंसर बहुत अधिक हो रहे हैं.

प्रचार

वर्तमान में धार्मिक चेनलों संस्कार एवं आस्था पर महान योगीराज तथा संतों के प्रवचनों के कारण ही सौंदर्य प्रसाधन की मंहगी क्रीमों के बदले भारत में अंगराग के उपयोग करने के लिये जागरुकता बढ रही है.

निर्यात

उत्तरी अमेरिका

विश्व के विकसित देशों में भी निवास कर रहे भारतीयों को भी अब अंगराग की आवश्यकता है. अमेरिका में भारतीयों की संख्या बहुत ही अधिक है. अमेरिका में 1973 में गोमय पर काफी अनुसंधान कर अलग से अग्निहोत्र कृ-ि विश्वविद्यालय 1979 से प्रारम्भ कर चमत्कारिक परिणाम के माध्यम से विश्व का ध्यान आकर्-ित किया है.

उत्तरी अमेरिका में कामधेनु अंगराग पावडर की सबसे अधिक मांग है.

ओस्ट्रेलिया

ओस्ट्रेलिया में कामधेनु अंगराग पावडर की मांग लंबे समय से है. ओस्ट्रेलिया भारत से गोवंश ले जाकर गहराई से अनुसंधान कर दूध तथा गोबर के लिए विकसित किया है.

पश्चिम जर्मनी

1974 में पश्चिम जर्मनी ने गहराई से कामधेनु पर वैज्ञानिक अनुसंधान कर विश्व का ध्यान आकर्-ित किया है. गोमय की भस्म पर आश्चर्यजनक वेज्ञानिक परिणाम पश्चिमी जर्मनी ने विश्व के सामने रखे हैं. पश्चिम जर्मनी ने औ-धियों के लिए भस्म का उपयोग किया है. कामधेनु अंगराग पावडर की मांग लंबे समय से बनी है.

कनाडा

कनाडा में गोमय की जागृति बहुत ही जबरदस्त है. कनाडा में वर्तमान में भारतीयों की संख्या बहुत ही अधिक है. कनाडा में कामधेनु अंगराग पावडर की मांग लंबे समय से है.

ब्राजील

बाजील में भारत से 6 गुना अधिक भूमि है. भारत की जनसंख्या ब्राजील से 6 गुना है. कामधेनु अंगराग पावडर की आवश्यकता ब्राजील में है. ब्राजील में भारत से गोवंश ले जाकर आज 1 करोड़ से अधिक गोवंश विकसित कर चुके हैं.

जापान

जापान आसाराम जी से 9000 रु. टन के मूल्य पर गोबर आयात कर रहा है. जापान में वर्तमान में कामधेनु अंगराग पावडर तैयार नहीं किया जा रहा है.

समय की मांग के अनुसार गाय माता के पवित्र गोमय से अंगराग तैयार करने के लिये भारत में गिनी चुनी गोशालायें कार्य कर रही हैं.

गोपालन को बढ़ावा

विश्व की विकसित देशों में रह रहे भारतीयों की अंगराग की बहुत अधिक मांग को ध्यान में रखकर अंगराग के निर्माताओं को निर्यात पर ध्यान केंद्रित करने की आवश्यकता है.

गोमय का मूल्य

भारत के गांव गांव में अंगराग के व्यापारिक स्तर पर निर्माण करने पर गाय माता के गोमय का मूल्य गोपालकों को बहुत अच्छा प्राप्त होगा जिससे गोपालन को जबरदस्त बढावा मिलेगा.

स्वरोजगार

ग्रामीण रोजगार को बढावा बहुत लम्बे समय तक मिलेगा. 15 रुपये में 50 ग्राम बिक्री की जा रही है.

प्रथम स्तर

प्रथम स्तर यानी प्रारम्भिक स्तर पर अपने मित्रों एवं रिश्तेदारों को सौंदर्य बढ़ाने के लिए नमूने के रुप में बहुत ही कम मूल्य पर प्रयोग करने के लिए देने के लिए युवा को आगे आने की आवश्यकता है.

लगातार अनुसंधान से यह स्प-ट हे कि गोमय के अंदर बहुत ही उच्च कोटि के करोड़ो रसायन मौजूद हैं. ओजोन के छेद के कारण सूर्य की पराबैंगनी तरंगे त्वचा पर सीधा आक्रमण कर रही हैं. गोमय पराबैंगनी तरंगों को पूरी तरह से सोखकर त्वचा की रक्षा करता है.

सूर्य के समस्त गुण गोमय में मौजूद हैं. अंगराग के प्रयोग करने पर सूर्य के समान ही त्वचा चमकती है.

गोमय त्वचा की गर्मी को खीचकर मुलायम बनाता है. गोमय त्वचा के रोम छिद्रों को पूरी तरह से खोलता है.

कम से कम 1 साल तक आयुर्वेद के आचार्य से बहुत ही उच्च स्तर का प्रशिक्षण प्राप्त कर कम से कम 100 किलो तथा अधिकतम 1000 किलो कामधेनु अंगराग पावडर बनाने का प्रयत्न करने पर भारत में 35 करोड़ युवाओं को स्वरोजगार मिलेगा.

द्वितीय स्तर

छोटी गोशालाओं में गोवंश को पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए पंचगव्य महो-धियों के निर्माण का संपूर्ण प्रशिक्षण आयुर्वेद संस्था में कम से कम 1 साल तक प्राप्त कर दैनिक जीवन में उपयोगी पंचगव्य महो-धियों के साथ में कामधेनु अंगराग पावडर का निर्माण प्रतिमाह 1000 किलो कम से कम एवं अधिकतम 10,000 किलो तक बनाया जाता है.

बिक्री

प्रारम्भ में बिना विज्ञापन के ही बहुत ही कम मूल्य पर गायत्री ज्ञान मंदिर, गायत्री प्रज्ञापीठ, गायत्री शक्तिपीठ, सौंदर्य प्रसाधन केंद्रों में सौंदर्य बढ़ाने के लिए देने पर गुणवत्ता के कारण अपने आप मांग बढ़ेगी. कामधेनु अंगराग पावडर के सौंदर्यवर्धक गुणों के पत्रक तैयार कर वितरित करने पर मांग उत्पन्न होगी. आवश्यकता पढ़ने पर आक-र्क विज्ञापन देकर भी बहुत अच्छा कार्य किया जा सकता है.

तृतीय स्तर

मध्यम गोशालाओं में अभियान के रुप में गोवंश के स्वावलंबन करने के लिए कामधेनु अंगराग पावडर का निर्माण पंचगव्य महो-धियों के साथ में किया जा सकता है. पंचगव्य महो-धियों में दैनिक आवश्यकताओं की सभी दवायें उपलब्ध करवानी चाहिए.

कम से कम 10,000 किलो तथा अधिकतम 50,000 किलो प्रतिमाह किया जा सकता है.

निर्यात

निर्यात करने के लिए महानगरों में कोलकत्ता की इमामी कंपनी जो गोमय का उपयोग अपने उत्पादों में कर रही है के साथ में तालमेल कर परिणाम प्राप्त किया जा सकता है. महानगरों में सौंदर्य प्रसाधन के निर्यातक से संपर्क कर प्रयत्न करें.

चतुर्थ स्तर

बड़ी गोशालाओं में गोवंश के स्वावलंबन के लिए पंचगव्य महो-धियों के निर्माण करने के साथ में कामधेनु अंगराग पावडर का निर्माण कम से कम 1 लाख किलो तक करना है.

पंचम स्तर

महानगरों में कामधेनु अंगराग पावडर 10 लाख किलो

आवश्यक सामग्री

मुलतानी मिटटी 1000 ग्राम, गेरु मिटटी 200 ग्राम, गीला गोबर 1250 ग्राम, गोमय से बनाया तेल 250 ग्राम, नीम के पत्ते, कपूर 40 ग्राम, अजवायन का सत 10 ग्राम

निर्माण

अंगराग बनाने की विधि गोमय से साबुन बनाने के समान ही है. अंगराग के निर्माण करने के पूर्व साबुन उद्योग या ग्रामीण कामधेनु विश्वविद्यालय में प्रशिक्षण लेना अनिवार्य है.

आवश्यक सामग्री को सुखाकर पीसकर बहुत सुंदर ढंग से गुणों सहित जानकारी के साथ पैक कर लिया जाता है.

प्रयोग विधि

पानी से चेहरे, शरीर, सिर पर प्रयोग किया जाता है.

पैकिंग

10 ग्राम से 25 ग्राम, 50 ग्राम, 100 ग्राम तक की पैकिंग तैयार करें.

गुणधर्म

अंगराग के गोमय साबुन की तरह गुणधर्म हैं.

कामधेनु सौंदर्यवर्धक लेप

प्रस्तावना

वर्तमान में विश्व में युवाओं में मुंह पर कील, मुहांसे, काले दाग, झाईयां, आंखों के नीचे धब्बे, त्वचा का कालापन, त्वचा खुरदुरी और कठोर होने की गंभीर समस्या बहुत ही अधिक है.

100 प्रतिशत परिणाम

विश्व में लंबे समय से किये गये अनुसंधानों से यह स्प-ट है कि गोमय से तैयार कामधेनु सौंदर्यवर्धक लेप 100 प्रतिशत परिणाम दे रहे हैं.

गोपालन को बढ़ावा

गाय माता का गोबर लेप में प्रयोग करने पर गोबर का मूल्य अच्छा मिलने पर गोपालन को बढ़ावा मिलेगा.

100 प्रतिशत गोवंश रक्षा

गोमय का उपयोग दैनिक जीवन में बढ़ने के कारण गोमय की मांग बढ़ेगी. मांग बढ़ने के कारण ही गोमय का मूल्य बढ़ेगा. 100 प्रतिशत गोरक्षा आर्थिक आधार पर सौंदर्यवर्धक लेप से संभव है.

1 लाख किलो

एक गोवंश अपने पूरे जीवन में 1 लाख किलो गोमय देता है. विश्व में गोमय की जागृति बढ़ने के कारण गोमय के निर्यात की बहुत अच्छी सम्भावनाएं हैं.

निर्यात

आफ्रीका

वर्तमान में आफ्रीका में कामधेनु सौंदर्यवर्धक लेप की मांग है. भारत में महानगरों में निर्यातकों के माध्यम से लेप की बहुत बड़ी मात्रा आफ्रीका पहुंच सकती है. आफ्रीका में गोमय की जागृति बहुत अच्छी है.

आफ्रीका 2000 साल पहले भारत से ले जाकर लंबे सींग वाली अंकोल तथा वाटसी भारतीय प्रजाति का विकास आदिवासियों के माध्यम से कर रहा है.

उत्तरी अमेरिका

वर्तमान में कामधेनु सौंदर्यवर्धक लेप की सबसे अधिक मांग अमेरिका में है. अमेरिका में बसे भारतीय काफी जागरुक हैं.

उत्तरी अमेरिका भारत से चोरी से सर्कस, चिड़ियाघर के माध्यम से बहुत बढ़िया गोवंश ले गये हैं. वर्तमान में मांस के लिए 7000 साल पुरानी लंबे सींग वाली भारतीय प्रजाति का विकास किया है.

उत्तरी अमेरिका ने विश्वविद्यालयों में लगातार अनुसंधान कर गोमय के वैज्ञानिक महत्व को बहुत अच्छी तरह से समझने का प्रयत्न किया है.

जापान

जापान सौंदर्यवर्धक लेप वर्तमान में नहीं बना रहा है. जापान में लेप की मांग लंबे समय से है. लगभग 70 सालों से गोमय के वैज्ञानिक महत्व को जापान ने बहुत ही अच्छी तरह से समझने का प्रयत्न किया है.

जापान वर्तमान में संत श्री आसाराम जी बापू से भारत में राजस्थान में आसाराम गोशाला नेवई से 9000 रु. टन सीधा गोमय खरीद रहा है.

मांग

गोमय से वर्तमान में जैविक खाद, नवग्रह धूप, धूप चूरा, अगरबत्ती, अग्निहोत्र कंडे, ईंधन के उपले, हवन समिधा, बर्तन मांजने की राख, आंखों की दवा, नहाने का साबुन, एक्जीमा साबुन, मलहम, केशवर्धक क्रीम, सौंदर्यवर्धक लोशन, दर्दनाशक तेल, अंगराग पावडर, कागज, टाइल्स, कवेलू, प्लास्टर, डिस्टेम्पर, बिजली उत्पादन, गोबर गैस, सीएनजी तैयार की जा रही है.

प्रथम स्तर

रोजगार

गांव गांव में यह लेप व्यवसायिक स्तर पर युवाओं के द्वारा तैयार करने पर 25 करोड़ शिक्षित लोगों को स्वरोजगार मिल जायेगा.

सुंदर शिक्षित युवतियों को लेप की बिक्री नगर, महानगर, कस्बों तथा हर घर में करने के लिये नियुक्त किया जा सकता है.

लेप के लिये आवश्यक जड़ीबूटियां व्यवसायिक स्तर पर उत्पन्न करने पर युवा शिक्षित किसानों को भी प्रोत्साहन मिलेगा.

प्रथम स्तर पर सौंदर्यवर्धक लेप तैयार करने के लिए सौंदर्यवर्धक कंपनी में सबसे पहले प्रशिक्षण अवश्य ही प्राप्त करें.

व्यक्तिगत स्तर पर प्रारम्भ में बिना विज्ञापनों के अपने आसपास के मित्रों, परिचितों, सगे एवं संबंधियों, दूर के रिश्तेदारों, समान विचारधारा के लोगों को नमूने के तौर पर बहुत ही कम मूल्य पर देने के लिए प्रतिमाह कम से कम 10 किलो से लेकर अधिकतम 100 किलो तक तेयार करें.

द्वितीय स्तर

छोटी गोशालाओं में गोवंश को पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए युवा सौंदर्यवर्धक लेप बनाने वाली कोलकत्ता की इमामी जैसी कंपनी में संपूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त कर लें. गो ब्रांड प्रोडक्ट के माध्यम से कम मूल्य पर बिक्री करने के लिए प्रतिमाह कम से कम 100 किलो एवं अधिकतम 1000 किलो तक तैयार करें.

तृतीय स्तर

मध्यम गोशालाओं में विज्ञापनों के साथ में प्रतिमाह 1000 से 10,000 किलो तक तैयार करें.

चतुर्थ स्तर

बड़ी गोशालाओं में प्रतिमाह 10,000 से 50,000 किलो तक तैयार करें.

पंचम स्तर

वर्तमान में कोलकत्ता में इमामी कंपनी गोमय का उपयोग सौंदर्यवर्धक लेप में कर रही है. निर्यातकों को देने के लिए महानगरों में सौंदर्यवर्धक लेप 50,000 से 1 लाख किलो तक प्रतिमाह तैयार करें.

सौंदर्यवर्धक लेप के लाभ

2 सप्ताह

सौंदर्यवर्धक लेप मुंह पर उत्पन्न कील, मुहांसे, काले दाग, झांईयों को पूरी तरह से 2 सप्ताह में दूर करता है. त्वचा के रोगों को दूर को दूर करता है.

त्वचा का रंग पूरी तरह से निखारता है. चेहरे की त्वचा चिकनी, मुलायम, चमकदार बनती है. चेहरे पर लालिमा बढ़ जाती है.

चेहरे की झुरियां समाप्त करता है. आंखों में चमक बढ़ जाती है. चेहरे का रंग गारंटी के साथ गोरा हो जाता है. चेहरे का कालापन पूरी तरह से दूर हो जाता है.

आंखों के नीचे के गहरे काले धब्बों को दूर करता है. खून की गरमी को पूरी तरह से दूर करता है.

हम आपको बहुत ही कम मूल्य पर आसानी से तैयार होने वाले सौंदर्यवर्धक लेप तैयार करने की संपूर्ण जानकारी दे रहे हैं. बाजार में आप बिना विज्ञापन के भी अच्छी पैकिंग कर बहुत ही अच्छे मूल्य पर आराम से बेच सकते हैं.

आवश्यक सामग्री

हल्दी 30 मिलीग्राम, आम्बाहल्दी 30 मिलीग्राम, दारुहल्दी 30 मिलीग्राम, रक्तचंदन 30 मिलीग्राम, वायविडंग 10 मिलीग्राम, मंजिस्ठा 10 मिलीग्राम, खरेटी 10 मिलीग्राम, खदिर 10 मिलीग्राम, जटामासी 10 मिलीग्राम, गेरिक 100 मिलीग्राम, बच 10 मिलीग्राम, नीमछाल 100 मिलीग्राम, बावची 20 मिलीग्राम, गाय माता का गीला गोबर 250 मिलीग्राम.

विधि

सभी सामग्री को अच्छी तरह से पीसकर मिला लें. धूप में अच्छी तरह से सामग्री को सूखा लें. सूखने पर चूर्ण तैयार कर लें. चूर्ण को अच्छी पैकिंग में बाजार में बेचें.

प्रयोगविधि

एक चम्मच चूर्ण को गाय माता के दूध में मिलाकर गाढ़ा लेप तैयार कर चेहरे व गले पर सुबह या रात को सोने के पहले अवश्य ही लगावें. लेप को आधा घंटा लगा रहने दें जब लेप अच्छी तरह से सूख जाये तब पानी से मसलते हुए धो लेवें.

पैकिंग

10 ग्राम के पाउच से लेकर 25 ग्राम, 50 ग्राम, 100 ग्राम तक की पैकिंग करें.

क्रूरता

पीपुल फोर इथीकल ट्रीटमेंट फोर एनिमल, अमेरिका तथा ब्यूटी विदाउट क्रूएलटी लंदन के अनुसार विश्व में सौंदर्यवर्धक क्रीमों को तैयार करने के लिये जीवहत्या की जाती है.

चेतावनी

वर्तमान में विश्व में हुए अनुसंधानों से यह साबित हुआ है कि सौंदर्यवर्धक क्रीमों के बहुत अधिक उपयोग करने के कारण त्वचा के कैंसर बहुत तेजी से हो रहे हैं.

भ्रम

युवा दूरदर्शन तथा चेनलों में विज्ञापन देखकर अपने चेहरे पर से दाग हटाने के लिये किसी भी मूल्य पर क्रीम खरीदने के लिये तैयार है. वर्तमान में बहुत सारी सौदर्यवर्धक क्रीमें तैयार की जा रही हैं. सौंदर्यवर्धक क्रीम विज्ञापनों के कारण बहुत अधिक मंहगी बिक रही हैं. सौंदर्यवर्धक क्रीम की युवाओं में बहुत अधिक मांग है.

मांग

वर्तमान में इस लेप की मांग सौंदर्य प्रसाधन के केंद्रों यानी ब्यूटी पार्लरों में बहुत ही अधिक है. वर्तमान समय में ब्यूटी पार्लर में प्रयुक्त हर्बल लेप बहुत ही

मंहगा है इसलिये कम मूल्य में इस लेप को देने से लगातार आर्डर मिल जायेंगे.

आप प्रारम्भ में अपने लेप का प्रचार करने के लिये नमूने के रुप में निःशुल्क प्रयोग करने के लिये अखिल विश्व गायत्री परिवार के द्वारा तैयार किये गये महिलामंडलों, प्रज्ञापीठों, ज्ञान मंदिरों, शक्तिपीठों में अवश्य ही दें. अखिल विश्व गायत्री परिवार का संगठन बहुत ही विशाल है इसलिये लेप जनजन तक बहुत ही आराम से पहुंच जायेगा. ब्यूटी पार्लर में एक बार प्रयोग करने के बाद अपने आप मांग उत्पन्न हो जायेगी. मेडिकल स्टोर एवं आयुर्वेद की दुकानों में भी इस लेप की बिक्री बहुत ही आराम से हो सकती है. किराने की दुकानों में भी इस लेप की बिक्री हो सकती है. लेप को मेलों, प्रदर्शनों, सम्मेलनों, साप्ताहिक बाजारों में स्टोल लगाकर गुण और लाभ बताने की आवश्यकता है.

कामधेनु केशवर्धक पावडर

अंतिम समाधान

वर्तमान में विश्व में बालों का समय के पूर्व सफेद होना गंभीर समस्या है. आधुनिक विज्ञान के अनुसार गोवंश के गोबर तथा गोमूत्र पर लगातार अनुसंधान के पश्चात यह बात स्प-ट है कि कामधेनु केशवर्धक पावडर ही अंतिम समाधान है.

विशेषतायें

केशवर्धक पावडर तेजी से गिरते बालों को रोकता है नये बालों को उगाता है जिसके कारण गंजेपन के उपचार में सहायक है. बालों का पतलापन एवं रुखापन दूर करता है. बालों को समय से पहले सफेद होने से रोकने एवं काला बनाने में सहायक है.

समस्या

भारत में भी बालों का समय के पूर्व सफेद होना बहुत बड़ी समस्या है. हर मर्द, महिला, युवति तथा युवा अपने बाल काले बनाये रखने के लिये मानसिक स्तर पर बैचेन हैं.

विज्ञापन

वर्तमान में मानव की इस कमजोरी का लाभ लेने के लिये कई विदेशी कंपनियां दूरदर्शन तथा चेनलों में करोड़ो के मनमोहक विज्ञापन दिखाकर अपनी ओर सभी को खींच रही हैं.

मंहगे दाम

बालों को काला बनाये रखने के लिये सुगंधित तेल, बढ़िया पैकिंग में क्रीम, साबुन, शेम्पू बहुत ही मंहगे दामों में बेच रही हैं.

बैचेनी

मर्दो में गंजेपन की परेशानी बहुत अधिक बढ़ती ही जा रही है. मर्द गंजेपन से छुटकारा पाने के लिये मानसिक स्तर पर बहुत अधिक बैचेन हैं.

परेशानी

महिलायें अपने बाल घने, लम्बे, चमकदार तथा मुलायम रखना चाहती हैं. महिलायें भी वर्तमान में अपने बाल गिरने के कारण बहुत अधिक परेशान हैं.

केशवर्धक क्रीम, तेल, नहाने का साबुन, शेम्पू का कारोबार वर्तमान में विदेशी कंपनियों का बहुत अधिक हो रहा है.

तेजी से गिरते बालों को रोकने के लिये तथा असमय बालों का सफेद होने से रोकने के लिये हमारे द्वारा आपको कम लागत में बहुत ही आसानी से केशवर्धक पावडर बनाने के लिये जानकारी दी जा रही है. आप यदि चाहें तो क्रीम, साबुन एवं अन्य वस्तुएं भी तैयार कर सकते हैं.

आवश्यक सामग्री

गोमूत्र एवं गोबर का मिश्रण 100 ग्राम, नीम की छाल 10 ग्राम, हरड़ 10 ग्राम, बहेड़ा 10 ग्राम, आंवला 10 ग्राम, अरीठा 20 ग्राम, शिकाकाई 15 ग्राम, लोध्र 5 ग्राम, भारंगी 5 ग्राम, मधुयस्टी 5 ग्राम, छालमी चूर्ण 10 ग्राम.

विधि

सभी को अच्छी तरह से पीसकर मिला लें. धूप में पावडर को अच्छी तरह से सूखाकर पैक करें.

प्रयोग विधि

10 ग्राम पावडर आधा कप पानी में घोल लेवें व इस घोल को 10 मिनट तक बालों में लगा रहने दें. फिर साफ पानी से बालों को धो लेवें.

पैकिंग

10 ग्राम के छोटे पाउच से लेकर 25 ग्राम, 50 ग्राम, 100 ग्राम की पैकिंग करें.

प्रथम स्तर

व्यक्तिगत स्तर पर कामधेनु केशवर्धक पावडर तैयार करने के लिए आयुर्वेद के आचार्य से मार्गदर्शन ग्रहण कर 1 साल तक कठोर प्रशिक्षण गोशाला में प्राप्त करें.

प्रारम्भिक रुप से नमूने के रुप में आर्डर बुक करने के लिए केशवर्धक पावडर बहुत ही कम मूल्य पर अपने आसपास के रिश्तेदारों, मित्रों, सहयोगियों आदि को देने के लिए कम से कम 100 किलो प्रतिमाह तथा अधिकतम 500 किलो बनाया जा सकता है.

1 लाख किलो

प्रत्येक गोवंश अपने जीवन काल में 1 लाख किलो गोबर तथा हजारों लीटर गोमूत्र देता है.

गोवंश रक्षा

गोबर तथा गोमूत्र का उपयोग अधिकतम करने पर 100 प्रतिशत गोवंश रक्षा आर्थिक आधार पर करना संभव है. भारत के हर गांव में व्यवसायिक स्तर पर केशवर्धक पावडर तैयार करने के लिये संगठन के माध्यम से प्रयास करने की आवश्यकता है.

25 करोड़

युवाओं को भारत के प्रत्येक गांव में केशवर्धक पावडर तैयार करने पर लगभग 25 करोड़ युवाओं को स्वरोजगार मिल सकेगा.

द्वितीय स्तर

बहुत ही छोटी गोशालाओं में गोवंश को पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए युवाओं को कम से कम 1 साल का संपूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त कर केशवर्धक पावडर गो ब्रांड प्रोडक्ट के माध्यम से बिक्री करने के लिए नमूने के रुप में कम से कम 100 किलो से अधिकतम 1000 किलो प्रतिमाह तक बनाया जा सकता है.

तृतीय स्तर

मध्यम गोशालाओं में गोवंश को पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए हर तरह का प्रशिक्षण प्राप्त कर चेनल में विज्ञापन तथा मार्केटिंग नेटवर्क के सहयोग से बिक्री करने के लिए कम से कम 1000 किलो प्रतिमाह से अधिकतम 10,000 किलो तक तैयार किया जा सकता है.

चतुर्थ स्तर

बड़ी गोशालाओं में गोवंश को पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए हर तरह का संपूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त कर प्रतिमाह कम से कम 10,000 किलो तथा अधिकतम 1 लाख किलो तक केशवर्धक पावडर तैयार कर गो ब्रांड प्रोडक्ट, गायत्री शक्तिपीठों, प्रज्ञापीठों, ज्ञानमंदिरों, मोल, दवाओं के वितरकों, ब्यूटी पार्लरों, नाईयों, गोकथाओं, प्रवचनों, योग शिविरों, स्वास्थय शिविरों के माध्यम से बिक्री करना संभव है.

पंचम स्तर

महानगरों में गोशालाओं में से गोवंश के गोबर तथा गोमूत्र को बहुत अच्छे मूल्य पर खरीद कर विश्व में बहुत बड़ी मात्रा में उच्च गुणवत्ता वाला कामधेनु केशवर्धक पावडर का निर्यात करने के लिए कम से कम 1 लाख किलो का निर्माण करना आवश्यक है.

गोमय से मच्छर भगाने की कोइल

प्रस्तावना

1900 के बाद में मानव की जनसंख्या में बहुत ही तेजी के साथ वृध्दि हुई है. 1900 के पूर्व मानव की कुल जनसंख्या विश्व में मात्र 100 करोड़ थी. 100 सालों में विश्व की जनसंख्या 100 करोड़ से 700 करोड़ हो गयी हे. जनसंख्या में बहुत तेजी से हुई वृध्दि के कारण गोबर के बदले रासायनिक खाद का प्रयोग अधिक फसल उत्पादन करने के लिए किया गया था. भारत में खेती में लगातार लम्बे समय से रासायनिक खाद तथा कीटनाशक का बहुत अधिक प्रयोग करने के कारण तथा महानगरों में हर दिन बहुत बड़ी मात्रा में गंदगी बढने के कारण मच्छर की समस्या बहुत ही गंभीर है. रासायनिक खादों एवं जहरीले कीटनाशकों का प्रयोग जब तक होगा तब तक मच्छर की समस्या का समाधान करना संभव नहीं है.

रासायनिक खाद एवं जहरीले कीटनाशकों के बदले में जैविक खादों के प्रयोग करने के लिए विश्व में कुछ समय से जागृति जरुर आयी है लेकिन जैविक खादों का प्रयोग बहुत ही सीमित है. विश्व में वर्तमान में रासायनिक खादों के लगातार प्रयोग करने के कारण ही जमीनों का बहुत बड़ा भाग पूरी तरह से बंजर हो गया है.

जैविक खादों में अग्निहोत्र कृ-ि को विश्व में मान्यता मिल गयी है. भारत के श्री वसंतराव जी परांजपे 1973 में पहली बार अग्निहोत्र का प्रचार करने के लिए अमेरिका आये थे तथा अमेरिका अग्निहोत्र विश्वविद्यालय प्रारम्भ कर गहराई से अनुसंधान कर अग्निहोत्र को आधुनिक विज्ञान की सभी कसौटियों पर अच्छी तरह से समझकर पूरी तरह से अपना चुका है जिसके कारण अग्निहोत्र कृ-ि करने के लिए अमेरिका 1979 से कार्य कर रहा हे.

विश्व में मच्छर से परेशान मानव ने कृत्रिम रसायनों से तैयार साधनों का उपयोग कर राहत की सांस लेने का दावा किया गया है लेकिन मच्छर की समस्या विश्व में पहले से बहुत अधिक बढ रही है.

1955 में पहली बार ओजोन परत के छेद की ओर मानव का ध्यान गया था. उस समय मात्र फुटबाल के आकार जितना था. नासा के द्वारा उपग्रह से ओजोन परत के छेद के आकार पर सतत नजर रखी गयी थी. ओजोन परत में छेद जीवहत्या के कारण उत्पन्न 1040 मेगावाट उर्जा के कारण 280 लाख वर्ग किलोमीटर तक बढ़ रहा है. विश्व में ओजोन परत में उत्पन्न छेद के तेजी से बढ़ने के कारण मच्छर भगाने की कोइल कृत्रिम तरीके से उपयोग करने के बजाय गोमय से तैयार कोइल के उपयोग पर पूरा जोर दिया जा रहा है.

भारत में मच्छरों के कारण महानगरों के साथ में गांवों में मानव के द्वारा चैन से जीना अब मुश्किल हो गया है.

वर्तमान में मानव के द्वारा उपयोग में लाये जा रहे मच्छर भगाने के साधन बहुत मंहगे तथा स्वास्थय के लिये जहरीले होने के कारण ही मच्छर भगाने की कोइल से उत्पन्न धुएं के कारण मासूम बच्चों की मौतें हुई हैं.

मानव मच्छर भगाने के लिए अब प्रकृति की ओर मुड गया है. गोबर के कंडे गांवों में मच्छर भगाने के लिए लंबे समय से प्रयोग किये जाते हैं. महानगर में गोबर के कंडे मिलना संभव नहीं है. गोबर के कंडे श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला के द्वारा 20 रु. में 40 महानगर में उपलब्ध करवाये गये हैं.

मच्छर भगाने के लिये मानव ने बहुत सारे प्रयास लगातार लम्बे समय तक किये लेकिन सफलता नहीं मिलने के कारण ही भारत में गोमय के रसायनों का गहन अध्ययन करने पर गाय माता के गोबर से ही मच्छर भगाने में सफलता मिली.

गाय माता के गोबर का सही उपयोग मच्छर भगाने के लिये करने से ग्रामीण स्तर पर रोजगार के बहुत अच्छे अवसर भी भारत में तैयार हो गये हैं.

वर्तमान में भारत में गोमय के प्रति बहुत ही कम जागरुकता रहने के कारण ही लोगों का आक-र्ण गोमय की तरफ नहीं है. कामधेनु विश्वविद्यालय मात्र गुजरात तथा छतीसगढ़ राज्य में है.

शिक्षित बेरोजगार उर्जावान संस्कारित युवाओं को गाय माता के गोमय से मच्छर भगाने वाली कोइलें तैयार करने के लिये श्री पुरुसोत्तम जी तोसनीवाल, कानपुर गोशाला सोसायटी, गोशाला भवन, 58/112, जनरलगंज, कानपुर उत्तरप्रदेश या छतीसगढ में दुर्ग में श्री अचलदास पारख जी, कामधेनु भवन शनिचरी भवन दुर्ग 491001 में संपूर्ण प्रशिक्षण ग्रहण करना आवश्यक है.

वर्तमान समय में दोनों जगह पर युवाओं को 7 दिनों का प्रशिक्षण गोमय से मच्छर भगाने की कोइल तैयार करने का सरकार के सहयोग से पूरी तरह से निःशुल्क दिया जा रहा है. प्रशिक्षण के समय में कोइल बनाने के लिए आवश्यक मसाले के बारे में बताया जाता है. मशीन से कोइल बनाने का प्रशिक्षण भी अनुभवी व्यक्ति के द्वारा दिया जाता है. प्रशिक्षण ग्रहण करने के बाद में युवा बैंक से ऋण प्राप्त कर कोइल बनाने की मशीन खरीद कर स्वयं कोइल बना सकता है.

गोमय से मच्छर भगाने की कोइल का निर्माण भी बहुत बडे स्तर पर भारत में उत्तरप्रदेश में कानपुर गोशाला सोसायटी एवं दुर्ग में श्री अचलदासजी के द्वारा कामधेनु भवन में किया जा रहा है. गोमय से मच्छर भगाने की कोइल की मांग पूरे विश्व में है.

विधि

मच्छर भगाने की कोइल तैयार करने की विधि धूप के समान ही विधि है. ग्रामीण कामधेनु विश्वविद्यालय तथा गोशालाओं में विधिवत संपूर्ण प्रशिक्षण लेकर ही निर्माण करना आवश्यक है.

प्रयोग

वर्तमान में उपयोग में लायी जा रही खतरनाक कोइलों के जगह पर इन प्राकृतिक कोइलों को प्रयोग करनी है.

लाभ

गाय माता के गोबर की प्राकृतिक तीव्र गंध के कारण ही मच्छर भाग जाते हैं. कानपुर गोशाला सोसायटी के द्वारा वर्तमान में 16 रुपये में बिक्री की जा रही है.

गोमय से दंतमंजन

प्रस्तावना

भारत में गाय माता के गोबर से दंतमंजन तैयार करने की प्राचीन परम्परा वैदिक काल से ही रही है.

वैदिक काल

वेदों के अनुसार भारत में सत्युग में हर व्यक्ति गोमय से बने सात्विक दंतमंजन का ही उपयोग करता था.

दस हजार करोड़ गोवंश

नारद संहिता के अनुसार त्रेता युग में भगवान श्री राम ने ब्राहमणों को गोमय से दंतमंजन तैयार करने के लिए सोने के मढ़े हुए सींगो वाले, सोने के आभू-णों से सुसज्जित तथा सुंदर वस्त्रों से अलंकृत दूध दोहने के पात्रों के साथ में दस हजार करोड़ गोवंश का दान दिया था.

80,000 जड़ीबूटियां

भगवान श्री राम के समय में सम्पन्नता चरम सीमा पर थी. सूर्यवंशी भगवान श्री राम ने अपने राज्य में गोमय से तैयार दंतमंजन में उपयोग करने के लिए जैविक खेती कर 80,000 प्रकार की दिव्य जड़ीबूटियां विशे-ा रुप से उत्पन्न की थी.

72 करोड़ गोवंश

गर्गसंहिता के अनुसार द्वापर में व्रज में 72 करोड़ गोवंश थे. द्वापर में गोमय से तैयार दिव्य तथा अलौकिक दंतमंजन का ही उपयोग करते थे.

दंतमंजन से गोरक्षा

कलियुग में गोमय से दंतमंजन तैयार करने के कारण 100 प्रतिशत गोरक्षा करना संभव है. भारत में गोरक्षा का प्रश्न बहुत ही अधिक गंभीर है. गोवंश गोमय बारह माह देता है जबकि गाय दूध सिर्फ कुछ समय ही देती है.

गोपालक के द्वारा गोवंश की अच्छी देखभाल करने पर 25 सालों तक जीवन जीता है. भारत में आज गोवंश को निरपयोगी बताकर 14 साल के बाद में कई राज्यों में कानून के नाम पर कटने के लिए कतलखानों में भेजा जाता है.

गोमय वस्ते लक्ष्मी

एक गोवंश दिन भर में 12 किलो गोमय देता है तो जीवन भर में 1 लाख किलो गोबर देता है. गोमय में आठ प्रकार की लक्ष्मी आठ ऐश्वर्य के साथ में निवास करती है. सवा मन सोना उसके पेट में माना गया है.

गुणधर्म

लगातार वैज्ञानिक अनुसंधानों ने विश्व में यह साबित कर दिया है कि गोबर में मौजद करोड़ों रसायनों में कीटाणुनाशक के प्राकृतिक गुण के कारण ही दांतों का कीडा लगना, दांतों में पानी लगना, दांतों में गरम वस्तु लगना, मसूढे फूलना, मसूढे दर्द करना, मुंह व जुबान के छाले, मुंह में स्वाद के बिगड जाने पर, आवाज बैठ जाने पर, मसूढों से पीप आने पर, पायरिया, मुंह में से दुर्गंध आने पर, टांसिल रोग होने पर, गले की खराश, कफ, खांसी को दूर करने के लिये गाय माता के गोबर से तैयार मंजन बहुत असरकारी है.

गोमय का मूल्य

गोमय से दंतमंजन बनाने पर भारत में गोमय का मूल्य कम से कम 5 रु. किलो बहुत ही आराम से गोपालक को मिलेगा.

निर्यात

मोरिशस

मोरिशस विश्व में भारतीय संस्कृति से बहुत अधिक निकट है. गोमय से तैयार दंतमंजन का उपयोग कर रहा है.

फ्रांस

फ्रांस गोमय से तैयार दंतमंजन के लिए काफी जागरुक है.

क्यूबा

क्यूबा विश्व में 100 प्रतिशत जैविक देश है तथा गोमय के उपयोग करने के लिए बहुत ही अधिक जागरुक है. गोमय से तैयार दंतमंजन से परिचित है.

इजिप्ट

इजिप्ट के पाशा के द्वारा मैसूर की प्रसिद्ध अमृतमहाल भारतीय गोवंश को बहुत ही अच्छी तरह से संभाल कर रखा गया है. इजिप्ट यानी मिश्र गोमय से तैयार दंतमंजन से परिचित है.

इजराइल

भारत से 500 गीर बछियाएं 1992 में इजराइल गयी हैं. वहां पर बहुत अच्छी तरह से विकास किया गया है. इजराइल गोमय से तैयार दंतमंजन से बहुत ही अच्छी तरह से परिचित है.

कोरिया

वर्तमान में कोरिया दंतमंजन के लिए विशे-ा रुप से उत्सुक है. दंतमंजन का महत्व कोरिया ने बहुत समय से समझा है.

कनाडा

कनाडा में गोमय से तैयार दंतमंजन पर अनुसंधान किया गया है. मैजिक पावडर के नाम से दंतमंजन को पुकारा जाता है. वर्तमान में दंतमंजन की बहुत अधिक मांग है.

रुस

गोमय से तैयार दंतमंजन के लिए रुस की विशे-ा रुचि है. 1995 में दंतमंजन पर गहन अनुसंधान किये गये हैं.

मलेशिया

मलेशिया गोमय से बने दंतमंजन के लिए बहुत अधिक जागरुक है. मलेशिया में लंबे समय से मंजन की मांग है.

आफ्रीका

गोबर से तैयार दंतमंजन के लिए आफ्रीका बहुत ही अधिक जागरुक है. गोबर से तैयार दंतमंजन की मांग लंबे समय से है.

आफ्रीका भारत से 2000 सालों पूर्व लंबे सींगो वाली प्रजातिया ले जाकर विकसित कर चुका है. लंबे सींगों वाली प्रजातियां वर्तमान में अमेरिका अपने यहां पर मांस तथा अधिक वसा के लिए आयात कर चुका है.

ओस्ट्रेलिया

ओस्ट्रेलिया भारत से गीर, लाल सींधी, साहीवाल जैसी प्रजातियां अपनी आवश्यकताओं के कारण ही आयात कर चुका है. ओस्ट्रेलिया गोबर से तैयार दंतमंजन पर गहन अनुसंधान कर चुका है.

चीन

चीन विश्व में गोबर का उपयोग करने के कारण बहुत ही अधिक जागरुक है. चीन गोबर से तैयार दंतमंजन पर बहुत अधिक अनुसंधान कर चुका है. चीन में गोबर से तैयार दंतमंजन की बहुत ही अधिक मांग है.

जर्मनी

जर्मनी ने गोबर से तैयार दंतमंजन पर 1974 में गहन अनुसंधान किया है. जर्मनी ने गोबर की राख के तत्वों में उपयोगी रसायनों को विश्व के सामने रखा है.

गोबर की राख से बहुत सारी दवाएं तैयार करने के लिए जर्मनी ने विश्व में पहल की है. वर्तमान में

जर्मनी में गोबर से तैयार दंतमंजन की मांग बहुत ही अधिक है.

जापान

जापान के पास गोबर के लिए गाय नहीं है इसलिए जापान भारत से गोबर 9000 रु. टन यानी 9 रु. किलो के मूल्य पर आयात करता है तथा संत आसाराम जी के द्वारा नेवई राजस्थान की आसाराम गोशाला से निर्यात किया जाता है.

जापान ने गोबर से बने दंतमंजन पर बहुत गहराई से अध्ययन किया है. जापान में लंबे समय से गोबर से तैयार दंतमंजन की मांग है. वर्तमान में जापान गोबर का उपयोग कर दंतमंजन तैयार नहीं करता है.

लंदन

लंदन में बसे भारतीय गोमय से तैयार मंजन को पसंद करते हैं. लंदन में गोमय से तैयार मंजन की बहुत ही अधिक मांग है.

ब्राजील

भारत के साथ साथ विदेशों में बसे भारतीयों में भी गोमय से तैयार दंतमंजन की खास मांग है. ब्राजील गोबर की आवश्यकताओं के लिए भारत से गीर, साहीवाल, लाल सींधी, कांकरेज, अंगोल, अंकोल, अंकोल वाटसी जैसी विश्व प्रसिद्ध गोवंश ले जाकर 70 सालों तक लगातार अनुसंधान कर गुजराती, इंडोब्राजील प्रजातियां तैयार कर वर्तमान में 1 करोड़ से अधिक भारतीय गोवंश का संवर्धन कर उनका निर्यात कर रहा है.

उत्तरी अमेरिका

उत्तरी अमेरिका अपनी गोबर की आवश्यकताओं के लिए भारत से चोरी से गीर गोवंश सरकस, चिड़ियाधर के माध्यम से ले जाकर मांस के लिए ब्राहमण नयी प्रजातियां विकसित कर चुका है.

1973

उत्तरी अमेरिका गोबर से तैयार दंतमंजन पर गहन अनुसंधान 1973 से कर चुका है. उत्तरी अमेरिका में गोबर से तैयार दंतमंजन की बहुत ही अधिक मांग है.

जैसे जैसे गोमय का उपयोग मानव उपयोगी वस्तुओं के निर्माण में किया जायेगा वैसे वेसे गोमय का मूल्य बढ़ेगा.

गोमय का उपयोग

गोमय से वर्तमान में जैविक खाद, नवग्रह धूप, धूप चूरा, अगरबत्ती, अग्निहोत्र कंडे, ईंधन के उपले, हवन समिधा, बर्तन मांजने की राख, पंचगव्य तथा महापंचगव्य घी, आंखों की दवा, नहाने का साबुन, एक्जीमा साबुन, मलहम, केशवर्धक क्रीम, सौंदर्यवर्धक लोशन, दर्दनाशक तेल, अंगराग पावडर, कागज, टाइल्स, कवेलू, प्लास्टर, डिस्टेम्पर, बिजली उत्पादन, गोबर गैस, सीएनजी तैयार की जा रही है.

दंतमंजन से स्वरोजगार

भारत में बेरोजगारी का प्रश्न बहुत ही गंभीर है. गोमय से गांवों में दंतंमंजन तैयार करने पर भारत में लगभग 30 करोड़ लोगों को सम्मानपूर्वक स्वरोजगार मिलेगा.

लागत कम

दंतमंजन की लागत बहुत ही कम है. 20 पैसे में एक सीसी मंजन लगभग 50 ग्राम तैयार हो जाता है जो आराम से भारत में ही 1 सीसी 20 रुपयों से लेकर 80 रु. तक बिक्री होता है.

गो ब्रांड प्रोडक्ट

वर्तमान में डा. प्रवीण तोगड़िया जी के मार्गदर्शन में गो ब्रांड प्रोडक्ट 200 गोशालाओं से दंतमंजन खरीदकर विश्व हिंदु परि-ाद के माध्यम से पूरे भारत में बिक्री कर रहा है.

प्रथम स्तर

स्वरोजगार

युवा 1 साल तक हर तरह से प्रशिक्षण प्राप्त कर अधिक से अधिक 10 किलो तक लाल एवं काला मंजन 1 व्यक्ति 1 दिन में बहुत ही आराम से तैयार कर सकता है.

एक माह में 100 किलो तक मंजन तैयार कर सकता है. कम से कम मूल्य पर नमूने के रुप में पाउच में पैक कर आर्डर बुककर अपने सगे, रिश्तेदारों, मित्रों को प्रारम्भ में देकर बिना किसी विज्ञापन के 1000 रु. सम्मान से कमा सकता है.

कम से कम अपने निवास पर 1 व्यक्ति के द्वारा 1 किलो मंजन प्रारम्भ में तैयार करना संभव है. बनाने के लिये बहुत अधिक जगह भी नहीं चाहिये. शिक्षित युवा बेरोजगार के द्वारा एक बार संपूर्ण प्रशिक्षण लेने पर आसानी से बनाया जा सकता है. भारत में प्रत्येक गांव में गाय माता के गोबर से तैयार दंतमंजन की दैनिक बहुत अधिक मांग है. भारत में गाय माता के गोबर की खपत प्रतिदिन दंतमंजन बहुत बडे स्तर पर व्यापारिक रुप से बनाने से बहुत अधिक हो सकती है.

लाभ

1 किलो मंजन तैयार करने पर अपने परिचितों, रिश्तेदारों को बहुत ही कम मूल्य पर नमूने के रुप में देने पर 100 रुपयों का साफ सुथरा लाभ है.

गांव में दंतमंजन बनाने पर तथा महानगर में बेचने पर लाभ बहुत ही अधिक है.

द्वितीय स्तर

छोटी गोशालाओं में आसपास में कामधेनु, सुरभि, नंदनी, बहुला, कपिला, श्यामा नाम से आक-र्क पत्रकों के विज्ञापनों के साथ में प्रचार कर कम मूल्य पर आर्डर बुक कर प्रति माह 100 से 1000 किलो तक आवश्यकतानुसार मंजन तैयार कर सकता है. वर्तमान में भारत में दंतमंजन का उत्पादन मांग की तुलना में बहुत ही कम है.

तृतीय स्तर

मध्यम गोशालाओं में प्रति माह दांत की दवाओं के वितरकों के माध्यम से अच्छे कमीशन देकर कम मूल्य पर आर्डर बुक कर 1000 से 10,000 किलो तक आवश्यकतानुसार मंजन तैयार कर सकता है.

चतुर्थ स्तर

बड़ी गोशालाओं में बड़े विज्ञापनों के माध्यम से गो कथाओं, योग शिविरों, प्रवचनों, प्रदर्शनी, मेलों में बहुत अचछे कमीशनों के माध्यम से कम मूल्य पर आर्डर बुक कर प्रति माह 10,000 से 50,000 किलो तक मंजन आवश्यकतानुसार तैयार किया जा सकता है.

पंचम स्तर

महानगरों में गायत्री शक्तिपीठों, प्रज्ञापीठों, ज्ञानमंदिरों में, प्रज्ञापुराणों, योग शिविरों, स्वास्थय शिविरों, यज्ञों, कथाओं, प्रवचनों, प्रदर्शनों, मेलों, दांत के निःशुल्क उपचार शिविरों, दांत के चिकित्सकों, दांत की दवाओं, आयुर्वेद एवं पंचगव्य चिकित्सकों, प्रोवीजन स्टोरों, नुक्कड़ पान, मोल की दुकानों में बहुत अच्छे कमीशनों के साथ में कम मूल्य पर मंजन रखवाकर प्रति माह आवश्यकतानुसार 50,000 से 1 लाख किलो तक मंजन तैयार किया जा सकता है.

गोमय से दंतमंजन बनाने की विधि

गोबर के कंडों को पहले साफ सुधरी जगह या कढाई में रखकर जला देवें. आधे जल जावें तो एक साफ तगारी को ढककर उसकी आसपास की हवा बंद करने के लिये टाट का कपडा किनारों पर दबा देवें. लगभग आधा घंटा होने पर खोलकर काला मजबूत पका कोयला निकाल लेवें. कच्चा, कंडा या जली सफेद राख काम में नहीं लेवें. चाहें तो जमीन में 4 फीट लम्बा, 4 फीट चौड़ा, 4 फीट गहरा गढढा खोदकर ईंट सीमेंट से प्लास्तर कर उसे कोयला बनाने के काम में लाया जा सकता है.

उपर किसी बडे लोहे के बर्तन से ढंक कर हवा बंद की जा सकती है. फिर कोयलों को पीस कर कपड छान कर लें.

अमृतधारा तेल

20 ग्राम कपूर तथा 20 ग्राम अजवाइन सत दोनों को 1 घंटे मिलाकर रख दें. 1 घंटे के बाद 40 मिलीलीटर अमृतधारा तेल बन जायेगा. 1 किलो कंडे के बारीक चूर्ण में मिला लें.

सेंधा नमक का धोल

160 ग्राम सेंधा नमक को 160 ग्राम पानी में मिलाकर गरम करके घोल तैयार कर लें. 1 किलो कंडे के चूर्ण में 320 ग्राम नमक का घोल मिला दें.

नमी की स्थिति में ही इसमें पीपरमेंट, फिटकरी भस्म, लोंग, माजूफल चूर्ण मिलाकर अच्छी रंगीन कांच या प्लास्टिक की सीसी में भर लें.

चेतावनी

महान योगीराज स्वामी श्री रामदेव जी महाराज तथा हिंद स्वराज अभियान के स्वर्गीय श्री राजीव जी दीक्षित के अनुसार पेस्ट में सफेदी के लिये कैल्शियम डाई फास्फेट कतलखाने से जानवरों की हडडी के चूरे से 7 रुपये किलो के मूल्य से खरीद कर तैयार की जाती है. सोडियम लोरल सल्फेट से पेस्ट में ढेर सारा झाग उत्पन्न किया जाता है. कोलगेट, पेप्सोडेंट, क्लोजअप, सीबाका आदि पेस्टों का उपयोग हमेशा के लिये बंद करना आवश्यक है.

भारत में दूरदर्शन में दांत साफ करने के लिये बहुत सारी विदेशी कंपनियों के द्वारा कोलगेट, पेप्सोडेंट, क्लोजअप, सीबाका, फोरेंस, अमर, बबूल, नीम आदि पेस्ट के मनमोहक विज्ञापन दिखाये जाते हैं जिसके कारण महानगरों में बच्चे से लेकर बडे तक आधा आधा घंटे तक सुबह उठकर दांत साफ करने के लिये पेस्ट का ही उपयोग कर रहे हैं.

विश्व में हुए ताजे अनुसंधानों से यह साबित हुआ है कि पेस्ट में मौजूद फलोराइड की अधिकता मुंह का कैंसर, मसूढ़ों का कैंसर, दांत की परेशानियां तेजी से भारत में तथा विश्व के विकसित देशों में बहुत अधिक बढ रही हैं.

विश्व में भी अमेरिका, यूरोप के कई देशों जैसे इंग्लेंड, कनाडा, ब्राजील, एशिया में जापान, आदि विकसित देशों में भी गाय माता के गोबर के प्रति जागरुकता बढ गयी है.

कामधेनु दर्दनाशक तेल

प्रस्तावना

कामधेनु का वरदान गोमय

कामधेनु गोलोक से मृत्युलोक में मानव के कल्याण करने के लिए आयी है. कामधेनु का सबसे बड़ा वरदान गोमय है.

गोमय से 100 प्रतिशत गोरक्षा

गोमय के उपयोग करने से ही 100 प्रतिशत गोवंश रक्षा करना संभव है.

1 लाख किलो गोमय

कामधेनु मानव को गोमय 1 लाख किलो जीवन भर में देती है.

उपयोग

वर्तमान में गोमय का उपयोग जैविक खाद, नवग्रह धूप, धूप चूरा, अगरबत्ती, अग्निहोत्र कंडे, ईंधन के उपले, हवन समिधा, बर्तन मांजने की राख, आंखों की दवा, नहाने का साबुन, एक्जीमा साबुन, मलहम, केशवर्धक क्रीम, सौंदर्यवर्धक लोशन, दर्दनाशक तेल, अंगराग पावडर, कागज, टाइल्स, कवेलू, प्लास्टर, डिस्टेम्पर, बिजली उत्पादन, गोबर गैस, सीएनजी के लिए हो रहा है.

जैसे जैसे गोमय का उपयोग बढ़ेगा वैसे वैसे गोमय की मांग भी बढ़ेगी. मांग के कारण गोमय का मूल्य भी गोपालक को बहुत अच्छा मिलेगा.

100 रु. किलो

गोवंश की संख्या में तेजी के साथ में कमी होने के कारण गोमय का मूल्य 100 रु. तक पहुंच गया है.

गोमय वस्ते लक्ष्मी

कम से कम 5 रु. किलो गोमय का मूल्य मिलने पर यह बात स्वयं ही सिद्ध हो गयी है कि गोमय वस्ते लक्ष्मी यानी गोमय में आठ प्रकार की लक्ष्मी आठ ऐश्वर्यों के साथ में बैठी है.

प्रथम स्तर

स्वरोजगार

प्रथम स्तर पर गांव गांव में कामधेनु दर्दनाशक तेल बनाने पर 25 करोड़ युवा स्वरोजगार प्राप्त करेंगे. व्यक्तिगत स्तर पर प्रारम्भ में आयुर्वेद के आचार्य से कम से कम 1 साल का मार्गदर्शन प्राप्त कर कामधेनु दर्दनाशक तेल बनाने का संपूर्ण प्रशिक्षण ग्रहण कर अपने आसपास के रिश्तेदारों, सगे संबंधियों, मित्रों के लिए नमूने के तौर पर बहुत ही कम मूल्य पर देने के लिए कम से कम 10 किलो से अधिक से अधिक 100 किलो तक प्रतिमाह बना सकता है. सम्मानपूर्वक 100 से 500 रु. तक हर दिन कमाने की संभावना है.

यदि अनुकूलता है तो साथ में दैनिक जीवन में काम में आने वाली सभी पंचगव्य महो-धियों का निर्माण भी किया जा सकता है.

द्वितीय स्तर

छोटी गोशालाओं में गोवंश को पूरी तरह से स्वावलंबी बनाने के लिए कामधेनु दर्दनाशक तेल बनाने का प्रशिक्षण कम से कम 1 साल तक आयुर्वेद के विशे-ज्ञ से प्राप्त कर कार्य प्रारम्भ करे.

बड़ी मात्रा में निर्यात करने के लिए महानगरों में निर्यातकों से संपर्क अवश्य करें.

गो ब्रांड प्रोडक्ट के माध्यम से बिक्री करने के लिए प्रारम्भ में बिना विज्ञापन के बहुत ही कम मूल्य पर नमूने के तौर पर देने के लिए प्रारम्भ में कम से कम 100 किलो से 500 किलो तक प्रतिमाह में बना सकता है.

तृतीय स्तर

मध्यम गोशालाओं में सभी सुविधाओं के साथ में अनुसंधान केंद्र प्रारम्भ कर उच्च गुणवत्ता वाला कामधेनु दर्दनाशक तेल बनाने का कार्य प्रारम्भ करें.

प्रारम्भ में नमूने के रुप में कम मूल्य पर देने के लिए कम से कम 1000 किलो एवं अधिकतम 10,000 किलो तक प्रतिमाह में बना सकते हैं.

हडडी के चिकित्सकों, आयुर्वेद दवा वितरकों के माध्यम से विज्ञापन के साथ में बहुत आकर्-ाक कमीशन के साथ में बिक्री करने के लिए संपर्क करें.

चतुर्थ स्तर

बड़ी गोशालाओं में प्रदर्शनी, मेलों, गो कथाओं, प्रवचनों, प्रज्ञापुराणों, योग शिविरों, स्वास्थय शिविरों, सम्मेलनों, गायत्री शक्तिपीठों, प्रज्ञापीठों, ज्ञान मंदिरों, आयुर्वेद दवा वितरकों, हडडी के चिकित्सकों के माध्यम से आकर्-ाक कमीशनों के साथ में बिक्री करने के लिए 10,000 किलो तक प्रतिमाह में बना सकते हैं.

पंचम स्तर

महानगरों में निर्यातकों के माध्यम से बिक्री करने के लिए प्रतिमाह में 1 लाख किलो तक बना सकते हैं.

सवा मन सोना

बहुत ही प्राचीन मान्यता है कि कामधेनु के पेट में सवा मन सोना होता है. गोमय की परत में सोने की चमक सूर्य के प्रकाश में दिखाई देती है.

सूर्य केतु नाड़ी

विज्ञान के अनुसार कैरोटिन यानी स्वर्ण क्षार रीढ़ की हडडी में मौजूद सूर्य केतु नाड़ी के कारण उत्पन्न करता है.

गुणधर्म

कलियुग में निरन्तर वैज्ञानिक अनुसंधान करने पर यह साबित हो गया है कि गोवंश के गोबर में करोड़ों रसायन फिनोल, इंडोल, मेंथोल, फार्मेलिन, स्ट्रांशियम, पोटाश, कैरोटिन, विटामिन बी-12 आदि मौजूद हैं.

गोमय में मानव के अंदर से हडडी के दर्द को पूरी तरह से समाप्त करने का प्राकृतिक गुण मौजूद हे.

<u>सामग्री</u>

गोबर का रस 250 मिलीलीटर, गोमूत्र 500 मिलीलीटर, अजवाइन का सत 10 ग्राम, कपूर पपडी का 25 ग्राम, तिल्ली का तेल 1000 मिलीलीटर

<u>विधि</u>

दर्दनाशक तेल तैयार करने के लिये गोबर के रस को तिल्ली के तेल और गोमूत्र में मिलाकर मंद आंच में पकायें. फेन आने दें. गोमय स्वरस ओटकर हरे रंग के पत्थर के समान दिखने लगता है.

चटचट आवाज आना बंद होने लगे तब तेल सिद्ध हुआ समझकर अग्नि बंद कर दें.

जब तेल रह जाये तब ठंडा होने पर कपूर और अजवायन का सत डालकर सुंदर बोतल में बंद कर गुणों सहित बाजार में उपयोग करने के लिये लोगों को सुव्यवस्थित मार्केटिंग नेटवर्क के माध्यम से दें.

कानपुर गोशाला सोसायटी के द्वारा वर्तमान में काला तेल 35 रुपये में बेचा जा रहा है.

<u>लाभ</u>

दर्द वाले स्थान पर कामधेनु दर्दनाशक तेल मलने से तथा उस पर सेक करने पर गोबर दर्द को अंदर से खीचकर पूरी तरह से दूर कर देता है.

बर्तन मांजने के लिये गोबर के कंडे की राख

प्रस्तावना

प्राचीन समय से ही भारत में गांवों में गोबर के कंडे ईंधन के लिये बहुत बडी मात्रा में उपयोग किये जाते हैं. वर्तमान में गायों के गोबर का उपयोग ईंधन के लिये ही किया जा रहा है इसलिये गोबर के कंडों की राख बच जाने पर उसका उपयोग बर्तन मांजने के लिये बहुत प्राचीन समय से बडी मात्रा में गांवों में किया जाता रहा है. वर्तमान में आधुनिकता के नाम पर गोबर के कंडों की राख के बदले बर्तन मांजने के डिटरजेंट का उपयोग ही पूरे भारत में किया जाता है.

डिटरजेंट हानिकारक

बर्तन मांजने के लिये प्रतिदिन डिटरजेंट का उपयोग करना बहुत ही मंहगा पडता है तथा स्वास्थय के लिये हानिकारक है. हम अपने दैनिक जीवन में जो डिटरजेंट, साबुन, कपड़े धोने और बर्तन मांझने का पाउडर उपयोग करते हैं उनमें मुख्यतः लाइनर, बेंझीन, सोडियम सल्फेट, अलकली सल्फेट, सल्फोनेट आदि का प्रयोग किया जाता है जो हमारे मुंह से पेट में पहुंच कर आमाशय में पहुच जाते हैं और उस कैंसर का कारण बनते हैं. भारत के द्वारा बर्तन मांजने के लिये गाय माता के गोबर के कंडे की राख का उपयोग बहुत बडे स्तर पर करने के लिये उद्योगपति, संस्था, सामाजिक संगठन या संत की आवश्यकता है. कानपुर गोशाला सोसायटी के द्वारा 500 ग्राम गोरत्न मुक्ता पावडर 10 रुपये में बेचा जा रहा है.

रोजगार

भारत में राख के द्वारा करोडों लोगों को बहुत लम्बे समय तक रोजगार मिल सकता है.

गोपालन

राख के कारण गोपालन को बहुत बढावा मिलेगा.

गोमय से कागज

गोमय से कागज बनाने का कार्य बहुत लंबे समय के बाद में विश्व में भारत में सबसे पहले प्रारम्भ किया गया है. भारतीय गोवंश के गोबर से ही कागज बनाना संभव है. वैज्ञानिक अनुसंधान को विश्व के सामने रखने के लिए अखिल विश्व कामधेनु परिवार पहल कर रही है. वर्णसंकर जानवर का गोबर कागज बनाने के लिए उपयोगी नहीं है. विश्व में भी कई देशों में भारतीय गोवंश मौजूद है. गोमय से कागज तैयार करने के बारे में भारत के कार्य को मीडिया के द्वारा अभी तक सही तरीके से बताया नहीं गया है. गोमय से तैयार कागज की पूरे विश्व में बहुत ही भारी मांग है.

केंद्र सरकार पर भारी दबाव

भारत में गोहत्या करने पर एवं मांस निर्यात करने पर प्रतिबंध है. देश में बैलों की हत्या करने पर रोक नहीं है. बैलों की आड़ में गायें काटी जा रही है. केंद्र सरकार का संपूर्ण गोवंश हत्या बंदी कानून वर्तमान में नहीं है. राज्य सरकारों में केरल और पश्चिम बंगाल गोवंश हत्या बंदी को मानने के लिए बाध्य नहीं हैं. 2 जनवरी 2009 से मीट बोर्ड की नींव रखी गयी है. मीट बोर्ड के माध्यम से मांस के लिए नयी योजनाएं आसानी से तैयार कर सकेगी. सरकार मांस अधिक उत्पादन करने के लिए नये 65000 कतलखाने खोलने के लिए तैयारियां कर रही है. विश्व में गोमांस की प्रचंड मांग है. मांस लाबी वर्तमान में भारत सरकार पर भारी दबाव बना रही है. मांस लाबी चाहती है कि 80 प्रतिशत गोवंश कतलखाने में काटे जायें. विश्व को मांस भारत से बिना रुकावट के मांस मिलता रहे. मांस निर्यात करने के लिए भारत का कृ-ि मंत्रालय तय करता है. भारत से केटल बोर्ड बनाने के लिए बहुत ही लंबे समय से मांग की जा रही है. विश्व में भारत के गोवंश के मांस की भारी मांग है. विश्व के देशों के द्वारा मांस नहीं मिल रहा है. सबसे अधिक गोवंश भारत के पास में हैं. मांस नहीं मिलने के कारण विश्व में मांस के मूल्य में बहुत ही तेजी से वृद्धि हो रही है.

किसान की हालत खराब

वर्तमान में किसान की हालत भारत में बहुत अच्छी नहीं है. किसान गोवंश के गोबर की अच्छी कीमत मिलने पर ही गोवंश को बहुत ही अच्छी तरह से पाल सकता है. अंतरा-ट्रीय रिपोर्ट के अनुसार एक किसान की औसत वार्-िक आय मात्र 2150 रु. है.

कामधेनु चेनल

विश्व में भारत के गोवंश से जुड़े अनुसंधानों को बताने के लिए कामधेनु चेनल की तुरन्त ही आवश्यकता है. कामधेनु चेनल पर विश्व का ध्यान तुरन्त ही जायेगा. विश्व की सबसे बड़ी गोशाला श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा में पूरी तैयारियां करने के बाद भी कामधेनु चेनल अभी तक प्रारम्भ नहीं की गयी है.

धारावाहिक

श्री संतो-ा जी जैन ने श्री दत्त शरणानंद जी श्री गोपाल गोवर्धन गोशाला पथमेड़ा के साथ में संपूर्ण मार्गदर्शन प्राप्त कर गोमाता धारावाहिक आस्था चेनल में 12 सप्ताह से रविवार के दिन बहुत ही अच्छे समय सुबह 9 बजे से आधे घंटे के लिए प्रसारित किया जा रहा है लेकिन गोबर से कागज बनाने के बारे में अभी तक नहीं बताया गया है. अनुसंधान के पक्ष में सिर्फ पथमेड़ा के ही दर्शन करवाये गये हैं. गोमाता देखने वाले भी वर्तमान में बहुत ही गिने चुने लोग हैं. देखने वालों की संख्या तेजी के साथ बढ़ने पर महत्वपूर्ण अनुसंधान दिखाने की पूरी संभावना है. विश्व को विश्व गुरु भारत की इस महान उपलब्धि के बारे में बताना अनिवार्य है.

अज्ञानता

गोवंश विरोधी सरकार के दुबारा केंद्र की सत्ता में आने के कारण ही भारत में भी वर्तमान में गोमय से कागज बनाने के बारे में भी बहुत ही गिने चुने लोगों को ही पता है. उद्योगपतियों का ध्यान गोमय से कागज बनाने के बारे में आकर्-ित करना आवश्यक है. वर्तमान केंद्र सरकार गोमय से कागज पर अनुसंधान करने के लिए किसी प्रकार का प्रोत्साहन देना नहीं चाहती है.

मीडिया

प्रिंट एवं इलेक्ट्रोनिक मीडिया के द्वारा गोमय से कागज बनाने के बारे में आम व्यक्ति को भारत में बताया ही नहीं गया है. सूचना के अभाव में ही गोवंश के द्वारा मिलने वाले अपार लाभ से गोवंश पालक पूरी तरह से अनजान है. गोवंश पालक की रुचि मीडिया में बहुत ही कम है. गोमय से कागज तैयार करने के अनुसंधान करने वालों को भी मीडिया के द्वारा पूरी तरह से दबाया गया है. उद्योगपति गोमय से कागज बनाने के लिए तैयार नहीं है. उद्योगपतियों पर गोमय से

कागज बनाने के लिए दबाव बनाने के लिए जनजागृति की आवश्यकता है.

परिवर्तन

गोमय गोवंश से 12 माह गोपालक से मिलता है. गोबर का उपयोग करने के लिए यदि उद्योगपति सोचेंगे तो बहुत तेजी से लोगों की सोच में परिवर्तन दिखाई देगा. वर्तमान समय में बैल के उपयोग में बहुत ही अधिक कमी आने के कारण ही बैल कतलखाने में कटने के लिए जाता है.

अनुसंधान

सबसे पहले विशाखापटटनम निवासी तथा राजमुंद्री में एक महाविद्यालय में पढ़ा रही तथा आंध्र विश्वविद्यालय से इकोनोमिक्स ओफ एजुकेशन में डोक्टरेट कर पहली बार डाक्टर मदन मोहन बजाज जी का शाकाहार के वि-ाय पर गायों की दुर्दर्शा का विस्तार से वर्णन किया गया है. यह प्रवचन सुनकर अनुराधा नाम की वैज्ञानिक ने गोवंश रक्षा करने के लिए गोवंश के गोबर से कागज बनाने पर अनुसंधान कार्य कई सालों तक कर उद्योगपतियों का ध्यान आकर्-ित किया है. उनके द्वारा तैयार कागज बाजार में मिल रहे कागज की तरह है. उनके द्वारा पहले सारा कार्य हाथ से किया गया था और फिर छोटी मशीन लगाकर कागज तैयार किया गया है. अब बड़े पैमाने पर कागज बनाने के लिए बड़ी मशीनें जुटाने के लिए प्रयास कर रही हैं. देशी गाय के गोबर में मौजूद फाइबर में रसायनों को मिलाकर सबसे पहले कार्ड बोर्ड बनाया था.

होशंगाबाद

मध्यप्रदेश में सबसे पहले होशंगाबाद में गोबर से कागज बनाने का कारखाना चालू हो चुका है.

कानपुर

गोमय से कागज बनाने का कार्य कानपुर गोशाला सोसायटी कानपुर उत्तरप्रदेश के द्वारा गहन अध्ययन करने के बाद में 2009 में प्रारम्भ किया गया है. वर्तमान में कानपुर में गोमय से कागज बनाने का कार्य प्रारम्भ करने के कारण भारत में जागृति उत्पन्न हो रही है. वर्तमान में कानपुर में बहुत सारे कार्य गोमय का उपयोग कर गोवंश के रक्षण करने के लिए किये जा रहे हैं.

मार्गदर्शन

गोवंश के गोबर का उपयोग गोशालाओं के द्वारा गोमय से कागज बनाने की आवश्यकता को ध्यान में रखकर संपूर्ण योजना के बारे में पैसे लेकर श्री पुरु-ोत्तम जी तो-नीवाल भूतपूर्व उपाध्यक्ष उत्तरप्रदेश गो सेवा आयोग महामंत्री कानपुर गोशाला सोसायटी गोशाला भवन 55/112 जनरलगंज कानपुर उत्तरप्रदेश 208001 के द्वारा मार्गदर्शन दिया जा रहा है.

गोवंश संवर्धन

गोबर से कागज बनाने का कारखाना लगाने पर लोगों को डर है कि 100 रु. किलो तक पहुंच जाने के कारण किसानों को खेती करने के लिए गोबर मिलना मुश्किल हो जायेगा. गोबर की मांग गोमय से कागज बनाने के उद्योग लगाने के आसपास ही तेजी से बढ़ेगी. गोबर की मांग विश्व में बहुत ही तेजी से बढ़ने पर गोवंश संवर्धन को बढ़ावा मिलेगा. गोवंश संवर्धन को बढ़ावा मिलने पर गोवंश रक्षा हो जायेगी.

गोबर से आमदनी

गोबर से बहुत बड़े स्तर पर कागज बनाने पर किसानों से बहुत बड़ी मात्रा में नियमित गोबर 10 रु. किलो तक खरीदना संभव है. एक गोवंश से एक दिन में कम से कम 8 किलो तक गोबर मिल जायेगा. किसान कम से कम 5 गोवंश बहुत ही आराम से रख सकता है. गोबर से आय होने पर किसान गोवंश को बहुत ही अच्छी तरह से पौ-टिक आहार खिला सकता है. पौ-टिक आहार खिलाने से गोवंश 25 साल की आयु तक बिना बीमारी के जीवन जीयेगा. गाय अपने 25 साल के जीवन में 17 बच्चे देकर गोवंश के परिवार में वृद्धि करके किसान को सवा मन सोना देगी. एक गोवंश 25 साल जीवन जीने पर गोबर से किसान को मालामाल कर देगा. गोमय वस्ते लक्ष्मी वाली बात प्रत्यक्ष दिखाई देने लगेगी. प्रतिदिन किसान को 5 गोवंश से 400 रु. गोबर से आय होती है. गोबर से नियमित आय होने पर किसान गोवंश को कटने नहीं देगा. सरकार को बैल काटने के कानून में परिवर्तन करने के लिए बाध्य होना पड़ेगा.

गोमय से अग्निरोधक कवेलू

गोमय के अग्निरोधक कवेलू कानपुर गोशाला सोसायटी कानपुर उत्तरप्रदेश के द्वारा तैयार किया गया है. गांवों में गोमय से तैयार अग्निरोधक कवेलू बहुत ही अधिक उपयोगी हैं. गोमय के अग्निरोधक कवेलू बनाने के लिए पैसे लेकर संपूर्ण मार्गदर्शन दिया जा रहा है.

गोमय से टाइल्स

सवा मन सोना

कामधेनु मानव का कल्याण करने के लिए मृत्युलोक में समुद्र मंथन के समय में चौदह रत्नों में प्रगट हुई है. कामधेनु के पेट में सवा मन सोना है. कामधेनु का वरदान गोमय है. गोमय में सोने की परत सूर्य के प्रकाश में दिखाई देती है.

96 करोड़

विश्व में वर्तमान में 96 करोड़ गोवंश मौजूद है. गोमय पर लगातार अनुसंधान हुआ है इसलिये गोमय के उपयोग करने के लिए प्रयत्न किये गये हैं.

1 लाख किलो

वर्तमान में भारत में विश्व का सबसे अधिक गोवंश मौजूद है. प्रतिदिन गोवंश से गोमय बहुत बड़ी मात्रा में प्राप्त होता है. 1 कामधेनु जीवन में मानव को 1 लाख किलो गोमय देती है.

गोमय वस्ते लक्ष्मी

गोमय वस्ते लक्ष्मी यानी गोमय में आठ प्रकार के ऐश्वर्यों के साथ में आठ प्रकार की लक्ष्मी विराजमान है.

गोमय का उपयोग

वर्तमान में गोमय का उपयोग पंचगव्य महो-ाधियों में पंचगव्य एवं महापंचगव्य घी, जैविक खाद, दंतमंजन, नवग्रह धूप, धूप चूरा, अगरबत्ती, अग्निहोत्र कंडे, ईंधन के उपले, हवन समिधा, बर्तन मांजने की राख, आंखों की दवा, नहाने का साबुन, एक्जीमा साबुन, मलहम, केशवर्धक क्रीम, सौंदर्यवर्धक लोशन, दर्दनाशक तेल, अंगराग पावडर, कागज, टाइल्स, कवेलू, प्लास्टर, डिस्टेम्पर, बिजली उत्पादन, गोबर गैस, सीएनजी के लिए हो रहा है.

जैसे जैसे गोमय का उपयोग बढ़ेगा वैसे वैसे गोमय की मांग भी बढ़ेगी. मांग के कारण गोमय का मूल्य भी गोपालक को बहुत अच्छा मिलेगा.

100 प्रतिशत गोवंश रक्षा

100 प्रतिशत गोवंश रक्षा गोमय के अधिक से अधिक उपयोग करने से आर्थिक आधार पर संभव है.

गोमय टाइल्स

गोमय से टाइल्स बनाने का उद्यम सर्वश्रे-ठ है. गोमय से तैयार टाइल्स सामान्य टाइल्स जैसी ही हैं लेकिन गुणधर्म विशे-ा हैं इसलिए मांग बहुत ही अधिक है.

स्वरोजगार

युवा टाइल्स उद्योग में संपूर्ण प्रशिक्षण प्राप्त कर गोमय से टाइल्स बनायेगा तो 45 करोड़ युवा स्वरोजगार प्राप्त कर सकेंगे.

गोमय से टाइल्स कानपुर गोशाला सोसायटी कानपुर उत्तरप्रदेश के द्वारा सबसे पहले तैयार की जा रही है. गोमय से तैयार टाइल्स की मांग पूरे विश्व में है.

गोमय के उपयोग को बढ़ाने के लिए कानपुर गोशाला सोसायटी बहुत ही अधिक सक्रिय है.

निर्यात

गोमय से तैयार टाइल्स का निर्यात करने की आवश्यकता है.

भारत में गोशालाओं को गोमय से टाइल्स बनाने के लिए संपूर्ण मार्गदर्श्न पैसे लेकर श्री पुरु-ोत्तम जी तो-नीवाल कानपुर गोशाला सोसायटी के द्वारा दिया जा रहा है.

श्री पुरु-ोत्तम अग्रवाल चार्टर्ड अकाउन्टेंड, स्वदेशी गोसेवा संस्थान 54, संजय पेलेस, आगरा के द्वारा गोमय से टाइल्स बनाने का कार्य 25 लाख खर्च कर प्रारम्भ किया जा रहा है.

गोमय से अग्निहोत्र के कंडे

विश्व में 1900 के पहले मात्र 100 करोड़ के आसपास जनसंख्या थी. 1900 के बाद में 100 सालों में 7 गुनी जनसंख्या वृद्धि हुई है. विश्व में अभी तक की धरती पर मानव जनसंख्या में बहुत ही तेजी के साथ में वृद्धि हुई थी. वर्तमान में 700 करोड़ के आसपास विश्व की जनसंख्या है. मानव के द्वारा ईंधन के लिए जंगल के पेड़ों को बहुत ही तेजी के साथ में काटा गया है. मानव के द्वारा जीवों की हत्या अपने मनोरंजन करने के लिए की गयी है. प्रकृति के साथ में भददा मजाक मानव के द्वारा चरम सीमा पर किया गया है. जनसंख्या के विस्फोट के कारण ही पर्यावरण में तेजी के साथ असंतुलन हुआ.

ओजोन की दुश्मन जीवहत्या

मानव के द्वारा अपनी मांस की आवश्यकता के लिए विश्व में जीवहत्या बहुत ही अधिक की जा रही है. जीवहत्या वर्तमान में विश्व में चरम सीमा पर पहुंच गयी है. जीवहत्या रोकना बहुत ही कठिन है इसलिए अग्निहोत्र करने के कार्य में तेजी की आवश्यकता है. जीवहत्या के कारण ही जीवों की दर्द की तीव्र चित्कार के कारण 1040 मेगावाट से अधिक उर्जा धरती पर उत्पन्न होती है. जीवहत्या के कारण ओजोन में छेद हुआ है तथा ओजोन में छेद बढ़ रहा है.

ओजोन की दुश्मन सीएफसी

ओजोन की दुश्मन सीएफसी की खोज 1928 में की गयी थी तथा सीएफसी का प्रयोग वातानुकूलन तथा शीतलन के लिए बहुत ही अधिक किया गया था. सीएफसी ओजोन की दुश्मन है यह बात बहुत समय बाद मानव को समझ में आयी है लेकिन धरती का तापमान ओजोन में छेद बढ़ने के कारण बढ़ रहा हे इसलिए सीएफसी का प्रयोग बंद होने के बदले बढ़ रहा है. सीएफसी के कारण ही ओजोन परत में छेद हुआ था. 1955 में ओजोन की परत में फुटबाल जितना छेद नापा गया था. ओजोन में छेद लगातार बढ़ता ही चला गया है. वर्तमान में ओजोन में छेद 280 लाख वर्ग किलोमीटर तक बढ़ गया है.

चेतावनी

ओजोन में 280 लाख वर्ग किलोमीटर विशाल छेद होने के कारण ही सूर्य की तीव्र पराबैंगनी किरणें ग्लेशियर को पिघला रही हैं. समुद्री वैज्ञानिक स्टीफन केक्स ने विश्व को बहुत ही कड़ी चेतावनी दी है कि ओजोन के छेद को बंद नहीं किया जायेगा तो आने वाले 20 सालों में समुद्र का जलस्तर 1.5 से 3 मीटर बढ़ जायेगा तथा उफनते हुए समुद्र में कई देश बह जायेंगे.

समझौता

विश्व में 191 देशों के द्वारा एक समझौता ओजोन के छेद को कम करने के लिए किया गया है. कई देशों के द्वारा ओजोन के छेद को कम करने के लिए हस्ताक्षर नहीं किये गये हैं. समझौते से बाहर रहने वाले देश अग्निहोत्र करने के लिए पूरी तरह से सहमत हैं.

कार्बन फाइनेन्स यूनिट

विश्व बैंक तथा संयुक्त रा-ट्र संघ के द्वारा ओजोन परत में तेजी के साथ बढ़ रहे छेद को रोकने के लिए कार्बन फाइनेन्स यूनिट एवं क्लीन एनर्जी मेनेजमेंट फंड में कार्बन क्रेडिट के अंतर्गत बिना अग्निहोत्र के 1000 करोड़ भारत को 2008 तक मिल चुका है.

कार्बन क्रेडिट

गुजरात में कार्बन क्रेडिट के लिए बहुत अधिक जागरुकता है. गुजरात में उद्योग समूह कार्बन क्रेडिट से अपार पैसे कमा रहे हैं. 18 कंपनिया धन ले चुकी हैं. 75 कंपनियां धन लेने के लिए आवेदन लगा चुकी हैं. भारत में गोबर गैस, जैविक खाद के लिए कार्य करने वाली संस्थाएं कार्बन क्रेडिट से धन प्राप्त कर रही हैं.

अज्ञानता

भारत में कार्बन क्रेडिट के बारे में बहुत ही कम लोगों को जानकारी है. विश्व में बहुत तेजी के साथ बदलते हुए समय के कारण कार्बन क्रेडिट के बारे में जानकारी प्राप्त करना आवश्यक है. माधव आश्रम एवं वेदविज्ञान अनुसंधान संस्था अक्कलकोट जो अग्निहोत्र के लिए बहुत ही लंबे समय से पूरी तरह से समर्पित हैं को कार्बन क्रेडिट के बारे में जानकारी नहीं होने से अग्निहोत्र के विकास करने के लिए धन नहीं कमा सके हैं.

विश्वविद्यालय

भारत में अग्निहोत्र के संपूर्ण विकास करने के लिए अमेरिका की तरह से वर्तमान में अग्निहोत्र

विश्वविद्यालय नहीं है. वर्तमान केंद्र सरकार एवं राज्य सरकारें अग्निहोत्र विश्वविद्यालय के लिए इच्छुक नहीं हैं. भारत में 130 करोड़ लोगों को वैज्ञानिक अनुसंधान कर अग्निहोत्र चिकित्सा, अग्निहोत्र कृ-ि, गोवंश के रोगों का अग्निहोत्र से उपचार, अग्निहोत्र के सर्वदाता के बारे में बताने के लिए अग्निहोत्र पर गहन अनुसंधान करने की आवश्यकता है.

अग्निहोत्र चिकित्सालय

अग्निहोत्र चिकित्सालय पश्चिमी जर्मनी की तरह से असाध्य रोगों का संपूर्ण उपचार करने के लिए वर्तमान में भारत में गांव में नहीं है. अग्निहोत्र चिकित्सालय तुरन्त ही गांव में प्रारम्भ करने के लिए पंचायत में सरपंच के माध्यम से हमें ही पहल करनी है.

अग्निहोत्र चिकित्सा विश्वविद्यालय

माधव आश्रम एवं वेद विज्ञान अनुसंधान संस्था ने पूरे विश्व में अग्निहोत्र को पहुंचाने के बाद भी अग्निहोत्र चिकित्सा विश्वविद्यालय के लिए अभी तक कोई पहल नहीं की है. अग्निहोत्र चिकित्सा से पूरा विश्व बहुत ही अच्छी तरह से परिचित है लेकिन राज्य सरकारें और केंद्र सरकार अग्निहोत्र चिकित्सा विश्वविद्यालय प्रारम्भ करने के लिए पूरी तरह से गंभीर नहीं हैं. अग्निहोत्र की भस्म के औ-धि गुणों के बारे में पश्चिमी जर्मनी की तरह से अनवरत अनुसंधान करने के लिए हमें अग्निहोत्र चिकित्सा विश्वविद्यालय की तुरन्त ही आवश्यकता है.

अग्निहोत्र कृ-ि विश्वविद्यालय

65 करोड़ किसानों तथा 10 करोड़ आदिवासियों के अग्निहोत्र कृ-ि के विकास करने के लिए अग्निहोत्र कृ-ि विश्वविद्यालय के लिए किसी ने भी अभी तक पहल नहीं की है. राज्य सरकारें तथा केंद्र सरकार विश्व में अग्निहोत्र पर जबरदस्त कार्य करने के बाद भी अग्निहोत्र कृ-ि विश्वविद्यालय खोलने के लिए पूरी तरह से उदासीन हैं. अग्निहोत्र कृ-ि विश्वविद्यालय के लिए किसानों को ही सामने आना आवश्यक है.

जानकारी

माधव आश्रम को हर साल होने वाली प्रचारक सभा में 27 एवं 28 जनवरी 2009 में कार्बन क्रेडिट के बारे में बताया गया है. आने वाले समय में अग्निहोत्र करने पर भारत को अपार धन मिलेगा.

2015

भगवान श्री परशुराम जी के द्वारा ओजोन छेद को कम करने के लिए अग्निहोत्र विश्व में हर घर में 2015 तक करवाया जायेगा. हर घर में अग्निहोत्र करने के लिए गोमाता के गोबर के पवित्र कंडों की भारी मांग 2015 तक विश्व में उत्पन्न होगी.

गोबर के द्वारा गोबर गैस का कार्य सबसे पहले चीन में 1900 से किया गया है लेकिन भारत में गोबर गैस सफल नहीं है.

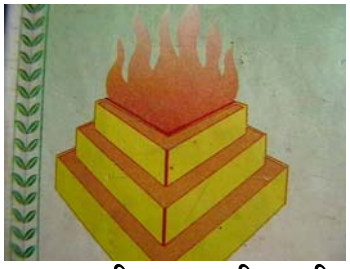

भारत में हवन की बहुत ही प्राचीन परम्परा वैदिक काल से रही है. विश्व में भी अग्निपूजा बहुत ही लंबे समय से की जा रही है. वेद मंत्र के साथ में निश्चित काल में अग्नि में आहूति डालना ही अग्निहोत्र है. वैदिक चिकित्सा में अंतरिक्ष में होने वाले परिवर्तनों को ध्यान में रखकर ही हवन का कार्य किया जाता है. अचानक अग्नि की पूजा बंद क्यों की गयी? अचानक हवन को हमारी दिनचर्या में से क्यों हटा दिया गया है?

अग्निहोत्र से लेकर अश्वमेघ यज्ञ करने के आदेश वेदों में मानव को दिये गये हैं. अलग अलग हवनों में अलग अलग मंत्र एवं अलग अलग आहुतियां दी जाती हैं.

भगवान श्री परशुराम जी के द्वारा अग्निहोत्र को धरती पर फिर से करवाने के लिए दिव्य आत्माओं का चयन किया गया है.

श्री गजानन महाराज श्रीजी के द्वारा महान प्रतापी गुरु भगवान श्री परशुराम जी के आदेश के अनुसार अग्निहोत्र करने के लिए विजयादशमी 1944 से शिवपुरी अक्कलकोट जिला सोलापुर महारा-ट्र में कार्य प्रारम्भ किया गया है.

हर साल 25 से 27 दिसम्बर तक अक्कलकोट में अग्निहोत्र का दिव्य समारोह मनाया जाता है. सामुहिक अग्निहोत्र तीन दिन किया जाता है.

श्री श्याम झाझू जी वेदविज्ञान अनुसंधान संस्थान शिवपुरी अककलकोट जिला सोलापुर महारा-ट्र में 40 गोवंश जिसमें जर्सी जानवर भी हैं गोबर के कंडे तैयार कर अग्निहोत्र का कार्य देख रहे हैं. जर्सी जानवर गोशाला में नहीं होने चाहिए.

श्री माधव जी पोतदार माधव आश्रम सिहोर मार्ग बैरागढ़ भोपाल मध्यप्रदेश 462035 के द्वारा विजयादशमी 1954 में अग्निहोत्र करने के लिए श्री जी के सामने प्रतिज्ञा की गयी है.

22 फरवरी 1963 महाशिवरात्रि के परम पवित्र दिन के सूर्यास्त के समय से श्री माधव जी पोतदार के द्वारा पूरे विश्व को अग्निहोत्र करने के लिए कार्य प्रारम्भ किया गया है.

22 फरवरी को अग्निहोत्र की जयंती पूरे विश्व में मनायी जाती है.

15 फरवरी 1968 से अग्निहोत्र को पूरे विश्व में पहुंचाने के लिए श्री माधव जी के द्वारा पूरे परिवार के साथ अभियान चलाया गया है.

सुश्री नलिनी जी को माधव आश्रम की संचालिका का दायित्व स्वयं श्री माधव जी के द्वारा 1970 में सौंपा गया था.

नलिनी जी के द्वारा अग्निहोत्र के प्रचार करने के लिए बहुत सारी गतिविधियां विजयादशमी 29 सितम्बर 1970 के दिन पंचरत्न गोशाला का प्रारम्भ, 1 जुलाई 1972 को धर्मसूर्य का प्रारम्भ, श्री माधव जी की उपस्थिति में पहला मानव धर्म सम्मेलन 8 से 10 मार्च 1973, 27 जनवरी 1974 को पहली प्रचारक सभा का प्रारम्भ किया गया था. पहली प्रचारक सभा जिसमें 70 से 80 के बीच में प्रचारक थे को स्वयं श्री माधव जी पोतदार ने 2 घंटों तक 10 बजे सुबह से संबोधित किया था.

माधव आश्रम से प्रचारकों को अग्निहोत्र के लिए आवश्यक संपूर्ण साहित्य बहुत ही कम मूल्य पर उपलब्ध करवाया जाता है. 35 सालों से हर साल प्रचारक सभा 2 दिनों के लिए माधव आश्रम में आयोजित की जाती है. सुबह 10 बजे से 1 बजे तक अग्निहोत्र करके सभा की शुरुआत की जाती है. जागृति गान के साथ प्रचारकों में उत्साह आता है. उसके बाद लगातार प्रचारक सभा में प्रचारक अपने अनुभव अग्निहोत्र के बहुत ही विस्तार से बतलाते हैं. भोजन एवं विश्राम करने के बाद में दोपहर 3 से 5 बजे तक प्रचारक सभा का दूसरा सत्र चलता है.

प्रचारक सभा में पूरे भारत के प्रचारक 2 दिन 27 एवं 28 दिसम्बर सामुहिक सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय में अग्निहोत्र करते हैं. सामुहिक अग्निहोत्र करने से विश्व बंधुत्व की भावना विकसित होती है.

पंचरत्न गोशाला से गोबर से सामुहिक अग्निहोत्र करने के लिए पवित्र कंडे तैयार करवाना, घी तैयार करवाना, पिरामिड आकार के तांबे तथा मिटटी के पात्र बनवाकर अग्निहोत्र करने के लिए लोगों को देना भी आश्रम में प्रारम्भ हुआ था. लोगों को पवित्र कंडे बनवाने का प्रशिक्षण देना आश्रम में ही किया जाता है.

गोशाला के नाम पर डेयरी

उसके बाद 1981 में माधव आश्रम में श्री माधव जी पोतदार के नहीं रहने पर उनके परिवार के सदस्यों ने अपनी सुविधा के अनुसार गोशाला में जर्सी वर्णसंकर जानवरों को दूध अधिक देने के कारण ही रखा गया है.

जर्सी इंग्लैंड में एक टापू है जहां पर 1771 में जंगली एवं हिंसक जानवरों को पालतु बनाकर मांस तथा दूध के लिए उनकों सुअर से क्रोस करवाया गया था जिसके कारण इन जानवरों में सुअर के गुण मिलते हैं. जर्सी जानवर अपने भार से 13 गुना दूध देते हैं. जर्सी के दूध में वोर्म मौजूद होते हैं. जर्सी जानवर में गोवंश के लक्षण नहीं रहते हैं. जर्सी जानवर का कंधा यानी पुटठा, कुबड़ या हम्प या उभार नहीं होता है. जर्सी जानवर में सूर्यकेतू नाड़ी नहीं होती है. जर्सी जानवर की आवाज दबी हुई रहती है. जर्सी जानवर का मल अग्निहोत्र के लिए कंडे तैयार करने लायक नहीं है.

भारतीय गोवंश का माधव आश्रम में पूरी तरह से अभाव है.

श्री जयंत जी पोतदार के द्वारा अग्निहोत्र की सभी पुस्तकों अग्निहोत्र हिंदी, अंग्रेजी, मराठी, अग्निहोत्र चिकित्सा, अग्निहोत्र कृ-ि क्रांति का प्रकाशन प्रारम्भ करवाया गया था.

अग्निहोत्र कृ-ि को 1973 से एवं अग्निहोत्र चिकित्सा को 1974 से पश्चिमी जर्मनी आदि बहुत सारे देशों के द्वारा विश्व में बहुत ही अधिक महत्व दिया गया है.

128 देशों में सूर्योदय एवं सूर्यास्त के समय में नियमित रुप से अग्निहोत्र करने के लिए अभियान चल रहा है.

2015 तक पूरे विश्व में अग्निहोत्र हर देश में पहुंच जायेगा.

विश्व में कई देशों के द्वारा अग्निहोत्र करने के लिए गोमय से तैयार कंडे न मिलने के कारण मजबूरन भारत से आयात करने पड़ रहे हैं.

मलेशिया में 2 लाख कंडे अग्निहोत्र करने के लिए अक्कलकोट भारत से आयात किये थे. मुसलमान देश कुवेत में एक भी गोवंश मौजूद नहीं है. गोमय के अभाव के कारण मजबूरन भारत से गोमय कंडे आयात करना है. जापान राजस्थान में नेवई गोशाला में से गोबर टनों की मात्रा में आयात कर रहा है.

गोमय से अग्निहोत्र करने के लिए पवित्र कंडे तैयार करने का कार्य वर्तमान में भारत में कुछ गोशालाओं में बहुत ही सीमित किया जाता है.

महानगरों में अग्निहोत्र करने के लिए गोमय के कंडे न मिलने के कारण ही विश्व की सबसे बड़ी गोशाला श्री दत्तशरणानंद जी महाराज जी गोपाल गोवर्धन गोशाला आनन्दवन पथमेड़ा तहसील सांचोर जिला जालोर राजस्थान के द्वारा अग्निहोत्र करने के लिए छोटे छोटे कंडे जिसमें चावल एवं घी मिलाकर बहुत बड़े स्तर पर तैयार किये जा रहे हैं.

20 रु. में 40 गोबर के कंडे कागज के आक-र्क डिब्बे में पैक कर तथा डिब्बे पर कंडों के बारे में जानकारी प्रकाशित कर बिक्री किए जा रहे हैं.

खपरेल

कानपुर गोशाला सोसायटी के द्वारा गोबर से खपरैल तैयार की गयी है जो पानी को पूरी तरह से रोकती है तथा आग से भी बचाव करती है. गर्मी को भी रोकती है.

गोमय से धूप निर्माण

जापान

विश्व के प्रगतिशील देश जापान में गोबर से तैयार धूप को वातावरण को पवित्र रखने के लिये बहुत ही अधिक पसंद किया जाता है. जापान में मंदिरों में तथा धार्मिक जगहों पर प्रार्थना तथा ध्यान लगाने के अवसरों पर धूप का प्रयोग किया जाता है.

अनाहद चक्र

योग करते समय अनाहद चक्र की उर्जा पर धूप के परिणाम यंत्रों से नापे गये हैं. चौकाने वाले परिणाम सामने आये हैं. अनाहद चक्र की उर्जा में असाधारण वृद्धि देखी गयी है. जापान में प्रतिदिन अपने निवास में भी उपयोग करते हैं.

निर्यात

भारत विश्व का सबसे बड़ा गोबर उत्पादक देश है. विश्व के सबसे अधिक गोवंश वर्तमान में भारत में हैं.

9000 रु. टन

संत आसाराम जी के द्वारा राजस्थान में टोंक जिले के आसाराम गोशाला नेवई में गोबर 9000 रुपये टन निर्यातकों को दिया जा रहा है. धूपबत्ती का निर्यात मुम्बई से किया जाता है.

वातावरण शुद्धि

उत्तरी अमेरिका ने भारत से गीर, साहीवाल, लाल सींधी जैसी बहुत सारी प्रजातियां सरकस तथा चिड़ियाधर के माध्यम से चोरी से आयात कर विकसित की है. ब्राजील से उत्तरी अमेरिका ने भारतीय गोवंश मंगवाकर नयी प्रजातियां विकसित कर चुका है.

वर्तमान में उत्तरी अमेरिका स्वास्थय के प्रति बहुत ही अधिक जागरुक है. जापान की तरह ही उतरी अमेरिका में धूप का प्रयोग अस्पतालों में वातावरण की शुद्धि के लिए अनिवार्य रुप से किया जाता है.

ब्राजील

ब्राजील में भारत से 6 गुना अधिक भूमि है तथा ब्राजील गीर, साहीवाल, लाल सींधी, अंगोल आदि एक करोड़ भारतीय गोवंश का बहुत अच्छा विकास कर वातावरण पवित्र करने के लिए गोमय धूप का उपयोग कर विश्व में कार्बन क्रेडिट प्राप्त करने में सबसे आगे है.

चीन

विश्व में चीन गोमय से बहुत बड़ी मात्रा में धूप बनाकर कार्बन क्रेडिट का सबसे बड़ा दावेदार है.

पश्चिमी जर्मनी

मैजिक पावडर

पश्चिमी जर्मनी में धूप की भस्म का प्रयोग असाध्य रोगों के उपचार के लिए केप्सूल में किया जाता है. पश्चिमी जर्मनी ने भस्म के वैज्ञानिक परीक्षण करने पर आश्चर्यजनक परिणाम मिलने के कारण ही भस्म को मैजिक पावडर कहा है.

उपयोग

धूप की भस्म से दांत साफ करने पर दांत चमकदार रहते हैं. भस्म जल में मिलाकर पी जाती है. पेट का पाचन सही रहता है.

भस्म को घी में मिलाकर भोजन में प्रयोग किया जाता है. मधु यानी शहद के साथ में भस्म मिलाकर चाटकर प्रयोग किया जाता है.

अफ्रीका, ओस्ट्रेलिया, कनाडा, जर्मनी, कोरिया, लंदन, यूरोप के और कई देशों, मुस्लिम देशों दुबई, मस्कत, अबूधाबी, बंगलादेश, ताइवान, मलेशिया, कुवेत, जोर्डन, इरान, इराक, इजराइल में भी भारत में तैयार हो रहे धूप की मांग बहुत अच्छे मूल्य पर बनी हुई है.

विश्व में धूप के निर्यात करने के लिये धूप की गुणवत्ता का बहुत अधिक ध्यान रखने की आवश्यकता है. निर्यात के लिये तैयार धूप में जडी बूटी खाने वाली गाय का ही गोबर उपयोग करना चाहिये.

धूप एक बार चेतन करने पर लगातार जलती है कि बीच में बुझ जाती है

खादी

धूप आज की खादी है. धूप खादी की तरह ही विचार है. अग्निहोत्र के समान समय का बंधन नहीं होने के कारण प्रत्येक गोरक्षक, पर्यावरण सुधारक, धार्मिक व्यक्ति को हवन के समान ही सुबह और संध्या के समय प्रतिदिन धूप को चेतन करना अनिवार्य है.

गुणवत्ता

इसका कडाई से निरीक्षण करना चाहिये. अधिक समय तक धूप जलनी चाहिये. चेतन करने में कम समय लगना चाहिये. गुणवत्ता को नियंत्रित करने के लिये योग्य प्रशिक्षित व्यक्ति जरुर चाहिये.

धूप

भारत में गोबर से बहुत सारे प्रकार के धूप बनाने का कार्य चल रहा है. धूप के मसाले से बनी अगरबत्ती सभी को पसंद है.

देवधूप बत्ती बहुत ही लोकप्रिय है. गीली धूप सूखी धूप की तुलना में अधिक सुविधाजनक है. वर्तमान में गीले धूप का प्रयोग सबसे अधिक है. धूप की परम्परा बहुत ही प्राचीन रही है.

अगरबत्ती

धूप के बदले सुगंधित अगरबत्ती का प्रयोग करने के कारण सांस की बीमारी को बढ़ावा मिल रहा है.

धूप चूरा

मच्छर भगाने के लिए धूप के चूरे का प्रयोग बहुत पुराना है. भारत में 8 करोड से 10 करोड बढिया बैलों की आवश्यकता है. बैल के गोबर का उपयोग धूप में करने पर बैल के गोबर की मांग भी बहुत बढ जायेगी. बैल का गोबर धूप के लिये ज्यादा प्रभावशाली है. बैल के गोबर से मच्छर कम हो जाते हैं.

नवग्रह धूप

भारतीय ज्योति-ा के अनुसार नवग्रहों के प्रभाव को कम करने के लिए नवग्रह धूप का विशे-ा महत्व है. नवग्रह धूप बनाने का कार्य ज्योति-ों तथा वास्तुविदों के प्रोत्साहन के कारण वर्तमान में बहुत अधिक किया जा रहा है.

नवग्रह जड़ीबूटी

जडीबूटी युक्त नवग्रह धूप तैयार करने के लिये नवग्रहों की नौ जडीबूटियां पूरी तरह से एकत्रित करनी अनिवार्य है.

भारतीय ज्योति-ा

सूर्य

भारतीय ज्योति-ा के अनुसार ग्रहों का राजा रवि यानी सूर्य के लिए मदार, केले की जड़ का प्रयोग किया जाता है.

चंद्र

चंद्र के लिए पलास, खिरनी की जड़ का प्रयोग किया जाता है.

मंगल

ग्रहों का सेनापति मंगल के लिए खैर, अनंतमूल की जड़ का प्रयोग किया जाता है.

बुध

बुध के लिए अपामार्ग, विधारा की जड़ का प्रयोग किया जाता है.

गुरु

गुरु के लिए पीपल, केले का कंद का प्रयोग किया जाता है.

शुक्र

शुक्र के लिए गूलर, सरपुंखा की जड़ का प्रयोग किया जाता है.

शनि

सूर्य पुत्र शनि ग्रह के लिए शमी, बिहुआ की जड़ का प्रयोग किया जाता है.

राहू

राहू के लिए दूब, सफेद चंदन का उपयोग किया जाता है.

केतु

केतु के लिए कुश, असगंध का उपयोग किया जाता है. वास्तु के खराब प्रभाव, नवग्रहों के घातक प्रभावों को दूर करने के लिये धूप रामबाण है.

उपचार

असाध्य रोगों के उपचार करने के लिए जड़ीबूटियों वाले धूप के प्रयोग करने की परम्परा प्राचीन है.

52 प्रकार के कैंसर, ह्रदय रोग, मधुमेह, एडस, रक्त की कमी, रक्तचाप, गुर्दे, कब्ज, मोटापा जैसी बीमारियों में गोमय धूप के प्रयोग करने पर सफलता मिली है.

डा. कमलनारायण आर्य जी ने अपनी पुस्तक हवन से रोग निवारण यज्ञोपेथी में सभी जड़ीबूटियों के बारे में बहुत ही विस्तार से वर्णन किया है.

जड़ीबूटियां

अगर, अजश्रंगी, अडूसा, अर्जुन, असगंध, आंवला, इंद्रजी, उड़द, इलायची, कपूर, कपूरकचरी, कमलगटटा, काजू, कायफल, कुलंजन, कु-ठ, खस, खोपरा, गिलोय, गुलाब, गूगल, गूलर, गोखरु, सफेद चंदन, चांवल, चित्रक, अपामार्ग, चिरायता, चिरोंजी, छड़ीला, छुहारा, जटामासी, जायफल, जावित्री, जीवन्ती, जौ, तालीसपत्र, तिल, तुलसी, तेजपत्र, दालचीनी, दूब, देवदारु, नागकेसर, नागरमोथा, निर्मली, नीम, पलाश, पानड़ी, पित्तपापड़ा, पिप्पली, पिस्ता, पुर्ननवा, पु-करमूल, बनपसा, बहेड़ा, बादाम, वायवडिंग, बेल, ब्राहमी, मकोय, मखाना, मालकांगनी, मुंडी, मुनक्का, मुलहटी, मूंग,

यूकैलिप्टस के पत्ते, राल, लौंग, लोबान, बच, शंखपु-पी, शतावरी, शमी, सर्पगन्धा, सुगन्धवाला, सौंफ, हरड़, हरमल, हाउबेर

आवश्यक सामग्री

एक भाग धूप का मसाला तथा दो भाग देशी गाय का ताजा गोबर तराजू में अच्छी तरह से तौल कर थोडा गुलाब जल, गंगा जल या पीने का साफ पानी मिलाकर अच्छी तरह से साना जाये. सानने के बाद जितना जल्दी हो सके धूप बना दी जाये.

सावधानी

पानी की मात्रा कम से कम हो. कडा साना जाये. ज्यादा पानी मिलाने पर धूप के सूखने तथा जलने में समस्या आती है.

विधि

कुशल व्यक्ति के मार्गदर्शन में धूप बनाने का प्रशिक्षण ग्रहण करना आवश्यक है. 2 इंच लम्बी तथा आधे इंच व्यास वाली पाइप में साने हुए मसाले को ठूंस ठूंस कर भरा जाये. भरते समय पाइप के एक छोर को बंद रखा जाये.

तर्जनी और अंगूठे की सहायता से पाइप के दोनों छोरों पर दबाव बनाया जाये. फिर माप की गोल लकडी से धूप को ठेलकर थाली, ट्रे, गत्ते को धूप में रख दें. धूप अच्छी तरह से सूख जाने पर जलाकर देखा जाये.

धूप पूरी तरह से बिना बुझे जलती हो तो डब्बे में भर दिया जाये. जलने में समस्या आने पर और धूप दिखायी जाये.

धूप का चूरा

विश्व में धूप का चूरा हवन की सामग्री के समान ही बहुत अधिक उपयोग किया जाता है. धूप का चूरा धूप की तुलना में बहुत ही सस्ता है. धूप का चूरा हवन सामग्री के समान ही पैक कर कम मूल्य पर दिया जाये.

बहुत ही कम समय में धूप का चूरा बनाना बहुत ही आसान है. धूप का चूरा बनाने वाले को लाभ अधिक है.

भस्म

धूप का चूरा जलने के बाद में बची हुई भस्म गमलों, घरों तथा खेतों में क्यारी में उपयोग करने के कारण बहुत ही मूल्यवान तथा उपयोगी है.

गोवंश की रक्षा

धूप के निर्माण से गोवंश की रक्षा आर्थिक आधार पर स्वतः एवं तुरन्त होगी. धूप से स्वावलंबन संभव है. गोपालकों की आय बढने से गोपालन को बढावा मिलेगा तथा गोसंवर्धन होगा.

1040 मेगावाट उर्जा कतलखानों में जीवहत्या के समय चित्कार के कारण उत्पन्न होती है जो भूकंप, अकाल, बाढ़, महामारी, अतिवृ-टि, असाध्य रोग, ओजोन छिद्र आदि प्राकृतिक समस्याओं के लिए जिम्मेदार है.

धूप निर्माण से ओजोन छिद्र को बंद करने में सफलता मिलेगी. भूकंप, अकाल, बाढ़ जैसी प्राकृतिक विपदाओं से मुक्ति धूप निर्माण से संभव है.

वर्तमान नवग्रह धूप का निर्माण

मसाले का मूल्य

नवग्रह धूप तैयार करने के लिये गांव में लागत बहुत ही कम है. गांव में गाय का गोबर बिना मूल्य के बहुत बड़ी मात्रा में आसानी से उपलब्ध है.

अच्छे प्रकार के धूप को तैयार करने के लिये एक किलो मसाले का मूल्य 100 रुपये है.

सस्ते धूप तैयार करने के लिये मसाले का मूल्य 50 रुपये किलो है. मसाले का मूल्य जडी बूटियों के मूल्य पर पूरी तरह से निर्भर है.

गोमय सांढ यानी नंदी का सर्वश्रे-ठ है. नंदी के गोमय में गाय की तुलना में अधिक उर्जा रहती है. काले रंग के नंदी के गोमय में विशे-ा उर्जा रहती है. धूप का सात्विक प्रभाव काफी लंबे समय तक रहता है.

काले नंदी के गोमय की विशे-ा मांग रहती है. गोमय में स्ट्रांशियम, कैरोटिन यानी स्वर्ण क्षार, फिनोल, फार्मेलिन, इंडोल, मेंथोल, विटामिन बी-12, पोटाश जैसे करोड़ों रसायन मौजूद हैं.

पहचान

आठ प्रकार की लक्ष्मी आठ प्रकार के ऐश्वर्य के साथ में गोमय में विराजमान है. गोवंश के गोबर में छल्ले पड़ते हैं कीड़े नहीं पड़ते हैं तथा दुर्गध नहीं होती है. सोने की परत चढ़ी रहती है जो सूर्य के प्रकाश में चकचक करके चमकती है.

विशे-ाता

गोमय प्राकृतिक बिजली की उर्जा को पूरी तरह से सोखकर ठोस में रुपान्तरित करता है. तड़ित चालक के रुप में गोबर कार्य करता है. गोमय परमाणु विकिरण को पूरी तरह से सोख लेता है. नक्षत्रों की उर्जा को गोमय आकर्ि-त करता है.

गोमय पूरी तरह से वि-ा नाशक है तथा कीटाणुनाशक है.

नवग्रह धूप के निर्यात की प्रबल मांग के कारण बडे नामी उद्योगपतियों के द्वारा नवग्रह धूप पर ध्यान देना चाहिये.

स्वरोजगार

भारत में नवग्रह धूप का उपयोग बहुत अधिक होने के कारण स्वरोजगार की संभावनायें प्रबल हैं. गोमय धूप से 4 करोड लोगों को स्वरोजगार प्राप्त होगा. भारत में 24 करोड से अधिक शिक्षित बेरोजगारों को स्वरोजगार देने के लिये धूप बनाना बहुत बडा साधन है.

भाई चारे

धूप के व्यापक लाभों में विश्व में भाई चारे की भावना का विकास होगा.

लागत में कमी

भारत में धूप बनाने के लिये 8 माह से अधिक समय तक सूर्य की तेज धूप मिलने के कारण लागत में उल्लेखनीय कमी संभव है. एक अच्छी गुणवत्ता वाले धूप को तैयार करने के लिये जडी बूटियों की पहचान करनी आवश्यक है.

भारत में वर्तमान में जडी बूटियां अमरकंटक तथा उत्तरांचल में ही बहुत बडी मात्रा में मौजूद हैं. अमरकंटक एवं उत्तरांचल में जडी बूटियां एकत्रित करने पर बहुत कम लागत में कार्य करना संभव है. अमरकंटक तथा उत्तरांचल में गाय माता का गोबर भी जडी बूटी के गुणों से भरपूर मिल जायेगा.

नवग्रह के प्रभाव को कम करने के लिये प्रकृति में अलग अलग जडी बूटियां मौजूद हैं. एक अच्छे गुणवत्ता वाले धूप की लागत 5 रुपये किलो के मूल्य पर गाय का गोबर खरीदने पर प्रति धूप 2.5 पैसा, मसाला 25 पैसा, पैकिंग पर 10 पैसा, अन्य खर्च 2.5 पैसे तथा 10 पैसे बनवाई देने पर कुल 50 पैसे है. 25 पैसा प्रति नग लाभ है.

लागत

सस्ती धूप बनाने पर मसाले की लागत प्रति धूप 12.5 पैसा, मजदूरी 5 पैसा, पैकिंग 3 पैसा, गोबर 2.5 पैसा, 2 पैसा अन्य खर्च कुल 25 पैसा लागत है. लाभ प्रति नग 5 पैसा है.

गरीब आदमी भी 30 पैसों में सस्ती धूप बहुत ही आराम से खरीद सकता है. सस्ती धूप बिना प्रचार प्रसार के सीधे सामान्य व्यक्ति को बेचना बहुत ही सरल है. सस्ती धूप से धूप के लिए मानसिकता उत्पन्न होती हैं.

स्वरोजगार

एक व्यक्ति 6 से 8 घंटे में 1000 धूप बहुत ही आराम से बना सकता है. कुशल व्यक्ति तेजी से कार्य कर समय बचा सकता है.

अधिक धूप बनाने के लिए सुबह, मध्यहान, रात्रि की अलग अलग पारी में काम करना संभव है.

10 पैसे एक धूप की बनवाई मिलने पर 100 रुपये प्रतिदिन पूरी ईमानदारी के साथ मिल सकता है. महानगरों में 1 धूप बनवाने की मेहनत 25 पैसे से 1 रु. तक मिल सकती है.

एक धूप 30 मिनट तक अधिकतम जलती है. आर्डर के अनुसार अधिक समय तक जलने वाली विशे-ा धूप बनाने पर अधिक रोजगार मिलता है.

विज्ञापन में कुछ खर्च करने पर तथा प्रचार सामग्री में खर्च 5 से 10 प्रतिशत, बेचने वाले को 50 प्रतिशत लाभ देने पर धूप का बिक्री मूल्य अनुमानित सवा रुपये पडेगा. निर्माता धूप का दाम कम कर सकता है.

पैकिंग

सस्ती धूप प्लास्टिक की थैलियों में चार नग पैक कर 2 रुपयों में बहुत ही आसानी से बिक जाती है. अच्छी धूप एक सप्ताह चलने के लिये 15 नग डब्बे में पैक की जाये.

एक माह चलने के लिये बडे डब्बे में 60 नग पैक की जाये. बारह माह के लिये बारह डब्बे की पैकिंग तैयार की जाये.

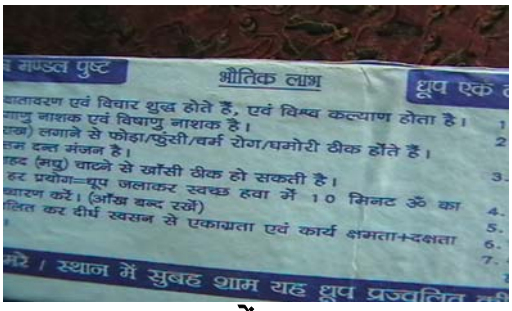

1साल में 1 लाख

महात्मा गांधी जी के अनुयायी नेडप काका 1 गाय के गोबर से 1 साल में 1 लाख रुपये धूप बनाकर कमाते थे.

वर्तमान में नेडप काका के सुपुत्र श्री अविनाश पंडरी पांडे जी यवतमाल जिले के पुसद गांव महारास्ट्र में धूप बनाकर 1 लाख रुपये एक साल में कमा रहे हैं.

गोबर का बहुत अच्छा मूल्य गोपालक को धूप बनाने पर ही मिलना संभव है. गोबर यानी कामधेनु का वरदान है. काले नंदी के गोबर का मूल्य 25 से 100 रु. तक देना संभव है.

गोमय वस्ते लक्ष्मी

गोबर से वर्तमान में बिजली उत्पादन, जैविक खाद, गोबर गैस, सीएनजी, पंचगव्य, महापंचगव्य, मच्छर भगाने की कोइल, अग्निहोत्र के कंडे, ईंधन के उपले, बर्तन मांजने की राख, एक्जीमा साबुन, नहाने का

साबुन, दर्द निवारक तेल, आंखों की दवा, हवन समिधा, गोपाल नस्य, केशवर्धक लोशन, फेस पैक, क्रीम लोशन, अंगराग पावडर, मलहम, मंजन, टाइल्स, कागज, कवेलू, प्लास्टर, डिस्टेम्पर आदि अनेकों आवश्यक उत्पाद तैयार किये गये हैं.

भारत में वर्तमान में देशी गाय का गोबर 9 रु. से लेकर 25 रु. तक बहुत ही आराम से बिक रहा है. आने वाले समय में बढ़ती हुई मांग के कारण ही गोवंशों की संख्या में कमी होने के कारण ही गोबर 100 रु. तक बिकेगा.

एक गाय बहुत ही कम खाकर भी एक दिन में 12 किलो गोबर करती है. यदि गाय की सही देखभाल की गयी तो 25 साल तक जीती है तो 17 बच्चे देती है.

एक गाय औसत 20 साल तक जीती है तो गोबर पूरे समय तक देती है.

गाय साल भर गोबर करती है जबकि गाय दूध पहला बच्चा 3 साल के बाद में देने के बाद साल में मात्र 8 माह देती है.

योजना

1 किलो मसाले में 2 किलो गोबर की आवश्यकता होती है. 1 किलो मसाले और 2 किलो गोबर से 400 नग धूप तैयार होती है. प्रारम्भ में धूप के सात्विक प्रभाव पर प्रयोग करने के लिए 400 नग धूप बहुत हैं.

प्रथम स्तर

प्रथम स्तर पर 20,000 रुपयों का नियोजन कर 100 किलो प्रतिमाह अच्छी गुणवत्ता वाली धूप तैयार होती है तो 10,000 रुपयों का लाभ होता है.

लाभ अधिक करने के लिए मेहनत की आवश्यकता है. वर्तमान में भारत में 100 किलो धूप निर्माण कई लोग कर रहे हैं.

A 16 year old Vechur Cow with a six year old HF cross-bred cow.

द्वितीय स्तर

भारत में गोशालाओं में द्वितीय स्तर पर 400 किलो प्रतिमाह धूप का निर्माण किया जाता है. गोशालाओं का धूप अच्छी गुणवत्ता के कारण ही लोकप्रिय है.

तृतीय स्तर

तृतीय स्तर पर 1000 किलो प्रतिमाह धूप का निर्माण किया जाता है. सर्वोदय विचार परि-द कोलकत्ता 1000 किलो नवग्रह धूप बना रहा है.

चतुर्थ स्तर

पथमेड़ा जैसी बडी गोशालाओं में चतुर्थ स्तर पर 4000 किलो प्रतिमाह धूप बनाना संभव है. पथमेड़ा में बना धूप दिव्य एवं अदभुत प्रभाव के कारण विश्व में अपनी पहचान बना चुका है.

पंचम स्तर

महानगरों में संत श्री आसारामजी अहमदाबाद जैसे लोगों के द्वारा पंचम स्तर पर 10,000 किलो प्रतिमाह उत्पादन करने पर बहुत अधिक रोजगार उत्पन्न होगा तथा लाभ भी बहुत अच्छा होगा. आसाराम जी के धूप की बहुत ही कम कीमत एवं अलौकिक सुगंध के कारण बहुत अच्छी मांग है.

बिक्री

धूप के विक्रय करने के लिये बडे बडे संतों की भागवत, रामायण, गो कथाओं, कामधेनु महायज्ञों, सम्मेलनों में स्टाल लगाना आवश्यक है.

गो ब्रांड प्रोडक्ट

डा. प्रवीण तोगड़िया जी के द्वारा विश्व में धूप की मार्केटिंग करने के लिए 200 गोशालाओं से धूप खरीदकर गो ब्रांड प्रोडक्ट विश्व हिंदू परि-द के माध्यम से सफल हैं.

कानपुर गोशाला सोसायटी के द्वारा गोरत्न गोपाल धूप 90 ग्राम 10 रुपये, गोरत्न गोमय धूप 20 बत्ती 10 रुपये में बेची जा रही है.

लक्ष्य

धूप निर्माण विश्व का निर्माण है. विश्व में धूप निर्माण से सुख एवं शांति उत्पन्न होने पर भय में कमी आयेगी. धूप से पर्यावरण निश्चित रुप से संतुलित होगा. गोमय से धूप पूरी तरह से प्राकृतिक, सात्विक, दैविक है इसलिए गोमय धूप के माध्यम से प्रकृति प्रसन्न होती है. देवताओं तथा पितृओं को धूप के धुएं के माध्यम से प्रसन्नता मिलती है.

नारद संहिता के अनुसार भगवान श्री राम के समय में हर व्यक्ति के द्वारा धूप के उपयोग करने के कारण ही सम्पन्नता चरम सीमा पर थी.

भगवान श्री राम ने सोने के सींगों वाली सुंदर वस्त्रों तथा आभु-णों से सजी हुई, दूध दोने के पात्रों के साथ में, बछड़ों सहित दस हजार करोड़ गायों का दान ब्राहमणों को किया गया था.

ब्राहमण गोमय से उच्च गुणवत्ता के धूप का निर्माण कर धूप का उपयोग पूजा के लिए प्रतिदिन कर रहे थे. भगवान श्री राम ने बहुत ही उच्च कोटि के धूप निर्माण करने के लिए 80,000 जड़ीबूटियों के उत्पादन करने पर विशे-ा ध्यान दिया था.

भगवान श्री राम के समय में वेदमत्रों के साथ में सूर्योदय के समय में अलौकिक एवं अदभुत धूप से हर घर में कामधेनु का पूजन किया जाता था.

श्रीमद भागवत के अनुसार अम्बरी-ा के समय में मधुवन में एक साल तक एकादशी का व्रत कर ब्राहमणों को उत्तम भोजन करवाकर उनके निवास पर 60 करोड़ तरुणी एवं बहुत अधिक दूध देने वाली गायों का दान पहुंचवाकर किया गया था.

अम्बरी-ा के समय में अलौकिक एवं दिव्य धूप निर्माण को प्राथमिकता थी.

महाभारत काल के समय में गोवंश की 1252 प्रजातियां मौजूद थी. लंबे सींगो वाले गोवंश का विकास किया गया था.

पांडू पुत्र सहदेव, सूर्य के पुत्र देवताओं के वैद्यों अश्वनी कुमारों से जड़ीबूटियों का ज्ञान प्राप्त कर सांडों का उपचार करने के लिए धूप का प्रयोग करते थे.

सहदेव ज्योति-ा के बहुत अच्छे जानकार थे तथा 40 कोसों में गोवंश की वृद्धि तथा उनका उपचार धूप की सहायता से करते थे. सहदेव संहिता में बांझ महिला का उपचार धूप से करने पर विशे-ा उल्लेख है.

विराट पर्व में पांडवों के गुप्त काल में सहदेव के द्वारा राजा विराट को बताया गया था कि युधि-ठर के पास में आठ लाख गायों के दस हजार वर्ग तथा दो लाख एवं एक लाख गायों के असंख्य वर्ग सहदेव के कारण थे.

यदुकुल के पुरोहित महर्ि गर्ग जी के अनुसार धूप के उपयोग करने के कारण ही व्रज में 72 करोड़ गाये थी.

सम्मान

नंदराय का सम्मान 1 करोड़ गोवंश रखने के कारण मिलता था. वृ-ाभानूवर 50 लाख गोवंश रखने पर, दस लाख गोवंश रखने पर वृ-ाभानू, 9 लाख गोवंश रखने पर नंद, 5 लाख गोवंश रखने पर उपनंद, 1 लाख गोवंश रखने पर गोप की पदवी से सम्मानित किया जाता था. दस हजार गोवंश के समूह रहने पर गोकुल कहलाता था.

गर्ग संहिता में व्रज की सम्पन्नता के बारे में विस्तार से वर्णन मिल रहा है. व्रज में धूप के निर्माण में गोप बहुत ही कुशल थे.

भगवान महावीर के काल में भी जैनों के पास में कई गोकुल थे तथा चमत्कारिक एवं अलौकिक धूप का प्रयोग पूजा के लिए किया जाता था.

स्वर्णयुग

गुप्तकाल को भारत का स्वर्ण युग माना गया है. गुप्तकाल में महर्नि चरक के द्वारा जड़ीबूटी वाले धूप का प्रयोग उपचार के लिए किया जाता था.

धूप के लाभ

धूप के नियमित प्रयोग करने से आय बढने लगती है. कलह व तनाव समाप्त हो जाता है. सुख एवं मानसिक आनन्द लाता है.

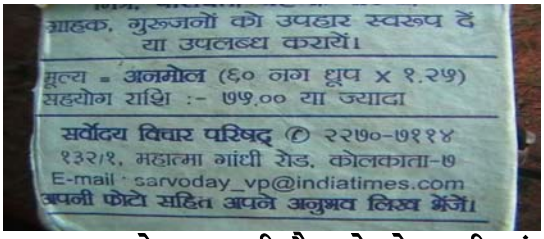

नवग्रह धूप के कारण ही बैल के गोबर की मांग

धूप बनाने, विक्रय, वितरण से जुडने के लिये युवा साथियों को संपूर्ण जानकारियां, प्रशिक्षण वर्तमान में भारत में श्रीमती कमला आशर, अखिल विश्व कामधेनु परिवार 21 सी, जयराज कोम्प्लेक्स, सोनी नी चाल, ओढव मार्ग, अहमदाबाद 382415 मोबाइल 9662407242 में उपलब्ध है.